

## **Resource: Indian Revised Version**

### **License Information**

**Indian Revised Version** (Hindi) is based on: Hindi Indian Revised Version, [Bridge Connectivity Solutions](#), 2019, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

## **Indian Revised Version**

NUM





Numbers 32:32, Numbers 32:33, Numbers 32:34, Numbers 32:35, Numbers 32:36, Numbers 32:37, Numbers 32:38, Numbers 32:39, Numbers 32:40, Numbers 32:41, Numbers 32:42, Numbers 33:1, Numbers 33:2, Numbers 33:3, Numbers 33:4, Numbers 33:5, Numbers 33:6, Numbers 33:7, Numbers 33:8, Numbers 33:9, Numbers 33:10, Numbers 33:11, Numbers 33:12, Numbers 33:13, Numbers 33:14, Numbers 33:15, Numbers 33:16, Numbers 33:17, Numbers 33:18, Numbers 33:19, Numbers 33:20, Numbers 33:21, Numbers 33:22, Numbers 33:23, Numbers 33:24, Numbers 33:25, Numbers 33:26, Numbers 33:27, Numbers 33:28, Numbers 33:29, Numbers 33:30, Numbers 33:31, Numbers 33:32, Numbers 33:33, Numbers 33:34, Numbers 33:35, Numbers 33:36, Numbers 33:37, Numbers 33:38, Numbers 33:39, Numbers 33:40, Numbers 33:41, Numbers 33:42, Numbers 33:43, Numbers 33:44, Numbers 33:45, Numbers 33:46, Numbers 33:47, Numbers 33:48, Numbers 33:49, Numbers 33:50, Numbers 33:51, Numbers 33:52, Numbers 33:53, Numbers 33:54, Numbers 33:55, Numbers 33:56, Numbers 34:1, Numbers 34:2, Numbers 34:3, Numbers 34:4, Numbers 34:5, Numbers 34:6, Numbers 34:7, Numbers 34:8, Numbers 34:9, Numbers 34:10, Numbers 34:11, Numbers 34:12, Numbers 34:13, Numbers 34:14, Numbers 34:15, Numbers 34:16, Numbers 34:17, Numbers 34:18, Numbers 34:19, Numbers 34:20, Numbers 34:21, Numbers 34:22, Numbers 34:23, Numbers 34:24, Numbers 34:25, Numbers 34:26, Numbers 34:27, Numbers 34:28, Numbers 34:29, Numbers 35:1, Numbers 35:2, Numbers 35:3, Numbers 35:4, Numbers 35:5, Numbers 35:6, Numbers 35:7, Numbers 35:8, Numbers 35:9, Numbers 35:10, Numbers 35:11, Numbers 35:12, Numbers 35:13, Numbers 35:14, Numbers 35:15, Numbers 35:16, Numbers 35:17, Numbers 35:18, Numbers 35:19, Numbers 35:20, Numbers 35:21, Numbers 35:22, Numbers 35:23, Numbers 35:24, Numbers 35:25, Numbers 35:26, Numbers 35:27, Numbers 35:28, Numbers 35:29, Numbers 35:30, Numbers 35:31, Numbers 35:32, Numbers 35:33, Numbers 35:34, Numbers 36:1, Numbers 36:2, Numbers 36:3, Numbers 36:4, Numbers 36:5, Numbers 36:6, Numbers 36:7, Numbers 36:8, Numbers 36:9, Numbers 36:10, Numbers 36:11, Numbers 36:12, Numbers 36:13

## Numbers 1:1

<sup>1</sup> इस्साएलियों के मिस देश से निकल जाने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले दिन को, यहोवा ने सीनै के जंगल में मिलापवाले तम्बू में, मूसा से कहा,

## Numbers 1:2

<sup>2</sup> “इस्साएलियों की सारी मण्डली के कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, एक-एक पुरुष की गिनती नाम ले लेकर करना।

## Numbers 1:3

<sup>3</sup> जितने इस्साएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के हों, और जो युद्ध करने के योग्य हों, उन सभी को उनके दलों के अनुसार तू और हारून गिन ले।

## Numbers 1:4

<sup>4</sup> और तुम्हारे साथ प्रत्येक गोत्र का एक पुरुष भी हो जो अपने पितरों के घराने का मुख्य पुरुष हो।

## Numbers 1:5

<sup>5</sup> तुम्हारे उन साथियों के नाम ये हैं: रूबेन के गोत्र में से शदेऊर का पुत्र एलीसूर;

## Numbers 1:6

<sup>6</sup> शिमोन के गोत्र में से सूरीश्वै का पुत्र शलूमीएल;

## Numbers 1:7

<sup>7</sup> यहूदा के गोत्र में से अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन;

## Numbers 1:8

<sup>8</sup> इस्साकार के गोत्र में से सूआर का पुत्र नतनेल;

## Numbers 1:9

<sup>9</sup> जबूलून के गोत्र में से हेलोन का पुत्र एलीआब;

**Numbers 1:10**

<sup>10</sup> यूसुफ वंशियों में से ये हैं, अर्थात् एप्रैम के गोत्र में से अमीहूद का पुत्र लीशामा, और मनश्शे के गोत्र में से पदासूर का पुत्र गम्लीएल;

**Numbers 1:11**

<sup>11</sup> बिन्यामीन के गोत्र में से गिदोनी का पुत्र अबीदान;

**Numbers 1:12**

<sup>12</sup> दान के गोत्र में से अमीशहै का पुत्र अहीएजेर;

**Numbers 1:13**

<sup>13</sup> आशोर के गोत्र में से ओक्रान का पुत्र पगीएल;

**Numbers 1:14**

<sup>14</sup> गाद के गोत्र में से दूएल का पुत्र एल्यासाप;

**Numbers 1:15**

<sup>15</sup> नप्ताली के गोत्र में से एनान का पुत्र अहीरा।"

**Numbers 1:16**

<sup>16</sup> मण्डली में से जो पुरुष अपने-अपने पितरों के गोत्रों के प्रधान होकर बुलाए गए, वे ये ही हैं, और ये इस्राएलियों के हजारों में मुख्य पुरुष थे।

**Numbers 1:17**

<sup>17</sup> जिन पुरुषों के नाम ऊपर लिखे हैं उनको साथ लेकर मूसा और हारून ने,

**Numbers 1:18**

<sup>18</sup> दूसरे महीने के पहले दिन सारी मण्डली इकट्ठी की, तब इस्राएलियों ने अपने-अपने कुल और अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु वालों के नामों की गिनती करवाकर अपनी-अपनी वंशावली लिखवाई;

**Numbers 1:19**

<sup>19</sup> जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार उसने सीनै के जंगल में उनकी गणना की।

**Numbers 1:20**

<sup>20</sup> और इस्राएल के पहलौठे रूबेन के वंश के जितने पुरुष अपने कुल और अपने पितरों के घराने के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:21**

<sup>21</sup> और रूबेन के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हजार थे।

**Numbers 1:22**

<sup>22</sup> शिमोन के वंश के लोग जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे, और जो युद्ध करने के योग्य थे वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए।

**Numbers 1:23**

<sup>23</sup> और शिमोन के गोत्र के गिने हुए पुरुष उनसठ हजार तीन सौ थे।

**Numbers 1:24**

<sup>24</sup> गाद के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:25**

<sup>25</sup> और गाद के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैतालीस हजार साढ़े छः सौ थे।

**Numbers 1:26**

<sup>26</sup> यहूदा के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:27**

<sup>27</sup> और यहूदा के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हजार छः सौ थे।

**Numbers 1:28**

<sup>28</sup> इस्साकार के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:29**

<sup>29</sup> और इस्साकार के गोत्र के गिने हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ थे।

**Numbers 1:30**

<sup>30</sup> जबूलून के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:31**

<sup>31</sup> और जबूलून के गोत्र के गिने हुए पुरुष सत्तावन हजार चार सौ थे।

**Numbers 1:32**

<sup>32</sup> यूसुफ के वंश में से एप्रैम के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:33**

<sup>33</sup> और एप्रैम गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हजार थे।

**Numbers 1:34**

<sup>34</sup> मनश्शे के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:35**

<sup>35</sup> और मनश्शे के गोत्र के गिने हुए पुरुष बत्तीस हजार दो सौ थे।

**Numbers 1:36**

<sup>36</sup> बिन्यामीन के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:37**

<sup>37</sup> और बिन्यामीन के गोत्र के गिने हुए पुरुष पैंतीस हजार चार सौ थे।

**Numbers 1:38**

<sup>38</sup> दान के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे अपने-अपने नाम से गिने गए:

**Numbers 1:39**

<sup>39</sup> और दान के गोत्र के गिने हुए पुरुष बासठ हजार सात सौ थे।

**Numbers 1:40**

<sup>40</sup> आशेर के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु

के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

### **Numbers 1:41**

<sup>41</sup> और आशेर के गोत्र के गिने हुए पुरुष साढ़े इकतालीस हजार थे।

### **Numbers 1:42**

<sup>42</sup> नप्ताली के वंश के जितने पुरुष अपने कुलों और अपने पितरों के घरानों के अनुसार बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के थे और जो युद्ध करने के योग्य थे, वे सब अपने-अपने नाम से गिने गए:

### **Numbers 1:43**

<sup>43</sup> और नप्ताली के गोत्र के गिने हुए पुरुष तिरपन हजार चार सौ थे।

### **Numbers 1:44**

<sup>44</sup> इस प्रकार मूसा और हारून और इस्राएल के बारह प्रधानों ने, जो अपने-अपने पितरों के घराने के प्रधान थे, उन सभी को गिन लिया और उनकी गिनती यही थी।

### **Numbers 1:45**

<sup>45</sup> अतः जितने इस्राएली बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के होने के कारण युद्ध करने के योग्य थे वे अपने पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

### **Numbers 1:46**

<sup>46</sup> और वे सब गिने हुए पुरुष मिलाकर छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ थे।

### **Numbers 1:47**

<sup>47</sup> इनमें लेवीय अपने पितरों के गोत्र के अनुसार नहीं गिने गए।

### **Numbers 1:48**

<sup>48</sup> क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा था,

### **Numbers 1:49**

<sup>49</sup> “लेवीय गोत्र की गिनती इस्राएलियों के संग न करना;

### **Numbers 1:50**

<sup>50</sup> परन्तु तू लेवियों को साक्षी के तम्बू पर, और उसके सम्पूर्ण सामान पर, अर्थात् जो कुछ उससे सम्बंध रखता है उस पर अधिकारी नियुक्त करना; और सम्पूर्ण सामान सहित निवास को वे ही उठाया करें, और वे ही उसमें सेवा टहल भी किया करें, और तम्बू के आस-पास वे ही अपने डेरे डाला करें।

### **Numbers 1:51**

<sup>51</sup> और जब जब निवास को आगे ले जाना हो तब-तब लेवीय उसको गिरा दें, और जब जब निवास को खड़ा करना हो तब-तब लेवीय उसको खड़ा किया करें; और यदि कोई दूसरा समीप आए तो वह मार डाला जाए।

### **Numbers 1:52**

<sup>52</sup> और इस्राएली अपना-अपना डेरा अपनी-अपनी छावनी में और अपने-अपने झाण्डे के पास खड़ा किया करें;

### **Numbers 1:53**

<sup>53</sup> पर लेवीय अपने डेरे साक्षी के तम्बू ही के चारों ओर खड़े किया करें, कहीं ऐसा न हो कि इस्राएलियों की मण्डली पर मेरा कोप भड़के; और लेवीय साक्षी के तम्बू की रक्षा किया करें।”

### **Numbers 1:54**

<sup>54</sup> जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं, इस्राएलियों ने उन्हीं के अनुसार किया।

### **Numbers 2:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 2:2**

<sup>2</sup> “इस्साएली मिलापवाले तम्बू के चारों ओर और उसके सामने अपने-अपने झण्डे और अपने-अपने पितरों के घराने के निशान के समीप अपने डेरे खड़े करें।

**Numbers 2:3**

<sup>3</sup> और जो पूर्व दिशा की ओर जहाँ सूर्योदय होता है, अपने-अपने दलों के अनुसार डेरे खड़े किया करें, वे ही यहूदा की छावनीवाले झण्डे के लोग होंगे, और उनका प्रधान अमीनादाब का पुत्र नहशोन होगा,

**Numbers 2:4**

<sup>4</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौहत्तर हजार छ: सौ हैं।

**Numbers 2:5**

<sup>5</sup> उनके समीप जो डेरे खड़े किया करें वे इस्साकार के गोत्र के हों, और उनका प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल होगा,

**Numbers 2:6**

<sup>6</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष चौवन हजार चार सौ हैं।

**Numbers 2:7**

<sup>7</sup> इनके पास जबूलून के गोत्रवाले रहेंगे, और उनका प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब होगा,

**Numbers 2:8**

<sup>8</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष सत्तावन हजार चार सौ हैं।

**Numbers 2:9**

<sup>9</sup> इस रीति से यहूदा की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख छियासी हजार चार सौ हैं। पहले ये ही कूच किया करें।

**Numbers 2:10**

<sup>10</sup> “दक्षिण की ओर रूबेन की छावनी के झण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर होगा,

**Numbers 2:11**

<sup>11</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े छियालीस हजार हैं।

**Numbers 2:12**

<sup>12</sup> उनके पास जो डेरे खड़े किया करें वे शिमोन के गोत्र के होंगे, और उनका प्रधान सूरीशदै का पुत्र शलूमीएल होगा,

**Numbers 2:13**

<sup>13</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष उनसठ हजार तीन सौ हैं।

**Numbers 2:14**

<sup>14</sup> फिर गाद के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान रूएल का पुत्र एल्यासाप होगा,

**Numbers 2:15**

<sup>15</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष पैतालीस हजार साढ़े छ: सौ हैं।

**Numbers 2:16**

<sup>16</sup> रूबेन की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख इक्यावन हजार साढ़े चार सौ हैं। दूसरा कूच इनका हो।

**Numbers 2:17**

<sup>17</sup> “उनके पीछे और सब छावनियों के बीचों बीच लेवियों की छावनी समेत मिलापवाले तम्बू का कूच हुआ करे; जिस क्रम से वे डेरे खड़े करें उसी क्रम से वे अपने-अपने स्थान पर अपने-अपने झण्डे के पास-पास चलें।

**Numbers 2:18**

<sup>18</sup> “पश्चिम की ओर एप्रैम की छावनी के झाण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा होगा,

**Numbers 2:19**

<sup>19</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े चालीस हजार हैं।

**Numbers 2:20**

<sup>20</sup> उनके समीप मनश्शे के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल होगा,

**Numbers 2:21**

<sup>21</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष बत्तीस हजार दो सौ हैं।

**Numbers 2:22**

<sup>22</sup> फिर बिन्यामीन के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान होगा,

**Numbers 2:23**

<sup>23</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष पैंतीस हजार चार सौ हैं।

**Numbers 2:24**

<sup>24</sup> एप्रैम की छावनी में जितने अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर एक लाख सत्तावन हजार छः सौ हैं। ये अपने-अपने झाण्डे के पास-पास होकर सबसे पीछे कूच करें।”

**Numbers 2:25**

<sup>25</sup> “उत्तर की ओर दान की छावनी के झाण्डे के लोग अपने-अपने दलों के अनुसार रहें, और उनका प्रधान अम्मीशदै का पुत्र अहीएजेर होगा,

**Numbers 2:26**

<sup>26</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष बासठ हजार सात सौ हैं।

**Numbers 2:27**

<sup>27</sup> और उनके पास जो डेरे खड़े करें वे आशेर के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल होगा,

**Numbers 2:28**

<sup>28</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष साढ़े इकतालीस हजार हैं।

**Numbers 2:29**

<sup>29</sup> फिर नप्ताली के गोत्र के रहें, और उनका प्रधान एनान का पुत्र अहीरा होगा,

**Numbers 2:30**

<sup>30</sup> और उनके दल के गिने हुए पुरुष तिरपन हजार चार सौ हैं।

**Numbers 2:31**

<sup>31</sup> और दान की छावनी में जितने गिने गए वे सब मिलकर एक लाख सत्तावन हजार छः सौ हैं। ये अपने-अपने झाण्डे के पास-पास होकर सबसे पीछे कूच करें।”

**Numbers 2:32**

<sup>32</sup> इस्साएलियों में से जो अपने-अपने पितरों के घराने के अनुसार गिने गए वे ये ही हैं; और सब छावनियों के जितने पुरुष अपने-अपने दलों के अनुसार गिने गए वे सब मिलकर छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ थे।

**Numbers 2:33**

<sup>33</sup> परन्तु यहोवा ने मूसा को जो आज्ञा दी थी उसके अनुसार लेवीय तो इस्साएलियों में गिने नहीं गए।

**Numbers 2:34**

<sup>34</sup> इस प्रकार जो-जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इस्साएली उन आज्ञाओं के अनुसार अपने-अपने कुल और अपने-अपने

पितरों के घरानों के अनुसार, अपने-अपने झाण्डे के पास डेरे खड़े करते और कूच भी करते थे।

### **Numbers 3:1**

<sup>1</sup> जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत के पास मूसा से बातें की उस समय हारून और मूसा की यह वंशावली थी।

### **Numbers 3:2**

<sup>2</sup> हारून के पुत्रों के नाम ये हैं नादाब जो उसका जेठा था, और अबीहू, एलीआजर और ईतामार;

### **Numbers 3:3**

<sup>3</sup> हारून के पुत्र, जो अभिषिक्त याजक थे, और उनका संस्कार याजक का काम करने के लिये हुआ था, उनके नाम ये हैं।

### **Numbers 3:4**

<sup>4</sup> नादाब और अबीहू जिस समय सीनै के जंगल में यहोवा के समुख अनुचित आग ले गए उसी समय यहोवा के सामने मर गए थे; और वे पुत्रहीन भी थे। एलीआजर और ईतामार अपने पिता हारून के साथ याजक का काम करते रहे।

### **Numbers 3:5**

<sup>5</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

### **Numbers 3:6**

<sup>6</sup> “लेवी गोत्रवालों को समीप ले आकर हारून याजक के सामने खड़ा कर कि वे उसकी सहायता करें।

### **Numbers 3:7**

<sup>7</sup> जो कुछ उसकी ओर से और सारी मण्डली की ओर से उन्हें सौंपा जाए उसकी देख-रेख वे मिलापवाले तम्बू के सामने करें, इस प्रकार वे तम्बू की सेवा करें;

### **Numbers 3:8**

<sup>8</sup> वे मिलापवाले तम्बू के सम्पूर्ण सामान की ओर इसाएलियों की सौंपी हुई वस्तुओं की भी देख-रेख करें, इस प्रकार वे निवास-स्थान की सेवा करें।

### **Numbers 3:9**

<sup>9</sup> और तू लेवियों को हारून और उसके पुत्रों को सौंप दे; और वे इसाएलियों की ओर से हारून को सम्पूर्ण रीति से अर्पण किए हुए हों।

### **Numbers 3:10**

<sup>10</sup> और हारून और उसके पुत्रों को याजक के पद पर नियुक्त कर, और वे अपने याजकपद को सम्भालें; और यदि परदेशी समीप आए, तो वह मार डाला जाए।”

### **Numbers 3:11**

<sup>11</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

### **Numbers 3:12**

<sup>12</sup> “सुन इसाएली स्त्रियों के सब पहिलौठों के बदले, मैं इसाएलियों में से लेवियों को ले लेता हूँ; इसलिए लेवीय मेरे ही हों।

### **Numbers 3:13**

<sup>13</sup> सब पहिलौठे मेरे हैं; क्योंकि जिस दिन मैंने मिस्र देश के सब पहिलौठों को मारा, उसी दिन मैंने क्या मनुष्य क्या पशु इसाएलियों के सब पहिलौठों को अपने लिये पवित्र ठहराया; इसलिए वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूँ।”

### **Numbers 3:14**

<sup>14</sup> फिर यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा,

### **Numbers 3:15**

<sup>15</sup> “लेवियों में से जितने पुरुष एक महीने या उससे अधिक आयु के हों उनको उनके पितरों के घरानों और उनके कुलों के अनुसार गिन ले।”

**Numbers 3:16**

<sup>16</sup> यह आज्ञा पाकर मूसा ने यहोवा के कहे अनुसार उनको गिन लिया।

**Numbers 3:17**

<sup>17</sup> लेवी के पुत्रों के नाम ये हैं, अर्थात् गेशोन, कहात, और मरारी।

**Numbers 3:18**

<sup>18</sup> और गेशोन के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् लिब्नी और शिमी।

**Numbers 3:19**

<sup>19</sup> कहात के पुत्र जिनसे उसके कुल चले उनके नाम ये हैं, अर्थात् अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल।

**Numbers 3:20**

<sup>20</sup> और मरारी के पुत्र जिनसे उसके कुल चले ये हैं, अर्थात् महली और मूशी। ये लेवियों के कुल अपने पितरों के घरानों के अनुसार हैं।

**Numbers 3:21**

<sup>21</sup> गेशोन से लिब्नियों और शिमियों के कुल चले; गेशोनवंशियों के कुल ये ही हैं।

**Numbers 3:22**

<sup>22</sup> इनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उन सभी की गिनती साढ़े सात हजार थी।

**Numbers 3:23**

<sup>23</sup> गेशोनवाले कुल निवास के पीछे पश्चिम की ओर अपने डेरे डाला करें;

**Numbers 3:24**

<sup>24</sup> और गेशोनियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान लाएल का पुत्र एल्यासाप हो।

**Numbers 3:25**

<sup>25</sup> और मिलापवाले तम्बू की जो वस्तुएँ गेशोनवंशियों को सौंपी जाएँ वे ये हों, अर्थात् निवास और तम्बू, और उसका आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वार का परदा,

**Numbers 3:26**

<sup>26</sup> और जो आँगन निवास और वेदी के चारों ओर है उसके पर्दे, और उसके द्वार का परदा, और सब डोरियाँ जो उसमें काम आती हैं।

**Numbers 3:27**

<sup>27</sup> फिर कहात से अम्पामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों, और उज्जीएलियों के कुल चले; कहातियों के कुल ये ही हैं।

**Numbers 3:28**

<sup>28</sup> उनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी उनकी गिनती आठ हजार छः सौ थी। उन पर पवित्रस्थान की देख-रेख का उत्तरदायित्व था।

**Numbers 3:29**

<sup>29</sup> कहातियों के कुल निवास-स्थान की उस ओर अपने डेरे डाला करें जो दक्षिण की ओर है;

**Numbers 3:30**

<sup>30</sup> और कहातियों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान उज्जीएल का पुत्र एलीसापान हो।

**Numbers 3:31**

<sup>31</sup> और जो वस्तुएँ उनको सौंपी जाएँ वे सन्दूक, मेज, दीवट, वेदियाँ, और पवित्रस्थान का वह सामान जिससे सेवा टहल होती है, और परदा; अर्थात् पवित्रस्थान में काम में आनेवाला सारा सामान हो।

**Numbers 3:32**

<sup>32</sup> और लेवियों के प्रधानों का प्रधान हारून याजक का पुत्र एलीआजर हो, और जो लोग पवित्रस्थान की सौंपी हुई वस्तुओं की देख-रेख करेंगे उन पर वही मुखिया ठहरे।

**Numbers 3:33**

<sup>33</sup> फिर मरारी से महलियों और मूशियों के कुल चले; मरारी के कुल ये ही हैं।

**Numbers 3:34**

<sup>34</sup> इनमें से जितने पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक थी उन सभी की गिनती छः हजार दो सौ थी।

**Numbers 3:35**

<sup>35</sup> और मरारी के कुलों के मूलपुरुष के घराने का प्रधान अबीहैल का पुत्र सूरीएल हो; ये लोग निवास के उत्तर की ओर अपने डेरे खड़े करें।

**Numbers 3:36**

<sup>36</sup> और जो वस्तुएँ मरारीवंशियों को सौंपी जाएँ कि वे उनकी देख-रेख करें, वे निवास के तख्ते, बेंडे, खम्भे, कुर्सियाँ, और सारा सामान; निदान जो कुछ उसके लगाने में काम आए;

**Numbers 3:37**

<sup>37</sup> और चारों ओर के आँगन के खम्भे, और उनकी कुर्सियाँ, खूँटे और डोरियाँ हों।

**Numbers 3:38**

<sup>38</sup> और जो मिलापवाले तम्बू के सामने, अर्थात् निवास के सामने, पूर्व की ओर जहाँ से सूर्योदय होता है, अपने डेरे डाला करें, वे मूसा और हारून और उसके पुत्रों के डेरे हों, और पवित्रस्थान की देख-रेख इस्माएलियों के बदले वे ही किया करें, और दूसरा जो कोई उसके समीप आए वह मार डाला जाए।

**Numbers 3:39**

<sup>39</sup> यहोवा की इस आज्ञा को पाकर एक महीने की या उससे अधिक आयु वाले जितने लेवीय पुरुषों को मूसा और हारून ने उनके कुलों के अनुसार गिना, वे सब के सब बाईस हजार थे।

**Numbers 3:40**

<sup>40</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस्माएलियों के जितने पहलौठे पुरुषों की आयु एक महीने की या उससे अधिक है, उन सभी को नाम ले लेकर गिन ले।

**Numbers 3:41**

<sup>41</sup> और मेरे लिये इस्माएलियों के सब पहलौठों के बदले लेवियों को, और इस्माएलियों के पशुओं के सब पहलौठों के बदले लेवियों के पशुओं को ले; मैं यहोवा हूँ।”

**Numbers 3:42**

<sup>42</sup> यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने इस्माएलियों के सब पहलौठों को गिन लिया।

**Numbers 3:43**

<sup>43</sup> और सब पहलौठे पुरुष जिनकी आयु एक महीने की या उससे अधिक थी, उनके नामों की गिनती बाईस हजार दो सौ तिहत्तर थी।

**Numbers 3:44**

<sup>44</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 3:45**

<sup>45</sup> “इस्माएलियों के सब पहलौठों के बदले लेवियों को, और उनके पशुओं के बदले लेवियों के पशुओं को ले; और लेवीय मेरे ही हों; मैं यहोवा हूँ।”

**Numbers 3:46**

<sup>46</sup> और इस्माएलियों के पहलौठों में से जो दो सौ तिहत्तर गिनती में लेवियों से अधिक हैं, उनके छुड़ाने के लिये,

**Numbers 3:47**

<sup>47</sup> पुरुष पाँच शेकेल ले; वे पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से हों, अर्थात् बीस गेरा का शेकेल हो।

**Numbers 3:48**

<sup>48</sup> और जो रूपया उन अधिक पहिलौठों की छुड़ौती का होगा उसे हारून और उसके पुत्रों को दे देना।”

**Numbers 3:49**

<sup>49</sup> अतः जो इस्राएली पहलौठे लेवियों के द्वारा छुड़ाए हुओं से अधिक थे उनके हाथ से मूसा ने छुड़ौती का रूपया लिया।

**Numbers 3:50**

<sup>50</sup> और एक हजार तीन सौ पैसठ शेकेल रूपया पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से वसूल हुआ।

**Numbers 3:51**

<sup>51</sup> और यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने छुड़ाए हुओं का रूपया हारून और उसके पुत्रों को दे दिया।

**Numbers 4:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 4:2**

<sup>2</sup> “लेवियों में से कहातियों की, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार, गिनती करो,

**Numbers 4:3**

<sup>3</sup> अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वालों में, जितने मिलापवाले तम्बू में काम-काज करने को भर्ती हैं।

**Numbers 4:4**

<sup>4</sup> और मिलापवाले तम्बू में परमपवित्र वस्तुओं के विषय कहातियों का यह काम होगा,

**Numbers 4:5**

<sup>5</sup> अर्थात् जब जब छावनी का कूच हो तब-तब हारून और उसके पुत्र भीतर आकर, बीचवाले पर्दे को उतार कर उससे साक्षीपत्र के सन्दूक को ढाँप दें;

**Numbers 4:6**

<sup>6</sup> तब वे उस पर सुइसों की खालों का आवरण डालें, और उसके ऊपर सम्पूर्ण नीले रंग का कपड़ा डालें, और सन्दूक में डंडों को लगाएँ।

**Numbers 4:7**

<sup>7</sup> फिर भेंटवाली रोटी की मेज पर नीला कपड़ा बिछाकर उस पर परातों, धूपदानों, करछों, और उण्डेलने के कटोरों को रखें; और प्रतिदिन की रोटी भी उस पर हो;

**Numbers 4:8**

<sup>8</sup> तब वे उन पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसको सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और मेज के डंडों को लगा दें।

**Numbers 4:9**

<sup>9</sup> फिर वे नीले रंग का कपड़ा लेकर दीपकों, गुलतराशों, और गुलदानों समेत उजियाला देनेवाले दीवट को, और उसके सब तैल के पात्रों को, जिनसे उसकी सेवा टहल होती है, ढाँपें;

**Numbers 4:10**

<sup>10</sup> तब वे सारे सामान समेत दीवट को सुइसों की खालों के आवरण के भीतर रखकर डंडे पर धर दें।

**Numbers 4:11**

<sup>11</sup> फिर वे सोने की बेदी पर एक नीला कपड़ा बिछाकर उसको सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और उसके डंडों को लगा दें;

**Numbers 4:12**

<sup>12</sup> तब वे सेवा टहल के सारे सामान को लेकर, जिससे पवित्रस्थान में सेवा टहल होती है, नीले कपड़े के भीतर रखकर सुइसों की खालों के आवरण से ढाँपें, और डंडे पर धर दें।

**Numbers 4:13**

<sup>13</sup> फिर वे वेदी पर से सब राख उठाकर वेदी पर बैगनी रंग का कपड़ा बिछाएँ;

**Numbers 4:14**

<sup>14</sup> तब जिस सामान से वेदी पर की सेवा टहल होती है वह सब, अर्थात् उसके करछे, काँटे, फावड़ियाँ, और कटोरे आदि, वेदी का सारा सामान उस पर रखें; और उसके ऊपर सुइसों की खालों का आवरण बिछाकर वेदी में डंडों को लगाएँ।

**Numbers 4:15**

<sup>15</sup> और जब हारून और उसके पुत्र छावनी के कूच के समय पवित्रस्थान और उसके सारे सामान को ढाँप चुके, तब उसके बाद कहाती उसके उठाने के लिये आएँ, पर किसी पवित्र वस्तु को न छाँएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ। कहातियों के उठाने के लिये मिलापवाले तम्बू की ये ही वस्तुएँ हैं।

**Numbers 4:16**

<sup>16</sup> “जो वस्तुएँ हारून याजक के पुत्र एलीआजर को देख-रेख के लिये सौंपी जाएँ वे ये हैं, अर्थात् उजियाला देने के लिये तेल, और सुगन्धित धूप, और नित्य अन्नबलि, और अभिषेक का तेल, और सारे निवास, और उसमें की सब वस्तुएँ, और पवित्रस्थान और उसके सम्पूर्ण सामान।”

**Numbers 4:17**

<sup>17</sup> फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 4:18**

<sup>18</sup> “कहातियों के कुलों के गोत्रों को लेवियों में से नाश न होने देना;

**Numbers 4:19**

<sup>19</sup> उसके साथ ऐसा करो, कि जब वे परमपवित्र वस्तुओं के समीप आएँ, तब न मरें परन्तु जीवित रहें; इस कारण हारून और उसके पुत्र भीतर आकर एक-एक के लिये उसकी सेवकाई और उसका भार ठहरा दें,

**Numbers 4:20**

<sup>20</sup> और वे पवित्र वस्तुओं के देखने को क्षण भर के लिये भी भीतर आने न पाएँ, कहीं ऐसा न हो कि मर जाएँ।”

**Numbers 4:21**

<sup>21</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 4:22**

<sup>22</sup> “गेशोनियों की भी गिनती उनके पितरों के घरानों और कुलों के अनुसार कर;

**Numbers 4:23**

<sup>23</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करने को भर्ती हों उन सभी को गिन ले।

**Numbers 4:24**

<sup>24</sup> सेवा करने और भार उठाने में गेशोनियों के कुलवालों की यह सेवकाई हो;

**Numbers 4:25**

<sup>25</sup> अर्थात् वे निवास के पटों, और मिलापवाले तम्बू और उसके आवरण, और इसके ऊपरवाले सुइसों की खालों के आवरण, और मिलापवाले तम्बू के द्वार के पर्दे,

**Numbers 4:26**

<sup>26</sup> और निवास, और वेदी के चारों ओर के आँगन के पर्दों, और आँगन के द्वार के पर्दे, और उनकी डोरियों, और उनमें काम

में आनेवाले सारे सामान, इन सभी को वे उठाया करें; और इन वस्तुओं से जितना काम होता है वह सब भी उनकी सेवकाई में आए।

### **Numbers 4:27**

<sup>27</sup> और गेशोनियों के वंश की सारी सेवकाई हास्तन और उसके पुत्रों के कहने से हुआ करे, अर्थात् जो कुछ उनको उठाना, और जो-जो सेवकाई उनको करनी हो, उनका सारा भार तुम ही उन्हें सौंपा करो।

### **Numbers 4:28**

<sup>28</sup> मिलापवाले तम्बू में गेशोनियों के कुलों की यही सेवकाई ठहरे; और उन पर हास्तन याजक का पुत्र ईतामार अधिकार रखे।

### **Numbers 4:29**

<sup>29</sup> “फिर मरारियों को भी तू उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लें;

### **Numbers 4:30**

<sup>30</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवा करने को भर्ती हों, उन सभी को गिन ले।

### **Numbers 4:31**

<sup>31</sup> और मिलापवाले तम्बू में की जिन वस्तुओं के उठाने की सेवकाई उनको मिले वे ये हों, अर्थात् निवास के तख्ते, बेंड़े, खम्भे, और कुर्सियाँ,

### **Numbers 4:32**

<sup>32</sup> और चारों ओर अँगन के खम्भे, और इनकी कुर्सियाँ, खूँटे, डोरियाँ, और भाँति-भाँति के काम का सारा सामान ढोने के लिये उनको सौंपा जाए उसमें से एक-एक वस्तु का नाम लेकर तुम गिन लो।

### **Numbers 4:33**

<sup>33</sup> मरारियों के कुलों की सारी सेवकाई जो उन्हें मिलापवाले तम्बू के विषय करनी होगी वह यही है; वह हास्तन याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में रहे।”

### **Numbers 4:34**

<sup>34</sup> तब मूसा और हास्तन और मण्डली के प्रधानों ने कहातियों के वंश को, उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार,

### **Numbers 4:35**

<sup>35</sup> तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष की आयु के, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे, उन सभी को गिन लिया;

### **Numbers 4:36**

<sup>36</sup> और जो अपने-अपने कुल के अनुसार गिने गए, वे दो हजार साढ़े सात सौ थे।

### **Numbers 4:37**

<sup>37</sup> कहातियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; जो आज्ञा यहोवा ने मूसा के द्वारा दी थी उसी के अनुसार मूसा और हास्तन ने इनको गिन लिया।

### **Numbers 4:38**

<sup>38</sup> गेशोनियों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

### **Numbers 4:39**

<sup>39</sup> अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को दल में भर्ती हुए थे,

### **Numbers 4:40**

<sup>40</sup> उनकी गिनती उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार दो हजार छः सौ तीस थी।

**Numbers 4:41**

<sup>41</sup> गेशोनियों के कुलों में से जितने मिलापवाले तम्बू में सेवा करनेवाले गिने गए, वे इतने ही थे; यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा और हारून ने इनको गिन लिया।

**Numbers 4:42**

<sup>42</sup> फिर मरारियों के कुलों में से जो अपने कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिने गए,

**Numbers 4:43**

<sup>43</sup> अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु के, जो मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने को भर्ती हुए थे,

**Numbers 4:44**

<sup>44</sup> उनकी गिनती उनके कुलों के अनुसार तीन हजार दो सौ थी।

**Numbers 4:45**

<sup>45</sup> मरारियों के कुलों में से जिनको मूसा और हारून ने, यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो मूसा के द्वारा मिली थी, गिन लिया वे इतने ही थे।

**Numbers 4:46**

<sup>46</sup> लेवियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राएली प्रधानों ने उनके कुलों और पितरों के घरानों के अनुसार गिन लिया,

**Numbers 4:47**

<sup>47</sup> अर्थात् तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक की आयु वाले, जितने मिलापवाले तम्बू की सेवकाई करने और बोझ उठाने का काम करने को हाजिर होनेवाले थे,

**Numbers 4:48**

<sup>48</sup> उन सभी की गिनती आठ हजार पाँच सौ अस्सी थी।

**Numbers 4:49**

<sup>49</sup> ये अपनी-अपनी सेवा और बोझ ढोने के लिए यहोवा के कहने पर गए। जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार वे गिने गए।

**Numbers 5:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 5:2**

<sup>2</sup> “इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे सब कोटियों को, और जितनों के प्रमेह हो, और जितने लोथ के कारण अशुद्ध हों, उन सभी को छावनी से निकाल दें;

**Numbers 5:3**

<sup>3</sup> ऐसों को चाहे पुरुष हों, चाहे स्त्री, छावनी से निकालकर बाहर कर दें; कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी छावनी, जिसके बीच मैं निवास करता हूँ, उनके कारण अशुद्ध हो जाए।”

**Numbers 5:4**

<sup>4</sup> और इस्राएलियों ने वैसा ही किया, अर्थात् ऐसे लोगों को छावनी से निकालकर बाहर कर दिया; जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था इस्राएलियों ने वैसा ही किया।

**Numbers 5:5**

<sup>5</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 5:6**

<sup>6</sup> “इस्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष या स्त्री ऐसा कोई पाप करके जो लोग किया करते हैं यहोवा से विश्वासघात करे, और वह मनुष्य दोषी हो,

**Numbers 5:7**

<sup>7</sup> तब वह अपना किया हुआ पाप मान ले; और पूरी क्षतिपूर्ति में पाँचवाँ अंश बढ़ाकर अपने दोष के बदले में उसी को दे, जिसके विषय दोषी हुआ हो।

**Numbers 5:8**

<sup>8</sup> परन्तु यदि उस मनुष्य का कोई कुटुम्बी न हो जिसे दोष का बदला भर दिया जाए, तो उस दोष का जो बदला यहोवा को भर दिया जाए वह याजक का हो, और वह उस प्रायश्चित्वाले मेढ़े से अधिक हो जिससे उसके लिये प्रायश्चित्त किया जाए।

**Numbers 5:9**

<sup>9</sup> और जितनी पवित्र की हुई वस्तुएँ इसाएली उठाई हुई भेट करके याजक के पास लाए, वे उसी की हों;

**Numbers 5:10**

<sup>10</sup> सब मनुष्यों की पवित्र की हुई वस्तुएँ याजक की ठहरें; कोई जो कुछ याजक को दे वह उसका ठहरे।”

**Numbers 5:11**

<sup>11</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 5:12**

<sup>12</sup> “इसाएलियों से कह, कि यदि किसी मनुष्य की स्त्री बुरी चाल चलकर उससे विश्वासघात करे,

**Numbers 5:13**

<sup>13</sup> और कोई पुरुष उसके साथ कुर्कम्म करे, परन्तु यह बात उसके पति से छिपी हो और खुली न हो, और वह अशुद्ध हो गई, परन्तु न तो उसके विरुद्ध कोई साक्षी हो, और न कुर्कम्म करते पकड़ी गई हो;

**Numbers 5:14**

<sup>14</sup> और उसके पति के मन में संदेह उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे और वह अशुद्ध हुई हो; या उसके

मन में जलन उत्पन्न हो, अर्थात् वह अपनी स्त्री पर जलने लगे परन्तु वह अशुद्ध न हुई हो;

**Numbers 5:15**

<sup>15</sup> तो वह पुरुष अपनी स्त्री को याजक के पास ले जाए, और उसके लिये एपा का दसवाँ अंश जौ का मैदा चढ़ावा करके ले आए; परन्तु उस पर तेल न डाले, न लोबान रखे, क्योंकि वह जलनवाला और स्मरण दिलानेवाला, अर्थात् अधर्म का स्मरण करानेवाला अन्नबलि होगा।

**Numbers 5:16**

<sup>16</sup> “तब याजक उस स्त्री को समीप ले जाकर यहोवा के सामने खड़ा करे;

**Numbers 5:17**

<sup>17</sup> और याजक मिट्टी के पात्र में पवित्र जल ले, और निवास-स्थान की भूमि पर की धूल में से कुछ लेकर उस जल में डाल दे।

**Numbers 5:18**

<sup>18</sup> तब याजक उस स्त्री को यहोवा के सामने खड़ा करके उसके सिर के बाल बिखराए, और स्मरण दिलानेवाले अन्नबलि को जो जलनवाला है उसके हाथों पर धर दे। और अपने हाथ में याजक कड़वा जल लिये रहे जो श्राप लगाने का कारण होगा।

**Numbers 5:19**

<sup>19</sup> तब याजक स्त्री को शपथ धरवाकर कहे, कि यदि किसी पुरुष ने तुझ से कुर्कम्म न किया हो, और तू पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध न हो गई हो, तो तू इस कड़वे जल के गुण से जो श्राप का कारण होता है बची रहे।

**Numbers 5:20**

<sup>20</sup> पर यदि तू अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हुई हो, और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुरुष ने तुझ से प्रसंग किया हो,

**Numbers 5:21**

<sup>21</sup> (और याजक उसे श्राप देनेवाली शपथ धराकर कहे,) यहोवा तेरी जाँघ सड़ाए और तेरा पेट फुलाए, और लोग तेरा नाम लेकर श्राप और धिक्कार दिया करें;

**Numbers 5:22**

<sup>22</sup> अर्थात् वह जल जो श्राप का कारण होता है तेरी अंतिमियों में जाकर तेरे पेट को फुलाए, और तेरी जाँघ को सड़ा दे। तब वह स्त्री कहे, आमीन, आमीन।

**Numbers 5:23**

<sup>23</sup> “तब याजक श्राप के ये शब्द पुस्तक में लिखकर उस कड़वे जल से मिटाकर,

**Numbers 5:24**

<sup>24</sup> उस स्त्री को वह कड़वा जल पिलाए जो श्राप का कारण होता है, और वह जल जो श्राप का कारण होगा उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा।

**Numbers 5:25**

<sup>25</sup> और याजक स्त्री के हाथ में से जलनवाले अन्नबलि को लेकर यहोवा के आगे हिलाकर वेदी के समीप पहुँचाए;

**Numbers 5:26**

<sup>26</sup> और याजक उस अन्नबलि में से उसका स्मरण दिलानेवाला भाग, अर्थात् मुट्ठी भर लेकर वेदी पर जलाए, और उसके बाद स्त्री को वह जल पिलाए।

**Numbers 5:27**

<sup>27</sup> और जब वह उसे वह जल पिला चुके, तब यदि वह अशुद्ध हुई हो और अपने पति का विश्वासघात किया हो, तो वह जल जो श्राप का कारण होता है उस स्त्री के पेट में जाकर कड़वा हो जाएगा, और उसका पेट फूलेगा, और उसकी जाँघ सड़ जाएगी, और उस स्त्री का नाम उसके लोगों के बीच श्रापित होगा।

**Numbers 5:28**

<sup>28</sup> पर यदि वह स्त्री अशुद्ध न हुई हो और शुद्ध ही हो, तो वह निर्दोष ठहरेगी और गर्भवती हो सकेगी।

**Numbers 5:29**

<sup>29</sup> “जलन की व्यवस्था यही है, चाहे कोई स्त्री अपने पति को छोड़ दूसरे की ओर फिरके अशुद्ध हो,

**Numbers 5:30**

<sup>30</sup> चाहे पुरुष के मन में जलन उत्पन्न हो और वह अपनी स्त्री पर जलने लगे; तो वह उसको यहोवा के सम्मुख खड़ा कर दे, और याजक उस पर यह सारी व्यवस्था पूरी करे।

**Numbers 5:31**

<sup>31</sup> तब पुरुष अर्थात् से बचा रहेगा, और स्त्री अपने अर्धम का बोझ आप उठाएगी।”

**Numbers 6:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 6:2**

<sup>2</sup> “इस्त्राएलियों से कह कि जब कोई पुरुष या स्त्री नाज़ीर की मन्त्रत, अर्थात् अपने को यहोवा के लिये अलग करने की विशेष मन्त्रत माने,

**Numbers 6:3**

<sup>3</sup> तब वह दाखमधु और मदिरा से अलग रहे; वह न दाखमधु का, और न मदिरा का सिरका पीए, और न दाख का कुछ रस भी पीए, वरन् दाख न खाए, चाहे हरी हो चाहे सूखी।

**Numbers 6:4**

<sup>4</sup> जितने दिन यह अलग रहे उतने दिन तक वह बीज से लेकर छिलके तक, जो कुछ दाखलता से उत्पन्न होता है, उसमें से कुछ न खाए।

**Numbers 6:5**

<sup>5</sup> “फिर जितने दिन उसने अलग रहने की मन्त्रत मानी हो उतने दिन तक वह अपने सिर पर छुरा न फिराए; और जब तक वे दिन पूरे न हों जिनमें वह यहोवा के लिये अलग रहे तब तक वह पवित्र ठहरेगा, और अपने सिर के बालों को बढ़ाए रहे।

**Numbers 6:6**

<sup>6</sup> जितने दिन वह यहोवा के लिये अलग रहे उतने दिन तक किसी लोथ के पास न जाए।

**Numbers 6:7**

<sup>7</sup> चाहे उसका पिता, या माता, या भाई, या बहन भी मरे, तो भी वह उनके कारण अशुद्ध न हो; क्योंकि अपने परमेश्वर के लिये अलग रहने का चिन्ह उसके सिर पर होगा।

**Numbers 6:8**

<sup>8</sup> अपने अलग रहने के सारे दिनों में वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरा रहे।

**Numbers 6:9**

<sup>9</sup> “यदि कोई उसके पास अचानक मर जाए, और उसके अलग रहने का जो चिन्ह उसके सिर पर होगा वह अशुद्ध हो जाए, तो वह शुद्ध होने के दिन, अर्थात् सातवें दिन अपना सिर मुँड़ाए।

**Numbers 6:10**

<sup>10</sup> और आठवें दिन वह दो पंडुक या कबूतरी के दो बच्चे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक के पास ले जाए,

**Numbers 6:11**

<sup>11</sup> और याजक एक को पापबलि, और दूसरे को होमबलि करके उसके लिये प्रायश्चित करे, क्योंकि वह लोथ के कारण पापी ठहरा है। और याजक उसी दिन उसका सिर फिर पवित्र करे,

**Numbers 6:12**

<sup>12</sup> और वह अपने अलग रहने के दिनों को फिर यहोवा के लिये अलग ठहराए, और एक वर्ष का एक भेड़ का बच्चा दोषबलि करके ले आए; और जो दिन इससे पहले बीत गए हों वे व्यर्थ गिने जाएँ, क्योंकि उसके अलग रहने का चिन्ह अशुद्ध हो गया।

**Numbers 6:13**

<sup>13</sup> “फिर जब नाज़ीर के अलग रहने के दिन पूरे हों, उस समय के लिये उसकी यह व्यवस्था है; अर्थात् वह मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुँचाया जाए,

**Numbers 6:14**

<sup>14</sup> और वह यहोवा के लिये होमबलि करके एक वर्ष का एक निर्दोष भेड़ का बच्चा पापबलि करके, और एक वर्ष की एक निर्दोष भेड़ की बच्ची, और मेलबलि के लिये एक निर्दोष मेढ़ा,

**Numbers 6:15**

<sup>15</sup> और अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, अर्थात् तेल से सने हुए मैदे के फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अखमीरी पपड़ियाँ, और उन बौलियों के अन्नबलि और अर्ध; ये सब चढ़ावे समीप ले जाए।

**Numbers 6:16**

<sup>16</sup> इन सब को याजक यहोवा के सामने पहुँचाकर उसके पापबलि और होमबलि को चढ़ाए,

**Numbers 6:17**

<sup>17</sup> और अखमीरी रोटी की टोकरी समेत मेढ़े को यहोवा के लिये मेलबलि करके, और उस मेलबलि के अन्नबलि और अर्ध को भी चढ़ाए।

**Numbers 6:18**

<sup>18</sup> तब नाज़ीर अपने अलग रहने के चिन्हवाले सिर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मुँड़ाकर अपने बालों को उस आग पर डाल दे जो मेलबलि के नीचे होगी।

**Numbers 6:19**

<sup>19</sup> फिर जब नाज़ीर अपने अलग रहने के चिन्हवाले सिर को मुँड़ा चुके तब याजक मेढ़े का पकाया हुआ कंधा, और टोकरी में से एक अखमीरी रोटी, और एक अखमीरी पपड़ी लेकर नाज़ीर के हाथों पर धर दे,

**Numbers 6:20**

<sup>20</sup> और याजक इनको हिलाने की भेंट करके यहोवा के सामने हिलाए; हिलाई हुई छाती और उठाई हुई जाँघ समेत ये भी याजक के लिये पवित्र ठहरें; इसके बाद वह नाज़ीर दाखमधु पी सकेगा।

**Numbers 6:21**

<sup>21</sup> “नाज़ीर की मन्त्रत की, और जो चढ़ावा उसको अपने अलग होने के कारण यहोवा के लिये चढ़ाना होगा उसकी भी यही व्यवस्था है। जो चढ़ावा वह अपनी पूँजी के अनुसार चढ़ा सके, उससे अधिक जैसी मन्त्रत उसने मानी हो, वैसे ही अपने अलग रहने की व्यवस्था के अनुसार उसे करना होगा।”

**Numbers 6:22**

<sup>22</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 6:23**

<sup>23</sup> “हारून और उसके पुत्रों से कह कि तुम इसाएलियों को इन वचनों से आशीर्वाद दिया करना:

**Numbers 6:24**

<sup>24</sup> “यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे:

**Numbers 6:25**

<sup>25</sup> “यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे:

**Numbers 6:26**

<sup>26</sup> “यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शान्ति दे।

**Numbers 6:27**

<sup>27</sup> “इस रीति से मेरे नाम को इस्साएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूँगा।”

**Numbers 7:1**

1 फिर जब मूसा ने निवास को खड़ा किया, और सारे सामान समेत उसका अभिषेक करके उसको पवित्र किया, और सारे सामान समेत वेदी का भी अभिषेक करके उसे पवित्र किया,

**Numbers 7:2**

<sup>2</sup> तब इस्साएल के प्रधान जो अपने-अपने पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष, और गोत्रों के भी प्रधान होकर गिनती लेने के काम पर नियुक्त थे,

**Numbers 7:3**

<sup>3</sup> वे यहोवा के सामने भेंट ले आए, और उनकी भेंट छः भरी हुई गाड़ियाँ और बारह बैल थे, अर्थात् दो-दो प्रधान की ओर से एक-एक गाड़ी, और एक-एक प्रधान की ओर से एक-एक बैल; इन्हें वे निवास के सामने यहोवा के समीप ले गए।

**Numbers 7:4**

<sup>4</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 7:5**

<sup>5</sup> “उन वस्तुओं को तू उनसे ले ले, कि मिलापवाले तम्बू की सेवकाई में काम आए, तू उन्हें लेवियों के एक-एक कुल की विशेष सेवकाई के अनुसार उनको बाँट दे।”

**Numbers 7:6**

<sup>6</sup> अतः मूसा ने वे सब गाड़ियाँ और बैल लेकर लेवियों को दे दिये।

**Numbers 7:7**

<sup>7</sup> गेशोनियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए;

**Numbers 7:8**

<sup>8</sup> और मरारियों को उनकी सेवकाई के अनुसार उसने चार गाड़ियाँ और आठ बैल दिए; ये सब हारून याजक के पुत्र ईतामार के अधिकार में किए गए।

**Numbers 7:9**

<sup>9</sup> परन्तु कहातियों को उसने कुछ न दिया, क्योंकि उनके लिये पवित्र वस्तुओं की यह सेवकाई थी कि वह उसे अपने कंधों पर उठा लिया करें।

**Numbers 7:10**

<sup>10</sup> फिर जब वेदी का अभिषेक हुआ तब प्रधान उसके संस्कार की भेट वेदी के समीप ले जाने लगे।

**Numbers 7:11**

<sup>11</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वेदी के संस्कार के लिये प्रधान लोग अपनी-अपनी भेट अपने-अपने नियत दिन पर चढ़ाएँ।”

**Numbers 7:12**

<sup>12</sup> इसलिए जो पुरुष पहले दिन अपनी भेट ले गया वह यहूदा गोत्रवाले अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन था;

**Numbers 7:13**

<sup>13</sup> उसकी भेट यह थी, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:14**

<sup>14</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:15**

<sup>15</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:16**

<sup>16</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:17**

<sup>17</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीनादाब के पुत्र नहशोन की यही भेट थी।

**Numbers 7:18**

<sup>18</sup> दूसरे दिन इस्साकार का प्रधान सूआर का पुत्र नतनेल भेट ले आया;

**Numbers 7:19**

<sup>19</sup> वह यह थी, अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:20**

<sup>20</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:21**

<sup>21</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:22**

<sup>22</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:23**

<sup>23</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूअर के पुत्र नतनेल की यही भेट थी।

**Numbers 7:24**

<sup>24</sup> और तीसरे दिन जब्लूनियों का प्रधान हेलोन का पुत्र एलीआब यह भेट ले आया,

**Numbers 7:25**

<sup>25</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:26**

<sup>26</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:27**

<sup>27</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:28**

<sup>28</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:29**

<sup>29</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। हेलोन के पुत्र एलीआब की यही भेट थी।

**Numbers 7:30**

<sup>30</sup> और चौथे दिन रूबेनियों का प्रधान शदेऊर का पुत्र एलीसूर यह भेट ले आया,

**Numbers 7:31**

<sup>31</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:32**

<sup>32</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:33**

<sup>33</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:34**

<sup>34</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:35**

<sup>35</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। शदेऊर के पुत्र एलीसूर की यही भेट थी।

**Numbers 7:36**

<sup>36</sup> पाँचवें दिन शिमोनियों का प्रधान सूरीशदै का पुत्र शलूमीएल यह भेट ले आया,

**Numbers 7:37**

<sup>37</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:38**

<sup>38</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:39**

<sup>39</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेड़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:40**

<sup>40</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:41**

<sup>41</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेड़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। सूरीशदै के पुत्र शलूमीएल की यही भेट थी।

**Numbers 7:42**

<sup>42</sup> और छठवें दिन गादियों का प्रधान दूएल का पुत्र एल्यासाप यह भेट ले आया,

**Numbers 7:43**

<sup>43</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शोकेल के हिसाब से एक सौ तीस शोकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शोकेल चाँदी का एक कटोरा ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:44**

<sup>44</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शोकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:45**

<sup>45</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेड़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:46**

<sup>46</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:47**

<sup>47</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेड़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। दूएल के पुत्र एल्यासाप की यही भेट थी।

**Numbers 7:48**

<sup>48</sup> सातवें दिन एप्रैमियों का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा यह भेट ले आया,

**Numbers 7:49**

<sup>49</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शोकेल के हिसाब से एक सौ तीस शोकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शोकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:50**

<sup>50</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शोकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:51**

<sup>51</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, एक मेड़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:52**

<sup>52</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:53**

<sup>53</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेड़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अम्मीहूद के पुत्र एलीशामा की यही भेट थी।

**Numbers 7:54**

<sup>54</sup> आठवें दिन मनश्शेइयों का प्रधान पदासूर का पुत्र गम्लीएल यह भेट ले आया,

**Numbers 7:55**

<sup>55</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:56**

<sup>56</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:57**

<sup>57</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:58**

<sup>58</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:59**

<sup>59</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। पदासूर के पुत्र गम्लीएल की यही भेट थी।

**Numbers 7:60**

<sup>60</sup> नवें दिन बिन्यामीनियों का प्रधान गिदोनी का पुत्र अबीदान यह भेट ले आया,

**Numbers 7:61**

<sup>61</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:62**

<sup>62</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:63**

<sup>63</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:64**

<sup>64</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:65**

<sup>65</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। गिदोनी के पुत्र अबीदान की यही भेट थी।

**Numbers 7:66**

<sup>66</sup> दसवें दिन दानियों का प्रधान अम्मीशद्वे का पुत्र अहीएजेर यह भेट ले आया,

**Numbers 7:67**

<sup>67</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:68**

<sup>68</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:69**

<sup>69</sup> होमबलि के लिये बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:70**

<sup>70</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:71**

<sup>71</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। अमीशहै के पुत्र अहीएजेर की यही भेट थी।

**Numbers 7:72**

<sup>72</sup> ग्यारहवें दिन आशेरियों का प्रधान ओक्रान का पुत्र पगीएल यह भेट ले आया।

**Numbers 7:73**

<sup>73</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:74**

<sup>74</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का धूपदान;

**Numbers 7:75**

<sup>75</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:76**

<sup>76</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:77**

<sup>77</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। ओक्रान के पुत्र पगीएल की यही भेट थी।

**Numbers 7:78**

<sup>78</sup> बारहवें दिन नप्तालियों का प्रधान एनान का पुत्र अहीरा यह भेट ले आया,

**Numbers 7:79**

<sup>79</sup> अर्थात् पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से एक सौ तीस शेकेल चाँदी का एक परात, और सत्तर शेकेल चाँदी का एक कटोरा, ये दोनों अन्नबलि के लिये तेल से सने हुए और मैदे से भरे हुए थे;

**Numbers 7:80**

<sup>80</sup> फिर धूप से भरा हुआ दस शेकेल सोने का एक धूपदान;

**Numbers 7:81**

<sup>81</sup> होमबलि के लिये एक बछड़ा, और एक मेढ़ा, और एक वर्ष का एक भेड़ी का बच्चा;

**Numbers 7:82**

<sup>82</sup> पापबलि के लिये एक बकरा;

**Numbers 7:83**

<sup>83</sup> और मेलबलि के लिये दो बैल, और पाँच मेढ़े, और पाँच बकरे, और एक-एक वर्ष के पाँच भेड़ी के बच्चे। एनान के पुत्र अहीरा की यही भेट थी।

**Numbers 7:84**

<sup>84</sup> तेदी के अभिषेक के समय इस्ताएल के प्रधानों की ओर से उसके संस्कार की भेट यही हुई, अर्थात् चाँदी के बारह परात, चाँदी के बारह कटोरे, और सोने के बारह धूपदान।

**Numbers 7:85**

<sup>85</sup> एक-एक चाँदी का परात एक सौ तीस शेकेल का, और एक-एक चाँदी का कटोरा सत्तर शेकेल का था; और पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से ये सब चाँदी के पात्र दो हजार चार सौ शेकेल के थे।

**Numbers 7:86**

<sup>86</sup> फिर धूप से भरे हुए सोने के बारह धूपदान जो पवित्रस्थान के शेकेल के हिसाब से दस-दस शेकेल के थे, वे सब धूपदान एक सौ बीस शेकेल सोने के थे।

**Numbers 7:87**

<sup>87</sup> फिर होमबलि के लिये सब मिलाकर बारह बछड़े, बारह मेढ़े, और एक-एक वर्ष के बारह भेड़ी के बच्चे, अपने-अपने अन्नबलि सहित थे; फिर पापबलि के सब बकरे बारह थे;

**Numbers 7:88**

<sup>88</sup> और मेलबलि के लिये सब मिलाकर चौबीस बैल, और साठ मेढ़े, और साठ बकरे, और एक-एक वर्ष के साठ भेड़ी के बच्चे थे। वेदी के अभिषेक होने के बाद उसके संस्कार की भेंट यही हुई।

**Numbers 7:89**

<sup>89</sup> और जब मूसा यहोवा से बातें करने को मिलापवाले तम्बू में गया, तब उसने प्रायश्चित्त के ढकने पर से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करुणों के मध्य में से उसकी आवाज सुनी जो उससे बातें कर रहा था; और उसने (यहोवा) उससे बातें की।

**Numbers 8:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 8:2**

<sup>2</sup> “हारून को समझाकर यह कह कि जब जब तू दीपकों को जलाए तब-तब सातों दीपक का प्रकाश दीवट के सामने हो।”

**Numbers 8:3**

<sup>3</sup> इसलिए हारून ने वैसा ही किया, अर्थात् जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उसी के अनुसार उसने दीपकों को जलाया कि वे दीवट के सामने उजियाला दें।

**Numbers 8:4**

<sup>4</sup> और दीवट की बनावट ऐसी थी, अर्थात् यह पाए से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बनाया गया था; जो नमूना यहोवा ने मूसा को दिखलाया था उसी के अनुसार उसने दीवट को बनाया।

**Numbers 8:5**

<sup>5</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 8:6**

<sup>6</sup> “इस्साएलियों के मध्य में से लेवियों को अलग लेकर शुद्ध कर।

**Numbers 8:7**

<sup>7</sup> उन्हें शुद्ध करने के लिये तू ऐसा कर, कि पावन करनेवाला जल उन पर छिड़क दे, फिर वे सर्वांग मुँँड़न कराएँ, और वस्त्र धोएँ, और वे अपने को शुद्ध करें।

**Numbers 8:8**

<sup>8</sup> तब वे तेल से सने हुए मैदे के अन्नबलि समेत एक बछड़ा ले लें, और तू पापबलि के लिये एक दूसरा बछड़ा लेना।

**Numbers 8:9**

<sup>9</sup> और तू लेवियों को मिलापवाले तम्बू के सामने पहुँचाना, और इस्साएलियों की सारी मण्डली को इकट्ठा करना।

**Numbers 8:10**

<sup>10</sup> तब तू लेवियों को यहोवा के आगे समीप ले आना, और इस्साएली अपने-अपने हाथ उन पर रखें,

**Numbers 8:11**

<sup>11</sup> तब हारून लेवियों को यहोवा के सामने इस्साएलियों की ओर से हिलाई हुई भेंट करके अर्पण करे कि वे यहोवा की सेवा करनेवाले ठहरें।

**Numbers 8:12**

<sup>12</sup> तब लेवीय अपने-अपने हाथ उन बछड़ों के सिरों पर रखें; तब तू लेवियों के लिये प्रायश्चित्त करने को एक बछड़ा पापबलि और दूसरा होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाना।

**Numbers 8:13**

<sup>13</sup> और लेवियों को हारून और उसके पुत्रों के सम्मुख खड़ा करना, और उनको हिलाने की भेट के लिये यहोवा को अर्पण करना।

**Numbers 8:14**

<sup>14</sup> “इस प्रकार तू उन्हें इसाएलियों में से अलग करना, और वे मेरे ही ठहरेंगे।

**Numbers 8:15**

<sup>15</sup> और जब तू लेवियों को शुद्ध करके हिलाई हुई भेट के लिये अर्पण कर चुके, उसके बाद वे मिलापवाले तम्बू सम्बंधी सेवा ठहल करने के लिये अन्दर आया करें।

**Numbers 8:16**

<sup>16</sup> क्योंकि वे इसाएलियों में से मुझे पूरी रीति से अर्पण किए हुए हैं; मैंने उनको सब इसाएलियों में से एक-एक स्त्री के पहलौठे के बदले अपना कर लिया है।

**Numbers 8:17**

<sup>17</sup> इसाएलियों के पहलौठे, चाहे मनुष्य के हों, चाहे पशु के, सब मेरे हैं; क्योंकि मैंने उन्हें उस समय अपने लिये पवित्र ठहराया जब मैंने मिस देश के सब पहिलौठों को मार डाला।

**Numbers 8:18**

<sup>18</sup> और मैंने इसाएलियों के सब पहिलौठों के बदले लेवियों को लिया है।

**Numbers 8:19**

<sup>19</sup> उन्हें लेकर मैंने हारून और उसके पुत्रों को इसाएलियों में से दान करके दे दिया है, कि वे मिलापवाले तम्बू में इसाएलियों के निमित्त सेवकाई और प्रायश्चित्त किया करें, कहीं ऐसा न हो कि जब इसाएली पवित्रस्थान के समीप आएँ तब उन पर कोई महाविपत्ति आ पड़े।”

**Numbers 8:20**

<sup>20</sup> लेवियों के विषय यहोवा की यह आज्ञा पाकर मूसा और हारून और इसाएलियों की सारी मण्डली ने उनके साथ ठीक वैसा ही किया।

**Numbers 8:21**

<sup>21</sup> लेवियों ने तो अपने को पाप से शुद्ध किया, और अपने वस्तों को धो डाला; और हारून ने उन्हें यहोवा के सामने हिलाई हुई भेट के निमित्त अर्पण किया, और उन्हें शुद्ध करने को उनके लिये प्रायश्चित्त भी किया।

**Numbers 8:22**

<sup>22</sup> और उसके बाद लेवीय हारून और उसके पुत्रों के सामने मिलापवाले तम्बू में अपनी-अपनी सेवकाई करने को गए; और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को लेवियों के विषय में दी थी, उसी के अनुसार वे उनसे व्यवहार करने लगे।

**Numbers 8:23**

<sup>23</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 8:24**

<sup>24</sup> “जो लेवियों को करना है वह यह है, कि पचीस वर्ष की आयु से लेकर उससे अधिक आयु में वे मिलापवाले तम्बू सम्बंधी काम करने के लिये भीतर उपस्थित हुआ करें;

**Numbers 8:25**

<sup>25</sup> और जब पचास वर्ष के हों तो फिर उस सेवा के लिये न आए और न काम करें;

**Numbers 8:26**

<sup>26</sup> परन्तु वे अपने भाई-बन्धुओं के साथ मिलापवाले तम्बू के पास रक्षा का काम किया करें, और किसी प्रकार की सेवकाई न करें। लेवियों को जो-जो काम सौंपे जाएँ उनके विषय तू उनसे ऐसा ही करना।”

**Numbers 9:1**

<sup>1</sup> इस्साएलियों के मिस्र देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहले महीने में यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा,

**Numbers 9:2**

<sup>2</sup> “इस्साएली फसह नामक पर्व को उसके नियत समय पर मनाया करें।

**Numbers 9:3**

<sup>3</sup> अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को साँझ के समय तुम लोग उसे सब विधियों और नियमों के अनुसार मानना।”

**Numbers 9:4**

<sup>4</sup> तब मूसा ने इस्साएलियों से फसह मानने के लिये कह दिया।

**Numbers 9:5**

<sup>5</sup> और उन्होंने पहले महीने के चौदहवें दिन को साँझ के समय सीनै के जंगल में फसह को मनाया; और जो-जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं उन्हीं के अनुसार इस्साएलियों ने किया।

**Numbers 9:6**

<sup>6</sup> परन्तु कुछ लोग एक मनुष्य के शव के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न मना सके; वे उसी दिन मूसा और हारून के समीप जाकर मूसा से कहने लगे,

**Numbers 9:7**

<sup>7</sup> “हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं; परन्तु हम क्यों रुके रहे, और इस्साएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्यों न चढ़ाएँ?”

**Numbers 9:8**

<sup>8</sup> मूसा ने उनसे कहा, “ठहरे रहो, मैं सुन लूँ कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है।”

**Numbers 9:9**

<sup>9</sup> यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 9:10**

<sup>10</sup> “इस्साएलियों से कह कि चाहे तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई भी किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो, या दूर की यात्रा पर हो, तो भी वह यहोवा के लिये फसह को माने।

**Numbers 9:11**

<sup>11</sup> वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को साँझ के समय मनाएँ; और फसह के बलिपशु के माँस को अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएँ।

**Numbers 9:12**

<sup>12</sup> और उसमें से कुछ भी सवेरे तक न रख छोड़े, और न उसकी कोई हड्डी तोड़े; वे फसह के पर्व को सारी विधियों के अनुसार मनाएँ।

**Numbers 9:13**

<sup>13</sup> परन्तु जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्व को न माने, वह मनुष्य अपने लोगों में से नाश किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा।

**Numbers 9:14**

<sup>14</sup> यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिये फसह मनाएँ, तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार उसको माने; देशी और परदेशी दोनों के लिये तुम्हारी एक ही विधि हो।”

**Numbers 9:15**

<sup>15</sup> जिस दिन निवास जो, साक्षी का तम्बू भी कहलाता है, खड़ा किया गया, उस दिन बादल उस पर छा गया; और संध्या को वह निवास पर आग के समान दिखाई दिया और भोर तक दिखाई देता रहा।

**Numbers 9:16**

<sup>16</sup> प्रतिदिन ऐसा ही हुआ करता था; अर्थात् दिन को बादल छाया रहता, और रात को आग दिखाई देती थी।

**Numbers 9:17**

<sup>17</sup> और जब वह बादल तम्बू पर से उठ जाता तब इसाएली प्रस्थान करते थे; और जिस स्थान पर बादल ठहर जाता वहीं इसाएली अपने डेरे खड़े करते थे।

**Numbers 9:18**

<sup>18</sup> यहोवा की आज्ञा से इसाएली कूच करते थे, और यहोवा ही की आज्ञा से वे डेरे खड़े भी करते थे; और जितने दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता, उतने दिन तक वे डेरे डाले पड़े रहते थे।

**Numbers 9:19**

<sup>19</sup> जब बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता, तब भी इसाएली यहोवा की आज्ञा मानते, और प्रस्थान नहीं करते थे।

**Numbers 9:20**

<sup>20</sup> और कभी-कभी वह बादल थोड़े ही दिन तक निवास पर रहता, और तब भी वे यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पड़े रहते थे; और फिर यहोवा की आज्ञा ही से वे प्रस्थान करते थे।

**Numbers 9:21**

<sup>21</sup> और कभी-कभी बादल केवल संध्या से भोर तक रहता; और जब वह भोर को उठ जाता था तब वे प्रस्थान करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर रहता, तो जब बादल उठ जाता, तब ही वे प्रस्थान करते थे।

**Numbers 9:22**

<sup>22</sup> वह बादल चाहे दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर, जब तक निवास पर ठहरा रहता, तब तक इसाएली अपने डेरों में रहते और प्रस्थान नहीं करते थे; परन्तु जब वह उठ जाता तब वे प्रस्थान करते थे।

**Numbers 9:23**

<sup>23</sup> यहोवा की आज्ञा से वे अपने डेरे खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे; जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता था, उसको वे माना करते थे।

**Numbers 10:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 10:2**

<sup>2</sup> “चाँदी की दो तुरहियां गढ़कर बनाई जाएः तू उनको मण्डली के बुलाने, और छावनियों के प्रस्थान करने में काम में लाना।

**Numbers 10:3**

<sup>3</sup> और जब वे दोनों फूँकी जाएँ, तब सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर तेरे पास इकट्ठी हो जाएँ।

**Numbers 10:4**

<sup>4</sup> यदि एक ही तुरही फूँकी जाए, तो प्रधान लोग जो इसाएल के हजारों के मुख्य पुरुष हैं तेरे पास इकट्ठे हो जाएँ।

**Numbers 10:5**

<sup>5</sup> जब तुम लोग साँस बाँधकर फूँको, तो पूर्व दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो।

**Numbers 10:6**

<sup>6</sup> और जब तुम दूसरी बार साँस बाँधकर फूँको, तब दक्षिण दिशा की छावनियों का प्रस्थान हो। उनके प्रस्थान करने के लिये वे साँस बाँधकर फूँकें।

**Numbers 10:7**

<sup>7</sup> जब लोगों को इकट्ठा करके सभा करनी हो तब भी फूँकना परन्तु साँस बाँधकर नहीं।

**Numbers 10:8**

<sup>8</sup> और हारून के पुत्र जो याजक हैं वे उन तुरहियों को फूँका करें। यह बात तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी के लिये सर्वदा की विधि रहे।

**Numbers 10:9**

<sup>9</sup> और जब तुम अपने देश में किसी सतानेवाले बैरी से लड़ने को निकलो, तब तुरहियों को साँस बाँधकर फूँकना, तब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को तुम्हारा स्मरण आएगा, और तुम अपने शत्रुओं से बचाए जाओगे।

**Numbers 10:10**

<sup>10</sup> अपने आनन्द के दिन में, और अपने नियत पर्वों में, और महीनों के आदि में, अपने होमबलियों और मेलबलियों के साथ उन तुरहियों को फूँकना; इससे तुम्हारे परमेश्वर को तुम्हारा स्मरण आएगा; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

**Numbers 10:11**

<sup>11</sup> दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन को बादल साक्षि के निवास के तम्बू पर से उठ गया,

**Numbers 10:12**

<sup>12</sup> तब इसाएली सीनै के जंगल में से निकलकर प्रस्थान करके निकले; और बादल पारान नामक जंगल में ठहर गया।

**Numbers 10:13**

<sup>13</sup> उनका प्रस्थान यहोवा की उस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी थी आरम्भ हुआ।

**Numbers 10:14**

<sup>14</sup> और सबसे पहले तो यहुदियों की छावनी के झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे दल बाँधकर चले; और उनका सेनापति अमीनादाब का पुत्र नहशोन था।

**Numbers 10:15**

<sup>15</sup> और इस्साकारियों के गोत्र का सेनापति सूआर का पुत्र नतनेल था।

**Numbers 10:16**

<sup>16</sup> और जबूलूनियों के गोत्र का सेनापति हेलोन का पुत्र एलीआब था।

**Numbers 10:17**

<sup>17</sup> तब निवास का तम्बू उतारा गया, और गेशोनियों और मरारियों ने जो निवास के तम्बू को उठाते थे प्रस्थान किया।

**Numbers 10:18**

<sup>18</sup> फिर रूबेन की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति शदेऊर का पुत्र एलीसूर था।

**Numbers 10:19**

<sup>19</sup> और शिमोनियों के गोत्र का सेनापति सूरीशदै का पुत्र शलूमीएल था।

**Numbers 10:20**

<sup>20</sup> और गादियों के गोत्र का सेनापति दूएल का पुत्र एल्यासाप था।

**Numbers 10:21**

<sup>21</sup> तब कहातियों ने पवित्र वस्तुओं को उठाए हुए प्रस्थान किया, और उनके पहुँचने तक गेशोनियों और मरारियों ने निवास के तम्बू को खड़ा कर दिया।

**Numbers 10:22**

<sup>22</sup> फिर एप्रैमियों की छावनी के झण्डे का कूच हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अमीहूद का पुत्र एलीशामा था।

**Numbers 10:23**

<sup>23</sup> और मनश्शेषियों के गोत्र का सेनापति पदासूर का पुत्र गम्लीएल था।

**Numbers 10:24**

<sup>24</sup> और बिन्यामीनियों के गोत्र का सेनापति गिदोनी का पुत्र अबीदान था।

**Numbers 10:25**

<sup>25</sup> फिर दानियों की छावनी जो सब छावनियों के पीछे थी, उसके झण्डे का प्रस्थान हुआ, और वे भी दल बनाकर चले; और उनका सेनापति अम्मीशदै का पुत्र अहीएजेर था।

**Numbers 10:26**

<sup>26</sup> और आशेरियों के गोत्र का सेनापति ओक्रान का पुत्र पगीएल था।

**Numbers 10:27**

<sup>27</sup> और नप्तालियों के गोत्र का सेनापति एनान का पुत्र अहीरा था।

**Numbers 10:28**

<sup>28</sup> इस्साएली इसी प्रकार अपने-अपने दलों के अनुसार प्रस्थान करते, और आगे बढ़ा करते थे।

**Numbers 10:29**

<sup>29</sup> मूसा ने अपने ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र होबाब से कहा, “हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने कहा है, ‘मैं उसे तुम को द्वैँगा’; इसलिए तू भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इस्साएल के विषय में भला ही कहा है।”

**Numbers 10:30**

<sup>30</sup> होबाब ने उसे उत्तर दिया, “मैं नहीं जाऊँगा; मैं अपने देश और कुटुम्बियों में लौट जाऊँगा।”

**Numbers 10:31**

<sup>31</sup> फिर मूसा ने कहा, “हमको न छोड़, क्योंकि जंगल में कहाँ-कहाँ डेरा खड़ा करना चाहिये, यह तुझे ही मालूम है, तू हमारे लिए आँखों का काम करना।

**Numbers 10:32**

<sup>32</sup> और यदि तू हमारे संग चले, तो निश्चय जो भलाई यहोवा हम से करेगा उसी के अनुसार हम भी तुझ से वैसा ही करेंगे।”

**Numbers 10:33**

<sup>33</sup> फिर इस्साएलियों ने यहोवा के पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन की यात्रा की; और उन तीनों दिनों के मार्ग में यहोवा की वाचा का सन्दूक उनके लिये विश्राम का स्थान ढूँढ़ता हुआ उनके आगे-आगे चलता रहा।

**Numbers 10:34**

<sup>34</sup> और जब वे छावनी के स्थान से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का बादल उनके ऊपर छाया रहता था।

**Numbers 10:35**

<sup>35</sup> और जब जब सन्दूक का प्रस्थान होता था तब-तब मूसा यह कहा करता था, “हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर-बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ।”

**Numbers 10:36**

<sup>36</sup> और जब जब वह ठहर जाता था तब-तब मूसा कहा करता था, “हे यहोवा, हजारों-हजार इस्साएलियों में लौटकर आ जा।”

**Numbers 11:1**

<sup>1</sup> फिर वे लोग बुङ्बुड़ाने और यहोवा के सुनते बुरा कहने लगे; अतः यहोवा ने सुना, और उसका कोप भड़क उठा, और यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी, और छावनी के एक किनारे से भस्म करने लगी।

**Numbers 11:2**

<sup>2</sup> तब लोग मूसा के पास आकर चिल्लाएँ; और मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, तब वह आग बुझ गई,

**Numbers 11:3**

<sup>3</sup> और उस स्थान का नाम तबेरा पड़ा, क्योंकि यहोवा की आग उनके मध्य में जल उठी थी।

**Numbers 11:4**

<sup>4</sup> फिर जो मिली-जुली भीड़ उनके साथ थी, वह बेहतर भोजन की लालसा करने लगी; और फिर इसाएली भी रोने और कहने लगे, “हमें माँस खाने को कौन देगा?

**Numbers 11:5**

<sup>5</sup> हमें वे मछलियाँ स्मरण हैं जो हम मिस्र में सेंत-मेंत खाया करते थे, और वे खीरे, और खरबूजे, और गन्दने, और प्याज, और लहसुन भी;

**Numbers 11:6**

<sup>6</sup> परन्तु अब हमारा जी घबरा गया है, यहाँ पर इस मन्त्रा को छोड़ और कुछ भी देख नहीं पड़ता।”

**Numbers 11:7**

<sup>7</sup> मन्त्रा तो धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती के समान था।

**Numbers 11:8**

<sup>8</sup> लोग इधर-उधर जाकर उसे बटोरते, और चक्की में पीसते या ओखली में कूटते थे, फिर तसलै में पकाते, और उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के समान था।

**Numbers 11:9**

<sup>9</sup> और रात को छावनी में ओस पड़ती थी तब उसके साथ मन्त्रा भी गिरता था।

**Numbers 11:10**

<sup>10</sup> और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने-अपने डेरे के द्वार पर रोते सुना; और यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का, और मूसा को भी उनका बुढ़बुड़ाना बुरा लगा।

**Numbers 11:11**

<sup>11</sup> तब मूसा ने यहोवा से कहा, ‘तू अपने दास से यह बुरा व्यवहार क्यों करता है? और क्या कारण है कि मैंने तेरी वृष्टि में अनुग्रह नहीं पाया, कि तूने इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला है?

**Numbers 11:12**

<sup>12</sup> क्या ये सब लोग मेरी ही कोख में पड़े थे? क्या मैं ही ने उनको उत्पन्न किया, जो तू मुझसे कहता है, कि जैसे पिता दूध पीते बालक को अपनी गोद में उठाए-उठाए फिरता है, वैसे ही मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाकर उस देश में ले जाऊँ, जिसके देने की शपथ तूने उनके पूर्वजों से खारी है?

**Numbers 11:13**

<sup>13</sup> मुझे इतना माँस कहाँ से मिले कि इन सब लोगों को ढूँ? ये तो यह कह-कहकर मेरे पास रो रहे हैं, कि तू हमें माँस खाने को दे।

**Numbers 11:14**

<sup>14</sup> मैं अकेला इन सब लोगों का भार नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी शक्ति के बाहर है।

**Numbers 11:15**

<sup>15</sup> और यदि तुझे मेरे साथ यही व्यवहार करना है, तो मुझ पर तेरा इतना अनुग्रह हो, कि तू मेरे प्राण एकदम ले ले, जिससे मैं अपनी दुर्दशा न देखने पाऊँ।”

**Numbers 11:16**

<sup>16</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “इसाएली पुरनियों में से सत्तर ऐसे पुरुष मेरे पास इकट्ठे कर, जिनको तू जानता है कि वे प्रजा के

पुरनिये और उनके सरदार हैं और मिलापवाले तम्बू के पास ले आ, कि वे तेरे साथ यहाँ खड़े हों।

### **Numbers 11:17**

<sup>17</sup> तब मैं उतरकर तुझ से वहाँ बातें करूँगा; और जो आत्मा तुझ में है उसमें से कुछ लेकर उनमें समवाऊँगा; और वे इन लोगों का भार तेरे संग उठाए रहेंगे, और तुझे उसको अकेले उठाना न पड़ेगा।

### **Numbers 11:18**

<sup>18</sup> और लोगों से कह, 'कल के लिये अपने को पवित्र करो, तब तुम्हें माँस खाने को मिलेगा; क्योंकि तुम यहोवा के सुनते हुए यह कह-कहकर रोए हो, कि हमें माँस खाने को कौन देगा? हम मिस्त्र ही में भले थे। इसलिए यहोवा तुम को माँस खाने को देगा, और तुम खाओगे।

### **Numbers 11:19**

<sup>19</sup> फिर तुम एक दिन, या दो, या पाँच, या दस, या बीस दिन ही नहीं,

### **Numbers 11:20**

<sup>20</sup> परन्तु महीने भर उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथनों से निकलने न लगे और तुम को उससे घुणा न हो जाए, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा को जो तुम्हारे मध्य मैं है तुच्छ जाना है, और उसके सामने यह कहकर रोए हो कि हम मिस्त्र से क्यों निकल आए?"

### **Numbers 11:21**

<sup>21</sup> फिर मूसा ने कहा, "जिन लोगों के बीच मैं हूँ उनमें से छः लाख तो यादे ही हैं; और तूने कहा है कि मैं उन्हें इतना माँस द्वांगा, कि वे महीने भर उसे खाते ही रहेंगे।

### **Numbers 11:22**

<sup>22</sup> क्या वे सब भेड़-बकरी गाय-बैल उनके लिये मारे जाएँ कि उनको माँस मिले? या क्या समुद्र की सब मछलियाँ उनके लिये इकट्ठी की जाएँ, कि उनको माँस मिले?"

### **Numbers 11:23**

<sup>23</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, "क्या यहोवा का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देखोगा कि मेरा वचन जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है कि नहीं।"

### **Numbers 11:24**

<sup>24</sup> तब मूसा ने बाहर जाकर प्रजा के लोगों को यहोवा की बातें कह सुनाई; और उनके पुरनियों में से सत्तर पुरुष इकट्ठा करके तम्बू के चारों ओर खड़े किए।

### **Numbers 11:25**

<sup>25</sup> तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा उसमें था उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उनमें आया तब वे भविष्यद्वाणी करने लगे। परन्तु फिर और कभी न की।

### **Numbers 11:26**

<sup>26</sup> परन्तु दो मनष्य छावनी में रह गए थे, जिसमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी आत्मा आया; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में भविष्यद्वाणी करने लगे।

### **Numbers 11:27**

<sup>27</sup> तब किसी जवान ने दौड़कर मूसा को बताया, कि एलदाद और मेदाद छावनी में भविष्यद्वाणी कर रहे हैं।

### **Numbers 11:28**

<sup>28</sup> तब नून का पुत्र यहोशू जो मूसा का टहलुआ और उसके चुने हुए वीरों में से था, उसने मूसा से कहा, "हे मेरे स्वामी मूसा, उनको रोक दे।"

### **Numbers 11:29**

<sup>29</sup> मूसा ने उससे कहा, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग भविष्यद्वक्ता होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभी में समवा देता!"

**Numbers 11:30**

<sup>30</sup> तब फिर मूसा इस्लाएल के पुरनियों समेत छावनी में चला गया।

**Numbers 11:31**

<sup>31</sup> तब यहोवा की ओर से एक बड़ी आँधी आई, और वह समुद्र से बटेरें उड़ाकर छावनी पर और उसके चारों ओर इतनी ले आई, कि वे इधर-उधर एक दिन के मार्ग तक भूमि पर दो हाथ के लगभग ऊँचे तक छा गए।

**Numbers 11:32**

<sup>32</sup> और लोगों ने उठकर उस दिन भर और रात भर, और दूसरे दिन भी दिन भर बटेरों को बटोरते रहे; जिसने कम से कम बटोरा उसने दस होमेर बटोरा; और उन्होंने उन्हें छावनी के चारों ओर फैला दिया।

**Numbers 11:33**

<sup>33</sup> माँस उनके मुँह ही में था, और वे उसे खाने न पाए थे कि यहोवा का कोप उन पर भड़क उठा, और उसने उनको बहुत बड़ी मार से मारा।

**Numbers 11:34**

<sup>34</sup> और उस स्थान का नाम किब्रोतहत्तावा पड़ा, क्योंकि जिन लोगों ने माँस की लालसा की थी उनको वहाँ मिट्टी दी गई।

**Numbers 11:35**

<sup>35</sup> फिर इस्लाएली किब्रोतहत्तावा से प्रस्थान करके हसेरोत में पहुँचे, और वहाँ रहे।

**Numbers 12:1**

<sup>1</sup> मूसा ने एक कूशी स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। इसलिए मिर्याम और हारून उसकी उस विवाहिता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे;

**Numbers 12:2**

<sup>2</sup> उन्होंने कहा, “क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं की?” उनकी यह बात यहोवा ने सुनी।

**Numbers 12:3**

<sup>3</sup> मूसा तो पृथ्वी भर के रहनेवाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।

**Numbers 12:4**

<sup>4</sup> इसलिए यहोवा ने एकाएक मूसा और हारून और मिर्याम से कहा, “तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास निकल आओ।” तब वे तीनों निकल आए।

**Numbers 12:5**

<sup>5</sup> तब यहोवा ने बादल के खम्मे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मिर्याम को बुलाया; अतः वे दोनों उसके पास निकल आए।

**Numbers 12:6**

<sup>6</sup> तब यहोवा ने कहा, “मेरी बातें सुनो यदि तुम मैं कोई भविष्यद्वक्ता हो, तो उस पर मैं यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आपको प्रगट करूँगा, या स्वप्न में उससे बातें करूँगा।

**Numbers 12:7**

<sup>7</sup> परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब घराने में विश्वासयोग्य है।

**Numbers 12:8**

<sup>8</sup> उससे मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने-सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। इसलिए तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे?”

**Numbers 12:9**

<sup>9</sup> तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया;

**Numbers 12:10**

<sup>10</sup> तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मिर्याम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मिर्याम की ओर दृष्टि की, और देखा कि वह कोढ़िन हो गई है।

**Numbers 12:11**

<sup>11</sup> तब हारून मूसा से कहने लगा, “हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन् पाप भी किया, यह पाप हम पर न लगने दे।

**Numbers 12:12**

<sup>12</sup> और मिर्याम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ के पेट से निकलते ही अधगली हो।”

**Numbers 12:13**

<sup>13</sup> अतः मूसा ने यह कहकर यहोवा की दुहाई दी, “हे परमेश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर।”

**Numbers 12:14**

<sup>14</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “यदि उसके पिता ने उसके मुँह पर थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह लज्जित न रहती? इसलिए वह सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रहे, उसके बाद वह फिर भीतर आने पाए।”

**Numbers 12:15**

<sup>15</sup> अतः मिर्याम सात दिन तक छावनी से बाहर बन्द रही, और जब तक मिर्याम फिर आने न पाई तब तक लोगों ने प्रस्थान न किया।

**Numbers 12:16**

<sup>16</sup> उसके बाद उन्होंने हस्तरोत से प्रस्थान करके पारान नामक जंगल में अपने डेरे खड़े किए।

**Numbers 13:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 13:2**

<sup>2</sup> “कनान देश जिसे मैं इसाएलियों को देता हूँ, उसका भेद लेने के लिये पुरुषों को भेज; वे उनके पितरों के प्रति गोत्र के एक-एक प्रधान पुरुष हों।”

**Numbers 13:3**

<sup>3</sup> यहोवा से यह आज्ञा पाकर मूसा ने ऐसे पुरुषों को पारान जंगल से भेज दिया, जो सब के सब इसाएलियों के प्रधान थे।

**Numbers 13:4**

<sup>4</sup> उनके नाम ये हैं रूबेन के गोत्र में से जक्कूर का पुत्र शामू;

**Numbers 13:5**

<sup>5</sup> शिमोन के गोत्र में से होरी का पुत्र शापात;

**Numbers 13:6**

<sup>6</sup> यहूदा के गोत्र में से यपुत्रे का पुत्र कालेब;

**Numbers 13:7**

<sup>7</sup> इस्साकार के गोत्र में से यूसुफ का पुत्र यिगाल;

**Numbers 13:8**

<sup>8</sup> एप्रैम के गोत्र में से नून का पुत्र होशे;

**Numbers 13:9**

<sup>9</sup> बिन्यामीन के गोत्र में से रापू का पुत्र पलती;

**Numbers 13:10**

<sup>10</sup> जबूलून के गोत्र में से सोदी का पुत्र गद्दीएल;

**Numbers 13:11**

<sup>11</sup> यूसुफ वंशियों में, मनश्शे के गोत्र में से सूसी का पुत्र गद्दी;

**Numbers 13:12**

<sup>12</sup> दान के गोत्र में से गमल्ली का पुत्र अम्मीएल;

**Numbers 13:13**

<sup>13</sup> आशोर के गोत्र में से मीकाएल का पुत्र सतूर;

**Numbers 13:14**

<sup>14</sup> नप्ताली के गोत्र में से वोस्सी का पुत्र नहूबी;

**Numbers 13:15**

<sup>15</sup> गाद के गोत्र में से माकी का पुत्र गूएल।

**Numbers 13:16**

<sup>16</sup> जिन पुरुषों को मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा था उनके नाम ये ही हैं। और नून के पुत्र होशो का नाम मूसा ने यहोशू रखा।

**Numbers 13:17**

<sup>17</sup> उनको कनान देश के भेद लेने को भेजते समय मूसा ने कहा, ‘इधर से, अर्थात् दक्षिण देश होकर जाओ,

**Numbers 13:18**

<sup>18</sup> और पहाड़ी देश में जाकर उस देश को देख लो कि कैसा है, और उसमें बसे हुए लोगों को भी देखो कि वे बलवान हैं या निर्बल, थोड़े हैं या बहुत,

**Numbers 13:19**

<sup>19</sup> और जिस देश में वे बसे हुए हैं वह कैसा है, अच्छा या बुरा, और वे कैसी-कैसी बस्तियों में बसे हुए हैं, और तम्बुओं में रहते हैं या गढ़ अथवा किलों में रहते हैं,

**Numbers 13:20**

<sup>20</sup> और वह देश कैसा है, उपजाऊ है या बंजर है, और उसमें वृक्ष हैं या नहीं। और तुम हियाव बाँधे चलो, और उस देश की उपज में से कुछ लेते भी आना।” वह समय पहली पक्की दाखियों का था।

**Numbers 13:21**

<sup>21</sup> इसलिए वे चल दिए, और सीन नामक जंगल से ले रहोब तक, जो हमात के मार्ग में है, सारे देश को देख-भाल कर उसका भेद लिया।

**Numbers 13:22**

<sup>22</sup> वे दक्षिण देश होकर चले, और हेब्रोन तक गए; वहाँ अहीमन, शेशै, और तल्मै नामक अनाकवंशी रहते थे। हेब्रोन मिस्र के सोअन से सात वर्ष पहले बसाया गया था।

**Numbers 13:23**

<sup>23</sup> तब वे एशकोल नामक नाले तक गए, और वहाँ से एक डाली दाखियों के गुच्छे समेत तोड़ ली, और दो मनुष्य उसे एक लाठी पर लटकाए हुए उठा ले चले गए; और वे अनारों और अंजीरों में से भी कुछ कुछ ले आए।

**Numbers 13:24**

<sup>24</sup> इस्माएली वहाँ से जो दाखियों का गुच्छा तोड़ ले आए थे, इस कारण उस स्थान का नाम एशकोल नाला रखा गया।

**Numbers 13:25**

<sup>25</sup> चालीस दिन के बाद वे उस देश का भेद लेकर लौट आए।

**Numbers 13:26**

<sup>26</sup> और पारान जंगल के कादेश नामक स्थान में मूसा और हारून और इस्माएलियों की सारी मण्डली के पास पहुँचे; और उनको और सारी मण्डली को सन्देशा दिया, और उस देश के फल उनको दिखाए।

**Numbers 13:27**

<sup>27</sup> उन्होंने मूसा से यह कहकर वर्णन किया, “जिस देश में तूने हमको भेजा था उसमें हम गए; उसमें सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और उसकी उपज में से यही है।

**Numbers 13:28**

<sup>28</sup> परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं, और उसके नगर गढ़वाले हैं और बहुत बड़े हैं; और फिर हमने वहाँ अनाकवंशियों को भी देखा।

**Numbers 13:29**

<sup>29</sup> दक्षिण देश में तो अमालेकी बसे हुए हैं; और पहाड़ी देश में हिती, यबसी, और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे-किनारे और यरदन नदी के तट पर कनानी बसे हुए हैं।”

**Numbers 13:30**

<sup>30</sup> पर कालेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, “हम अभी चढ़कर उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसन्देह हम में ऐसा करने की शक्ति है।”

**Numbers 13:31**

<sup>31</sup> पर जो पुरुष उसके संग गए थे उन्होंने कहा, “उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान हैं।”

**Numbers 13:32**

<sup>32</sup> और उन्होंने इसाएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कहकर निन्दा भी की, “वह देश जिसका भेद लेने को हम गये थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है; और जितने पुरुष हमने उसमें देखे वे सब के सब बड़े डील-डौल के हैं।”

**Numbers 13:33**

<sup>33</sup> फिर हमने वहाँ नपीलों को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में तो उनके सामने टिझु के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।”

**Numbers 14:1**

<sup>1</sup> तब सारी मण्डली चिल्ला उठी; और रात भर वे लोग रोते ही रहे।

**Numbers 14:2**

<sup>2</sup> और सब इसाएली मूसा और हारून पर बुड़बुड़ाने लगे; और सारी मण्डली उससे कहने लगी, “भला होता कि हम मिस्र ही में मर जाते! या इस जंगल ही में मर जाते!

**Numbers 14:3**

<sup>3</sup> यहोवा हमको उस देश में ले जाकर क्यों तलवार से मरवाना चाहता है? हमारी स्त्रियाँ और बाल-बच्चे तो लूट में चले जाएँगे; क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ?”

**Numbers 14:4**

<sup>4</sup> फिर वे आपस में कहने लगे, “आओ, हम किसी को अपना प्रधान बना लें, और मिस्र को लौट चलें।”

**Numbers 14:5**

<sup>5</sup> तब मूसा और हारून इसाएलियों की सारी मण्डली के सामने मुँह के बल गिरे।

**Numbers 14:6**

<sup>6</sup> और नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब, जो देश के भेद लेनेवालों में से थे, अपने-अपने वस्त्र फाड़कर,

**Numbers 14:7**

<sup>7</sup> इसाएलियों की सारी मण्डली से कहने लगे, “जिस देश का भेद लेने को हम इधर-उधर घूमकर आए हैं, वह अत्यन्त उत्तम देश है।”

**Numbers 14:8**

<sup>8</sup> यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो हमको उस देश में, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, पहुँचाकर उसे हमें दे देगा।

**Numbers 14:9**

<sup>9</sup> केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो; और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंगे; छाया उनके ऊपर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है; उनसे न डरो।”

**Numbers 14:10**

<sup>10</sup> तब सारी मण्डली चिल्ला उठी, कि इनको पथरवाह करो। तब यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू में सब इस्साएलियों पर प्रकाशमान हुआ।

**Numbers 14:11**

<sup>11</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “ये लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्वर्यकर्मों को देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे?

**Numbers 14:12**

<sup>12</sup> मैं उन्हें मरी से मारँगा, और उनके निज भाग से उन्हें निकाल ढूँगा, और तुझ से एक जाति उत्पन्न करँगा जो उनसे बड़ी और बलवन्त होगी।”

**Numbers 14:13**

<sup>13</sup> मूसा ने यहोवा से कहा, “तब तो मिस्री जिनके मध्य में से तू अपनी सामर्थ्य दिखाकर उन लोगों को निकाल ले आया है यह सुनेंगे,

**Numbers 14:14**

<sup>14</sup> और इस देश के निवासियों से कहेंगे। उन्होंने तो यह सुना है कि तू जो यहोवा है इन लोगों के मध्य में रहता है; और प्रत्यक्ष दिखाई देता है, और तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन को बादल के खम्भे में, और रात को अग्नि के खम्भे में होकर इनके आगे-आगे चला करता है।

**Numbers 14:15**

<sup>15</sup> इसलिए यदि तू इन लोगों को एक ही बार में मार डाले, तो जिन जातियों ने तेरी कीर्ति सुनी है वे कहेंगी,

**Numbers 14:16**

<sup>16</sup> कि यहोवा उन लोगों को उस देश में जिसे उसने उन्हें देने की शपथ खाई थी, पहुँचा न सका, इस कारण उसने उन्हें जंगल में घात कर डाला है।

**Numbers 14:17**

<sup>17</sup> इसलिए अब प्रभु की सामर्थ्य की महिमा तेरे कहने के अनुसार हो,

**Numbers 14:18**

<sup>18</sup> कि यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्जों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है।

**Numbers 14:19**

<sup>19</sup> अब इन लोगों के अधर्म को अपनी बड़ी करुणा के अनुसार, और जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक क्षमा करता रहा है वैसे ही अब भी क्षमा कर दे।”

**Numbers 14:20**

<sup>20</sup> यहोवा ने कहा, ‘तेरी विनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूँ;

**Numbers 14:21**

<sup>21</sup> परन्तु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी;

**Numbers 14:22**

<sup>22</sup> उन सब लोगों ने जिन्होंने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्वर्यकर्मों को देखने पर भी दस बार मेरी परीक्षा की, और मेरी बातें नहीं मानी,

**Numbers 14:23**

<sup>23</sup> इसलिए जिस देश के विषय मैंने उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएँगे; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उनमें से कोई भी उसे देखने न पाएगा।

**Numbers 14:24**

<sup>24</sup> परन्तु इस कारण से कि मेरे दास कालेब के साथ और ही आत्मा है, और उसने पूरी रीति से मेरा अनुकरण किया है, मैं उसको उस देश में जिसमें वह हो आया है पहुँचाऊँगा, और उसका वंश उस देश का अधिकारी होगा।

**Numbers 14:25**

<sup>25</sup> अमालेकी और कनानी लोग तराई में रहते हैं, इसलिए कल तुम घूमकर प्रस्थान करो, और लाल समुद्र के मार्ग से जंगल में जाओ।”

**Numbers 14:26**

<sup>26</sup> फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 14:27**

<sup>27</sup> “यह बुरी मण्डली मुझ पर बुड़बुड़ाती रहती है, उसको मैं कब तक सहता रहूँ? इसाएली जो मुझ पर बुड़बुड़ाते रहते हैं, उनका यह बुड़बुड़ाना मैंने तो सुना है।

**Numbers 14:28**

<sup>28</sup> इसलिए उनसे कह कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की शपथ जो बातें तुम ने मेरे सुनते कही हैं, निःसन्देह मैं उसी के अनुसार तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा।

**Numbers 14:29**

<sup>29</sup> तुम्हारे शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे; और तुम सब में से बीस वर्ष की या उससे अधिक आयु के जितने गिने गए थे, और मुझ पर बुड़बुड़ाते थे,

**Numbers 14:30**

<sup>30</sup> उसमें से यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैंने शपथ खाई है कि तुम को उसमें बसाऊँगा।

**Numbers 14:31**

<sup>31</sup> परन्तु तुम्हारे बाल-बच्चे जिनके विषय तुम ने कहा है, कि वे लूट में चले जाएँगे, उनको मैं उस देश में पहुँचा दूँगा; और वे उस देश को जान लेंगे जिसको तुम ने तुच्छ जाना है।

**Numbers 14:32**

<sup>32</sup> परन्तु तुम लोगों के शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे।

**Numbers 14:33**

<sup>33</sup> और जब तक तुम्हारे शव जंगल में न गल जाएँ तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे बाल-बच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए भटकते रहेंगे।

**Numbers 14:34**

<sup>34</sup> जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे, अर्थात् चालीस दिन उनकी गिनती के अनुसार, एक दिन के बदले एक वर्ष, अर्थात् चालीस वर्ष तक तुम अपने अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है।

**Numbers 14:35**

<sup>35</sup> मैं यहोवा यह कह चुका हूँ, कि इस बुरी मण्डली के लोग जो मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं इसी जंगल में मर मिटेंगे; और निःसन्देह ऐसा ही करूँगा भी।”

**Numbers 14:36**

<sup>36</sup> तब जिन पुरुषों को मूसा ने उस देश के भेद लेने के लिये भेजा था, और उन्होंने लौटकर उस देश की नामधारी करके सारी मण्डली को कुड़कुड़ाने के लिये उभारा था,

**Numbers 14:37**

<sup>37</sup> उस देश की वे नामधराई करनेवाले पुरुष यहोवा के मारने से उसके सामने मर गये।

**Numbers 14:38**

<sup>38</sup> परन्तु देश के भेद लेनेवाले पुरुषों में से नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब दोनों जीवित रहे।

**Numbers 14:39**

<sup>39</sup> तब मूसा ने ये बातें सब इस्साएलियों को कह सुनाई और वे बहुत विलाप करने लगे।

**Numbers 14:40**

<sup>40</sup> और वे सर्वेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, “हमने पाप किया है; परन्तु अब तैयार हैं, और उस स्थान को जाएँगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था।”

**Numbers 14:41**

<sup>41</sup> तब मूसा ने कहा, “तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? यह सफल न होगा।

**Numbers 14:42**

<sup>42</sup> यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है, मत चढ़ो, नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे।

**Numbers 14:43**

<sup>43</sup> वहाँ तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो, इसलिए वह तुम्हारे संग नहीं रहेगा।”

**Numbers 14:44**

<sup>44</sup> परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे।

**Numbers 14:45**

<sup>45</sup> तब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए।

**Numbers 15:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 15:2**

<sup>2</sup> “इस्साएलियों से कह कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुँचो, जो मैं तुम्हें देता हूँ,

**Numbers 15:3**

<sup>3</sup> और यहोवा के लिये क्या होमबलि, क्या मेलबलि, कोई हव्य चढ़ाओं, चाहे वह विशेष मन्त्र पूरी करने का हो चाहे स्कैच्याबलि का हो, चाहे तुम्हारे नियत समयों में का हो, या वह चाहे गाय-बैल चाहे भेड़-बकरियों में का हो, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगन्ध हो;

**Numbers 15:4**

<sup>4</sup> तब उस होमबलि या मेलबलि के संग भेड़ के बच्चे यहोवा के लिये चौथाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना,

**Numbers 15:5**

<sup>5</sup> और चौथाई हीन दाखमधु अर्ध करके देना।

**Numbers 15:6**

<sup>6</sup> और मेड़े के बलि के साथ तिहाई हीन तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाना;

**Numbers 15:7**

<sup>7</sup> और उसका अर्ध यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला तिहाई हीन दाखमधु देना।

**Numbers 15:8**

<sup>8</sup> और जब तू यहोवा को होमबलि या किसी विशेष मन्त्रत पूरी करने के लिये बलि या मेलबलि करके बछड़ा चढ़ाए,

**Numbers 15:9**

<sup>9</sup> तब बछड़े का चढ़ानेवाला उसके संग आधा हीन तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा अन्नबलि करके चढ़ाए।

**Numbers 15:10**

<sup>10</sup> और उसका अर्ध आधा हीन दाखमधु चढ़ाए, वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य होगा।

**Numbers 15:11**

<sup>11</sup> “एक-एक बछड़े, या मेढ़े, या भेड़ के बच्चे, या बकरी के बच्चे के साथ इसी रीति चढ़ावा चढ़ाया जाए।

**Numbers 15:12**

<sup>12</sup> तुम्हारे बलिपशुओं की जितनी गिनती हो, उसी गिनती के अनुसार एक-एक के साथ ऐसा ही किया करना।

**Numbers 15:13**

<sup>13</sup> जितने देशी हों वे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाते समय ये काम इसी रीति से किया करें।

**Numbers 15:14**

<sup>14</sup> “और यदि कोई परदेशी तुम्हारे संग रहता हो, या तुम्हारी किसी पीढ़ी में तुम्हारे बीच कोई रहनेवाला हो, और वह यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य चढ़ाना चाहे, तो जिस प्रकार तुम करोगे उसी प्रकार वह भी करे।

**Numbers 15:15**

<sup>15</sup> मण्डली के लिये, अर्थात् तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये एक ही विधि हो; तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में यह सदा की विधि ठहरे, कि जैसे तुम हो वैसे ही परदेशी भी यहोवा के लिये ठहरता है।

**Numbers 15:16**

<sup>16</sup> तुम्हारे और तुम्हारे संग रहनेवाले परदेशियों के लिये एक ही व्यवस्था और एक ही नियम है।”

**Numbers 15:17**

<sup>17</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 15:18**

<sup>18</sup> “इसाएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि जब तुम उस देश में पहुँचो जहाँ मैं तुम को लिये जाता हूँ,

**Numbers 15:19**

<sup>19</sup> और उस देश की उपज का अन्न खाओ, तब यहोवा के लिये उठाई हुई भेंट चढ़ाया करो।

**Numbers 15:20**

<sup>20</sup> अपने पहले गुँधे हुए आटे की एक पपड़ी उठाई हुई भेंट करके यहोवा के लिये चढ़ाना; जैसे तुम खलिहान में से उठाई हुई भेंट चढ़ाओगे वैसे ही उसको भी उठाया करना।

**Numbers 15:21**

<sup>21</sup> अपनी पीढ़ी-पीढ़ी में अपने पहले गुँधे हुए आटे में से यहोवा को उठाई हुई भेंट दिया करना।

**Numbers 15:22**

<sup>22</sup> “फिर जब तुम इन सब आज्ञाओं में से जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया है किसी का उल्लंघन भूल से करो,

**Numbers 15:23**

<sup>23</sup> अर्थात् जिस दिन से यहोवा आज्ञा देने लगा, और आगे की तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में उस दिन से उसने जितनी आज्ञाएँ मूसा के द्वारा दी हैं,

**Numbers 15:24**

<sup>24</sup> उसमें यदि भूल से किया हुआ पाप मण्डली के बिना जाने हुआ हो, तो सारी मण्डली यहोवा को सुखदायक सुगम्भ देनेवाला होमबलि करके एक बछड़ा, और उसके संग नियम के अनुसार उसका अन्नबलि और अर्ध चढ़ाए, और पापबलि करके एक बकरा चढ़ाए।

**Numbers 15:25**

<sup>25</sup> तब याजक इसाएलियों की सारी मण्डली के लिये प्रायश्चित्त करे, और उनकी क्षमा की जाएगी; क्योंकि उनका पाप भूल से हुआ, और उन्होंने अपनी भूल के लिये अपना चढ़ावा, अर्थात् यहोवा के लिये हव्य और अपना पापबलि उसके सामने चढ़ाया।

**Numbers 15:26**

<sup>26</sup> इसलिए इसाएलियों की सारी मण्डली का, और उसके बीच रहनेवाले परदेशी का भी, वह पाप क्षमा किया जाएगा, क्योंकि वह सब लोगों के अनजाने में हुआ।

**Numbers 15:27**

<sup>27</sup> फिर यदि कोई मनुष्य भूल से पाप करे, तो वह एक वर्ष की एक बकरी पापबलि करके चढ़ाए।

**Numbers 15:28**

<sup>28</sup> और याजक भूल से पाप करनेवाले मनुष्य के लिये यहोवा के सामने प्रायश्चित्त करे; अतः इस प्रायश्चित्त के कारण उसका वह पाप क्षमा किया जाएगा।

**Numbers 15:29**

<sup>29</sup> जो कोई भूल से कुछ करे, चाहे वह इसाएलियों में देशी हो, चाहे तुम्हरे बीच परदेशी होकर रहता हो, सब के लिये तुम्हारी एक ही व्यवस्था हो।

**Numbers 15:30**

<sup>30</sup> “परन्तु क्या देशी क्या परदेशी, जो मनुष्य ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करनेवाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए।

**Numbers 15:31**

<sup>31</sup> वह जो यहोवा का वचन तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालनेवाला है, इसलिए वह मनुष्य निश्चय नाश किया जाए; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा।”

**Numbers 15:32**

<sup>32</sup> जब इसाएली जंगल में रहते थे, उन दिनों एक मनुष्य विश्राम के दिन लकड़ी बीनता हुआ मिला।

**Numbers 15:33**

<sup>33</sup> और जिनको वह लकड़ी बीनता हुआ मिला, वे उसको मूसा और हारून, और सारी मण्डली के पास ले गए।

**Numbers 15:34**

<sup>34</sup> उन्होंने उसको हवालात में रखा, क्योंकि ऐसे मनुष्य से क्या करना चाहिये वह प्रगट नहीं किया गया था।

**Numbers 15:35**

<sup>35</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “वह मनुष्य निश्चय मार डाला जाए; सारी मण्डली के लोग छावनी के बाहर उस पर पथरवाह करें।”

**Numbers 15:36**

<sup>36</sup> इस प्रकार जैसा यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी उसी के अनुसार सारी मण्डली के लोगों ने उसको छावनी से बाहर ले जाकर पथरवाह किया, और वह मर गया।

**Numbers 15:37**

<sup>37</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 15:38**

<sup>38</sup> “इसाएलियों से कह, कि अपनी पीढ़ी-पीढ़ी में अपने वस्त्रों के छोर पर झालर लगाया करना, और एक-एक छोर की झालर पर एक नीला फीता लगाया करना;

## Numbers 15:39

<sup>39</sup> और वह तुम्हारे लिये ऐसी झालर ठहरे, जिससे जब जब तुम उसे देखो तब-तब यहोवा की सारी आज्ञाएँ तुम को स्मरण आ जाएँ; और तुम उनका पालन करो, और तुम अपने-अपने मन और अपनी-अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो जैसे करते आए हो।

## Numbers 15:40

<sup>40</sup> परन्तु तुम यहोवा की सब आज्ञाओं को स्मरण करके उनका पालन करो, और अपने परमेश्वर के लिये पवित्र बनो।

## Numbers 15:41

<sup>41</sup> मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल ले आया कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

## Numbers 16:1

<sup>1</sup> कोरह जो लेवी का परपोता, कहात का पोता, और पिसहार का पुत्र था, वह एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम, और पेलेत के पुत्र ओन,

## Numbers 16:2

<sup>2</sup> इन तीनों रूबेनियों से मिलकर मण्डली के ढाई सौ प्रधान, जो सभासद और नामी थे, उनको संग लिया;

## Numbers 16:3

<sup>3</sup> और वे मूसा और हारून के विरुद्ध उठ खड़े हुए, और उनसे कहने लगे, "तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक-एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिए तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पदवाले क्यों बन बैठे हो?"

## Numbers 16:4

<sup>4</sup> यह सुनकर मूसा अपने मुँह के बल गिरा;

## Numbers 16:5

<sup>5</sup> फिर उसने कोरह और उसकी सारी मण्डली से कहा, "सबेरे को यहोवा दिखा देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा।

## Numbers 16:6

<sup>6</sup> इसलिए, हे कोरह, तुम अपनी सारी मण्डली समेत यह करो, अर्थात् अपना-अपना धूपदान ठीक करो;

## Numbers 16:7

<sup>7</sup> और कल उनमें आग रखकर यहोवा के सामने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले वही पवित्र ठहरेगा। हे लेवियों, तुम भी बड़ी-बड़ी बातें करते हो, अब बस करो।"

## Numbers 16:8

<sup>8</sup> फिर मूसा ने कोरह से कहा, "हे लेवियों, सुनो,

## Numbers 16:9

<sup>9</sup> क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है कि इसाएल के परमेश्वर ने तुम को इसाएल की मण्डली से अलग करके अपने निवास की सेवकाई करने, और मण्डली के सामने खड़े होकर उसकी भी सेवा ठहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है;

## Numbers 16:10

<sup>10</sup> और तुझे और तेरे सब लेवी भाइयों को भी अपने समीप बुला लिया है? फिर भी तुम याजकपद के भी खोजी हो?

## Numbers 16:11

<sup>11</sup> और इसी कारण तूने अपनी सारी मण्डली को यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी किया है; हारून कौन है कि तुम उस पर बुढ़बुड़ाते हो?"

**Numbers 16:12**

<sup>12</sup> फिर मूसा ने एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम को बुलवा भेजा; परन्तु उन्होंने कहा, “हम तेरे पास नहीं आएँगे।

**Numbers 16:13**

<sup>13</sup> क्या यह एक छोटी बात है कि तू हमको ऐसे देश से जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं इसलिए निकाल लाया है, कि हमें जंगल में मार डालें, फिर क्या तू हमारे ऊपर प्रधान भी बनकर अधिकार जताता है?

**Numbers 16:14**

<sup>14</sup> फिर तू हमें ऐसे देश में जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं नहीं पहुँचाया, और न हमें खेतों और दाख की बारियों का अधिकारी बनाया। क्या तू इन लोगों की आँखों में धूल डालेगा? हम तो नहीं आएँगे।”

**Numbers 16:15**

<sup>15</sup> तब मूसा का कोप बहुत भड़क उठा, और उसने यहोवा से कहा, “उन लोगों की भेट की ओर दृष्टि न कर। मैंने तो उनसे एक गदहा भी नहीं लिया, और न उनमें से किसी की हानि की है।”

**Numbers 16:16**

<sup>16</sup> तब मूसा ने कोरह से कहा, “कल तू अपनी सारी मण्डली को साथ लेकर हारून के साथ यहोवा के सामने हाजिर होना;

**Numbers 16:17**

<sup>17</sup> और तुम सब अपना-अपना धूपदान लेकर उनमें धूप देना, फिर अपना-अपना धूपदान जो सब समेत ढाई सौ होंगे यहोवा के सामने ले जाना; विशेष करके तू और हारून अपना-अपना धूपदान ले जाना।”

**Numbers 16:18**

<sup>18</sup> इसलिए उन्होंने अपना-अपना धूपदान लेकर और उनमें आग रखकर उन पर धूप डाला; और मूसा और हारून के साथ मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े हुए।

**Numbers 16:19**

<sup>19</sup> और कोरह ने सारी मण्डली को उनके विरुद्ध मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा कर लिया। तब यहोवा का तेज सारी मण्डली को दिखाई दिया।

**Numbers 16:20**

<sup>20</sup> तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 16:21**

<sup>21</sup> “उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।”

**Numbers 16:22**

<sup>22</sup> तब वे मुँह के बल गिरकर कहने लगे, “हे परमेश्वर, हे सब प्राणियों के आत्माओं के परमेश्वर, क्या एक पुरुष के पाप के कारण तेरा क्रोध सारी मण्डली पर होगा?”

**Numbers 16:23**

<sup>23</sup> यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 16:24**

<sup>24</sup> “मण्डली के लोगों से कह कि कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बुओं के आस-पास से हट जाओ।”

**Numbers 16:25**

<sup>25</sup> तब मूसा उठकर दातान और अबीराम के पास गया; और इस्त्राएलियों के वृद्ध लोग उसके पीछे-पीछे गए।

**Numbers 16:26**

<sup>26</sup> और उसने मण्डली के लोगों से कहा, “तुम उन दुष्ट मनुष्यों के डेरों के पास से हट जाओ, और उनकी कोई वस्तु न छूओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब पापों में फँसकर मिट जाओ।”

**Numbers 16:27**

<sup>27</sup> यह सुनकर लोग कोरह, दातान, और अबीराम के तम्बूओं के आस-पास से हट गए; परन्तु दातान और अबीराम निकलकर अपनी पत्नियों, बेटों, और बाल-बच्चों समेत अपने-अपने डेरे के द्वार पर खड़े हुए।

**Numbers 16:28**

<sup>28</sup> तब मूसा ने कहा, “इससे तुम जान लोगे कि यहोवा ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैंने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया।

**Numbers 16:29**

<sup>29</sup> यदि उन मनुष्यों की मृत्यु और सब मनुष्यों के समान हो, और उनका दण्ड सब मनुष्यों के समान हो, तब जानो कि मैं यहोवा का भेजा हुआ नहीं हूँ।

**Numbers 16:30**

<sup>30</sup> परन्तु यदि यहोवा अपनी अनोखी शक्ति प्रगट करे, और पृथ्वी अपना मुँह पसारकर उनको, और उनका सब कुछ निगल जाए, और वे जीते जी अधोलोक में जा पड़ें, तो तुम समझ लो कि इन मनुष्यों ने यहोवा का अपमान किया है।”

**Numbers 16:31**

<sup>31</sup> वह ये सब बातें कह ही चुका था कि भूमि उन लोगों के पाँव के नीचे फट गई;

**Numbers 16:32**

<sup>32</sup> और पृथ्वी ने अपना मुँह खोल दिया और उनको और उनके समस्त घरबार का सामान, और कोरह के सब मनुष्यों और उनकी सारी सम्पत्ति को भी निगल लिया।

**Numbers 16:33**

<sup>33</sup> और वे और उनका सारा घरबार जीवित ही अधोलोक में जा पड़े; और पृथ्वी ने उनको ढाँप लिया, और वे मण्डली के बीच में से नष्ट हो गए।

**Numbers 16:34**

<sup>34</sup> और जितने इसाएली उनके चारों ओर थे वे उनका चिल्लाना सुन यह कहते हुए भागे, “कहीं पृथ्वी हमको भी निगल न ले!”

**Numbers 16:35**

<sup>35</sup> तब यहोवा के पास से आग निकली, और उन ढाई सौ धूप चढ़ानेवालों को भस्म कर डाला।

**Numbers 16:36**

<sup>36</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 16:37**

<sup>37</sup> “हारून याजक के पुत्र एलीआजर से कह कि उन धूपदानों को आग में से उठा लै; और आग के अंगारों को उधर ही छितरा दे, क्योंकि वे पवित्र हैं।

**Numbers 16:38**

<sup>38</sup> जिन्होंने पाप करके अपने ही प्राणों की हानि की है, उनके धूपदानों के पत्तर पीट-पीट कर बनाए जाएँ जिससे कि वह वेदी के मढ़ने के काम आए, क्योंकि उन्होंने यहोवा के सामने रखा था; इससे वे पवित्र हैं। इस प्रकार वह इसाएलियों के लिये एक निशान ठहरेगा।”

**Numbers 16:39**

<sup>39</sup> इसलिए एलीआजर याजक ने उन पीतल के धूपदानों को, जिनमें उन जले हुए मनुष्यों ने धूप चढ़ाया था, लेकर उनके पत्तर पीटकर वेदी के मढ़ने के लिये बनवा दिए,

**Numbers 16:40**

<sup>40</sup> कि इसाएलियों को इस बात का स्मरण रहे कि कोई दूसरा, जो हारून के वंश का न हो, यहोवा के सामने धूप चढ़ाने को समीप न जाए, ऐसा न हो कि वह भी कोरह और उसकी मण्डली के समान नष्ट हो जाए, जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा उसको आज्ञा दी थी।

**Numbers 16:41**

<sup>41</sup> दूसरे दिन इस्माएलियों की सारी मण्डली यह कहकर मूसा और हारून पर बुङ्गुड़ाने लगी, “यहोवा की प्रजा को तुम ने मार डाला है।”

**Numbers 16:42**

<sup>42</sup> और जब मण्डली के लोग मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हो रहे थे, तब उन्होंने मिलापवाले तम्बू की ओर दृष्टि की; और देखा, कि बादल ने उसे छा लिया है, और यहोवा का तेज दिखाई दे रहा है।

**Numbers 16:43**

<sup>43</sup> तब मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के सामने आए,

**Numbers 16:44**

<sup>44</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 16:45**

<sup>45</sup> “तुम उस मण्डली के लोगों के बीच से हट जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।” तब वे मुँह के बल गिरे।

**Numbers 16:46**

<sup>46</sup> और मूसा ने हारून से कहा, “धूपदान को लेकर उसमें वेदी पर से आग रखकर उस पर धूप डाल, मण्डली के पास फुर्ती से जाकर उसके लिये प्रायश्चित्त कर; क्योंकि यहोवा का कोप अत्यन्त भड़का है, और मरी फैलने लगी है।”

**Numbers 16:47**

<sup>47</sup> मूसा की आज्ञा के अनुसार हारून धूपदान लेकर मण्डली के बीच में दौड़ा गया; और यह देखकर कि लोगों में मरी फैलने लगी है, उसने धूप जलाकर लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया।

**Numbers 16:48**

<sup>48</sup> और वह मुर्दों और जीवित के मध्य में खड़ा हुआ; तब मरी थम गई।

**Numbers 16:49**

<sup>49</sup> और जो कोरह के संग भागी होकर मर गए थे, उन्हें छोड़ जो लोग इस मरी से मर गए वे चौदह हजार सात सौ थे।

**Numbers 16:50**

<sup>50</sup> तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौट गया, और मरी थम गई।

**Numbers 17:1**

<sup>1</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 17:2**

<sup>2</sup> “इस्माएलियों से बातें करके उनके पूर्वजों के घरानों के अनुसार, उनके सब प्रधानों के पास से एक-एक छड़ी ले; और उन बारह छड़ियों में से एक-एक पर एक-एक के मूलपुरुष का नाम लिख,

**Numbers 17:3**

<sup>3</sup> और लेवियों की छड़ी पर हारून का नाम लिख। क्योंकि इस्माएलियों के पूर्वजों के घरानों के एक-एक मुख्य पुरुष की एक-एक छड़ी होगी।

**Numbers 17:4**

<sup>4</sup> और उन छड़ियों को मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहाँ मैं तुम लोगों से मिला करता हूँ, रख दे।

**Numbers 17:5**

<sup>5</sup> और जिस पुरुष को मैं चुनूँगा उसकी छड़ी में कलियाँ फूट निकलेंगी; और इस्माएली जो तुम पर बुङ्गुड़ाते रहते हैं, वह बुङ्गुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूँगा।”

**Numbers 17:6**

<sup>6</sup> अतः मूसा ने इस्माएलियों से यह बात कही; और उनके सब प्रधानों ने अपने-अपने लिए, अपने-अपने पूर्वजों के घरानों के

अनुसार, एक-एक छड़ी उसे दी, सो बारह छड़ियाँ हुईं; और उन छड़ियों में हारून की भी छड़ी थी।

### Numbers 17:7

<sup>7</sup> उन छड़ियों को मूसा ने साक्षीपत्र के तम्बू में यहोवा के सामने रख दिया।

### Numbers 17:8

<sup>8</sup> दूसरे दिन मूसा साक्षीपत्र के तम्बू में गया; तो क्या देखा, कि हारून की छड़ी जो लेवी के घराने के लिये थी उसमें कलियाँ फूट निकली, उसमें कलियाँ लगीं, और फूल भी फूले, और पके बादाम भी लगे हैं।

### Numbers 17:9

<sup>9</sup> तब मूसा उन सब छड़ियों को यहोवा के सामने से निकालकर सब इस्साएलियों के पास ले गया; और उन्होंने अपनी-अपनी छड़ी पहचानकर ले ली।

### Numbers 17:10

<sup>10</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून की छड़ी को साक्षीपत्र के सामने फिर रख दे, कि यह उन बलवा करनेवालों के लिये एक निशान बनकर रखी रहे, कि तू उनका बुढ़बुड़ाना जो मेरे विरुद्ध होता रहता है भविष्य में रोक सके, ऐसा न हो कि वे मर जाएँ।”

### Numbers 17:11

<sup>11</sup> और मूसा ने यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार ही किया।

### Numbers 17:12

<sup>12</sup> तब इस्साएली मूसा से कहने लगे, देख, “हमारे प्राण निकलने वाले हैं, हम नष्ट हुए, हम सब के सब नष्ट हुए जाते हैं।

### Numbers 17:13

<sup>13</sup> जो कोई यहोवा के निवास के तम्बू के समीप जाता है वह मारा जाता है। तो क्या हम सब के सब मर ही जाएँगे?”

### Numbers 18:1

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने हारून से कहा, “पवित्रस्थान के विरुद्ध अधर्म का भार तुझ पर, और तेरे पुत्रों और तेरे पिता के घराने पर होगा; और तुम्हारे याजक कर्म के विरुद्ध अधर्म का भार तुझ पर और तेरे पुत्रों पर होगा।

### Numbers 18:2

<sup>2</sup> और लेवी का गोत्र, अर्थात् तेरे मूलपुरुष के गोत्रवाले जो तेरे भाई हैं, उनको भी अपने साथ ले आया कर, और वे तुझ से मिल जाएँ, और तेरी सेवा टहल किया करें, परन्तु साक्षीपत्र के तम्बू के सामने तू और तेरे पुत्र ही आया करें।

### Numbers 18:3

<sup>3</sup> जो तुझे सौंपा गया है उसकी और सारे तम्बू की भी वे रक्षा किया करें; परन्तु पवित्रस्थान के पात्रों के और वेदी के समीप न आएँ, ऐसा न हो कि वे और तुम लोग भी मर जाओ।

### Numbers 18:4

<sup>4</sup> अतः वे तुझ से मिल जाएँ, और मिलापवाले तम्बू की सारी सेवकाई की वस्तुओं की रक्षा किया करें; परन्तु जो तेरे कुल का न हो वह तुम लोगों के समीप न आने पाए।

### Numbers 18:5

<sup>5</sup> और पवित्रस्थान और वेदी की रखवाली तुम ही किया करो, जिससे इस्साएलियों पर फिर मेरा कोप न भड़के।

### Numbers 18:6

<sup>6</sup> परन्तु मैंने आप तुम्हारे लेवी भाइयों को इस्साएलियों के बीच से अलग कर लिया है, और वे मिलापवाले तम्बू की सेवा करने के लिये तुम को और यहोवा को सौंप दिये गए हैं।

### Numbers 18:7

<sup>7</sup> पर वेदी की और बीचवाले पर्दे के भीतर की बातों की सेवकाई के लिये तू और तेरे पुत्र अपने याजकपद की रक्षा करना, और तुम ही सेवा किया करना; क्योंकि मैं तुम्हें याजकपद की सेवकाई दान करता हूँ; और जो तेरे कुल का न हो वह यदि समीप आए तो मार डाला जाए।”

**Numbers 18:8**

<sup>8</sup> फिर यहोवा ने हारून से कहा, “सुन, मैं आप तुझको उठाई हुई भेंट सौंप देता हूँ, अर्थात् इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुएँ; जितनी हों उन्हें मैं तेरा अभिषेक वाला भाग ठहराकर तुझे और तेरे पुत्रों को सदा का हक्क करके दे देता हूँ।

**Numbers 18:9**

<sup>9</sup> जो परमपवित्र वस्तुएँ आग में भस्म न की जाएँगी वे तेरी ही ठहरें, अर्थात् इसाएलियों के सब चढ़ावों में से उनके सब अन्नबलि, सब पापबलि, और सब दोषबलि, जो वे मुझ को दें, वह तेरे और तेरे पुत्रों के लिये परमपवित्र ठहरें।

**Numbers 18:10**

<sup>10</sup> उनको परमपवित्र वस्तु जानकर खाया करना; उनको हर एक पुरुष खा सकता है; वे तेरे लिये पवित्र हैं।

**Numbers 18:11**

<sup>11</sup> फिर ये वस्तुएँ भी तेरी ठहरें, अर्थात् जितनी भेंटें इसाएली हिलाने के लिये दें, उनको मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को सदा का हक्क करके दे देता हूँ; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वह उन्हें खा सकेंगे।

**Numbers 18:12**

<sup>12</sup> फिर उत्तम से उत्तम नया दाखमधु, और गेहूँ, अर्थात् इनकी पहली उपज जो वे यहोवा को दें, वह मैं तुझको देता हूँ।

**Numbers 18:13**

<sup>13</sup> उनके देश के सब प्रकार की पहली उपज, जो वे यहोवा के लिये ले आएँ, वह तेरी ही ठहरे; तेरे घराने में जितने शुद्ध हों वे उन्हें खा सकेंगे।

**Numbers 18:14**

<sup>14</sup> इसाएलियों में जो कुछ अर्पण किया जाए वह भी तेरा ही ठहरे।

**Numbers 18:15**

<sup>15</sup> सब प्राणियों में से जितने अपनी-अपनी माँ के पहलौठे हों, जिन्हें लोग यहोवा के लिये चढ़ाएँ, चाहे मनुष्य के चाहे पशु के पहलौठे हों, वे सब तेरे ही ठहरें; परन्तु मनुष्यों और अशुद्ध पशुओं के पहलौठों को दाम लेकर छोड़ देना।

**Numbers 18:16**

<sup>16</sup> और जिन्हें छुड़ाना हो, जब वे महीने भर के हों तब उनके लिये अपने ठहराए हुए मोत के अनुसार, अर्थात् पवित्रस्थान के बीस गेरा के शेकेल के हिसाब से पाँच शेकेल लेकर उन्हें छोड़ना।

**Numbers 18:17**

<sup>17</sup> पर गाय, या भेड़ी, या बकरी के पहलौठे को न छोड़ना; वे तो पवित्र हैं। उनके लहू को वेदी पर छिड़क देना, और उनकी चर्बी को बलि करके जलाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगम्य हो;

**Numbers 18:18**

<sup>18</sup> परन्तु उनका माँस तेरा ठहरे, और हिलाई हुई छाती, और दाहिनी जाँघ भी तेरी ही ठहरे।

**Numbers 18:19**

<sup>19</sup> पवित्र वस्तुओं की जितनी भेंटें इसाएली यहोवा को दें, उन सभी को मैं तुझे और तेरे बेटे-बेटियों को सदा का हक्क करके दे देता हूँ यह तो तेरे और तेरे वंश के लिये यहोवा की सदा के लिये नमक की अटल वाचा है।”

**Numbers 18:20**

<sup>20</sup> फिर यहोवा ने हारून से कहा, “इसाएलियों के देश में तेरा कोई भाग न होगा, और न उनके बीच तेरा कोई अंश होगा; उनके बीच तेरा भाग और तेरा अंश मैं ही हूँ।

**Numbers 18:21**

<sup>21</sup> “फिर मिलापवाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इसाएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूँ।

**Numbers 18:22**

<sup>22</sup> और भविष्य में इसाएली मिलापवाले तम्बू के समीप न आएँ, ऐसा न हो कि उनके सिर पर पाप लगे, और वे मर जाएँ।

**Numbers 18:23**

<sup>23</sup> परन्तु लेवी मिलापवाले तम्बू की सेवा किया करें, और उनके अधर्म का भार वे ही उठाया करें; यह तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि ठहरे; और इसाएलियों के बीच उनका कोई निज भाग न होगा।

**Numbers 18:24**

<sup>24</sup> क्योंकि इसाएली जो दशमांश यहोवा को उठाई हुई भेट करके देंगे, उसे मैं लेवियों को निज भाग करके देता हूँ, इसलिए मैंने उनके विषय में कहा है, कि इसाएलियों के बीच कोई भाग उनको न मिले।”

**Numbers 18:25**

<sup>25</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 18:26**

<sup>26</sup> “तू लेवियों से कह, कि जब जब तुम इसाएलियों के हाथ से वह दशमांश लो जिसे यहोवा तुम को तुम्हारा निज भाग करके उनसे दिलाता है, तब-तब उसमें से यहोवा के लिये एक उठाई हुई भेट करके दशमांश का दशमांश देना।

**Numbers 18:27**

<sup>27</sup> और तुम्हारी उठाई हुई भेट तुम्हारे हित के लिये ऐसी गिनी जाएगी जैसा खलिहान में का अन्न, या रसकुण्ड में का दाखरस गिना जाता है।

**Numbers 18:28**

<sup>28</sup> इस रीति तुम भी अपने सब दशमांशों में से, जो इसाएलियों की ओर से पाओगे, यहोवा को एक उठाई हुई भेट देना; और यहोवा की यह उठाई हुई भेट हारून याजक को दिया करना।

**Numbers 18:29**

<sup>29</sup> जितने दान तुम पाओ उनमें से हर एक का उत्तम से उत्तम भाग, जो पवित्र ठहरा है, उसे यहोवा के लिये उठाई हुई भेट करके पूरी-पूरी देना।

**Numbers 18:30**

<sup>30</sup> इसलिए तू लेवियों से कह, कि जब तुम उसमें का उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो, तब यह तुम्हारे लिये खलिहान में के अन्न, और रसकुण्ड के रस के तुल्य गिना जाएगा;

**Numbers 18:31**

<sup>31</sup> और उसको तुम अपने घरानों समेत सब स्थानों में खा सकते हो, क्योंकि मिलापवाले तम्बू की जो सेवा तुम करोगे उसका बदला यही ठहरा है।

**Numbers 18:32**

<sup>32</sup> और जब तुम उसका उत्तम से उत्तम भाग उठाकर दो तब उसके कारण तुम को पाप न लगेगा। परन्तु इसाएलियों की पवित्र की हुई वस्तुओं को अपवित्र न करना, ऐसा न हो कि तुम मर जाओ।”

**Numbers 19:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

**Numbers 19:2**

<sup>2</sup> “व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा देता है वह यह है; कि तू इसाएलियों से कह, कि मेरे पास एक लाल निर्देष बछिया ले आओ, जिसमें कोई भी दोष न हो, और जिस पर जूआ कभी न रखा गया हो।

**Numbers 19:3**

<sup>3</sup> तब उसे एलीआजर याजक को दो, और वह उसे छावनी से बाहर ले जाए, और कोई उसको एलीआजर याजक के सामने बलिदान करे;

**Numbers 19:4**

<sup>4</sup> तब एलीआजर याजक अपनी उँगली से उसका कुछ लहू लेकर मिलापवाले तम्बू के सामने की ओर सात बार छिड़क दे।

**Numbers 19:5**

<sup>5</sup> तब कोई उस बछिया को खाल, माँस, लहू, और गोबर समेत उसके सामने जलाए;

**Numbers 19:6**

<sup>6</sup> और याजक देवदार की लकड़ी, जूफा, और लाल रंग का कपड़ा लेकर उस आग में जिसमें बछिया जलती हो डाल दे।

**Numbers 19:7**

<sup>7</sup> तब वह अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, इसके बाद छावनी में तो आए, परन्तु साँझ तक अशुद्ध रहेगा।

**Numbers 19:8**

<sup>8</sup> और जो मनुष्य उसको जलाए वह भी जल से अपने वस्त्र धोए और स्नान करे, और साँझ तक अशुद्ध रहे।

**Numbers 19:9**

<sup>9</sup> फिर कोई शुद्ध पुरुष उस बछिया की राख बटोरकर छावनी के बाहर किसी शुद्ध स्थान में रख छोड़े; और वह राख इसाएलियों की मण्डली के लिये अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के लिये रखी रहे; वह तो पापबलि है।

**Numbers 19:10**

<sup>10</sup> और जो मनुष्य बछिया की राख बटोरे वह अपने वस्त्र धोए, और साँझ तक अशुद्ध रहेगा। और यह इसाएलियों के लिये, और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी सदा की विधि ठहरे।

**Numbers 19:11**

<sup>11</sup> “जो किसी मनुष्य के शव को छूए वह सात दिन तक अशुद्ध रहे;

**Numbers 19:12**

<sup>12</sup> ऐसा मनुष्य तीसरे दिन पाप छुड़ाकर अपने को पावन करे, और सातवें दिन शुद्ध ठहरे; परन्तु यदि वह तीसरे दिन अपने आपको पाप छुड़ाकर पावन न करे, तो सातवें दिन शुद्ध न ठहरेगा।

**Numbers 19:13**

<sup>13</sup> जो कोई किसी मनुष्य का शव छूकर पाप छुड़ाकर अपने को पावन न करे, वह यहोवा के निवास-स्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, और वह मनुष्य इस्माएल में से नाश किया जाए; क्योंकि अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण वह अशुद्ध ठहरेगा, उसकी अशुद्धता उसमें बनी रहेगी।

**Numbers 19:14**

<sup>14</sup> “यदि कोई मनुष्य डेरे में मर जाए तो व्यवस्था यह है, कि जितने उस डेरे में रहें, या उसमें जाएँ, वे सब सात दिन तक अशुद्ध रहें।

**Numbers 19:15**

<sup>15</sup> और हर एक खुला हुआ पात्र, जिस पर कोई ढकना लगा न हो, वह अशुद्ध ठहरे।

**Numbers 19:16**

<sup>16</sup> और जो कोई मैदान में तलवार से मारे हुए को, या मृत शरीर को, या मनुष्य की हड्डी को, या किसी कब्र को छूए, तो सात दिन तक अशुद्ध रहे।

**Numbers 19:17**

<sup>17</sup> अशुद्ध मनुष्य के लिये जलाए हुए पापबलि की राख में से कुछ लेकर पात्र में डालकर उस पर सोते का जल डाला जाए;

**Numbers 19:18**

<sup>18</sup> तब कोई शुद्ध मनुष्य जूफा लेकर उस जल में डुबाकर जल को उस डेरे पर, और जितने पात्र और मनुष्य उसमें हों, उन

पर छिड़के, और हड्डी के, या मारे हुए के, या मृत शरीर को, या कब्र के छुनेवाले पर छिड़क दे;

### **Numbers 19:19**

<sup>19</sup> वह शुद्ध पुरुष तीसरे दिन और सातवें दिन उस अशुद्ध मनुष्य पर छिड़के; और सातवें दिन वह उसके पाप छुड़ाकर उसको पावन करे, तब वह अपने वस्त्रों को धोकर और जल से स्नान करके साँझा को शुद्ध ठहरे।

### **Numbers 19:20**

<sup>20</sup> “जो कोई अशुद्ध होकर अपने पाप छुड़ाकर अपने को पावन न कराए, वह मनुष्य यहोवा के पवित्रस्थान का अशुद्ध करनेवाला ठहरेगा, इस कारण वह मण्डली के बीच में से नाश किया जाए; अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल उस पर न छिड़का गया, इस कारण से वह अशुद्ध ठहरेगा।

### **Numbers 19:21**

<sup>21</sup> और यह उनके लिये सदा की विधि ठहरे। जो अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छिड़के वह अपने वस्त्रों को धोए; और जो जन अशुद्धता से छुड़ानेवाला जल छूए वह भी साँझा तक अशुद्ध रहे।

### **Numbers 19:22**

<sup>22</sup> और जो कुछ वह अशुद्ध मनुष्य छूए वह भी अशुद्ध ठहरे; और जो मनुष्य उस वस्तु को छूए वह भी साँझा तक अशुद्ध रहे।”

### **Numbers 20:1**

<sup>1</sup> पहले महीने में सारी इसाएली मण्डली के लोग सीन नामक जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे; और वहाँ मिर्याम मर गई, और वहीं उसको मिट्टी दी गई।

### **Numbers 20:2**

<sup>2</sup> वहाँ मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; इसलिए वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए।

### **Numbers 20:3**

<sup>3</sup> और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, “भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए!

### **Numbers 20:4**

<sup>4</sup> और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहाँ मर जाए?

### **Numbers 20:5**

<sup>5</sup> और तुम ने हमको मिस से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुँचाया है? यहाँ तो बीज, या अंजीर, या दाखलता, या अनार, कुछ नहीं है, यहाँ तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।”

### **Numbers 20:6**

<sup>6</sup> तब मूसा और हारून मण्डली के सामने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुँह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया।

### **Numbers 20:7**

<sup>7</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

### **Numbers 20:8**

<sup>8</sup> “उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें कर, तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकालकर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला।”

### **Numbers 20:9**

<sup>9</sup> यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने उसके सामने से लाठी को ले लिया।

### **Numbers 20:10**

<sup>10</sup> और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उससे कहा, ‘हे बलवा करनेवालों,

सुनो; क्या हमको इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?”

### **Numbers 20:11**

<sup>11</sup> तब मूसा ने हाथ उठाकर लाठी चट्टान पर दो बार मारी; और उसमें से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे।

### **Numbers 20:12**

<sup>12</sup> परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, “तुम ने जो मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्साएलियों की वधि में पवित्र नहीं ठहराया, इसलिए तुम इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने न पाओगे जिसे मैंने उन्हें दिया है।”

### **Numbers 20:13**

<sup>13</sup> उस सोते का नाम मरीबा पड़ा, क्योंकि इस्साएलियों ने यहोवा से झगड़ा किया था, और वह उनके बीच पवित्र ठहराया गया।

### **Numbers 20:14**

<sup>14</sup> फिर मूसा ने कादेश से एदोम के राजा के पास दूत भेजे, “तेरा भाई इस्साएल यह कहता है, कि हम पर जो-जो क्लेश पढ़े हैं वह तू जानता होगा;

### **Numbers 20:15**

<sup>15</sup> अर्थात् यह कि हमारे पुरखा मिस्र में गए थे, और हम मिस्र में बहुत दिन रहे; और मिस्रियों ने हमारे पुरखाओं के साथ और हमारे साथ भी बुरा बर्ताव किया;

### **Numbers 20:16**

<sup>16</sup> परन्तु जब हमने यहोवा की दुहाई दी तब उसने हमारी सुनी, और एक दूत को भेजकर हमें मिस्र से निकाल ले आया है; इसलिए अब हम कादेश नगर में हैं जो तेरी सीमा ही पर है।

### **Numbers 20:17**

<sup>17</sup> अतः हमें अपने देश में से होकर जाने दे। हम किसी खेत या दाख की बारी से होकर न चलेंगे, और कुओं का पानी न पीएँगे; सड़क ही सड़क से होकर चले जाएँगे, और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ, तब तक न दाएँ न बाएँ मुड़ेंगे।”

### **Numbers 20:18**

<sup>18</sup> परन्तु एदोमियों के राजा ने उसके पास कहला भेजा, “तू मेरे देश में से होकर मत जा, नहीं तो मैं तलवार लिये हुए तेरा सामना करने को निकलूँगा।”

### **Numbers 20:19**

<sup>19</sup> इस्साएलियों ने उसके पास फिर कहला भेजा, “हम सड़क ही सड़क से चलेंगे, और यदि हम और हमारे पशु तेरा पानी पीएँ, तो उसका दाम देंगे, हमको और कुछ नहीं, केवल पाँव-पाँव चलकर निकल जाने दे।”

### **Numbers 20:20**

<sup>20</sup> परन्तु उसने कहा, “तू आने न पाएगा।” और एदोम बड़ी सेना लेकर भुजबल से उसका सामना करने को निकल आया।

### **Numbers 20:21**

<sup>21</sup> इस प्रकार एदोम ने इस्साएल को अपने देश के भीतर से होकर जाने देने से इन्कार किया; इसलिए इस्साएल उसकी ओर से मुड़ गए।

### **Numbers 20:22**

<sup>22</sup> तब इस्साएलियों की सारी मण्डली कादेश से कूच करके होर नामक पहाड़ के पास आ गई।

### **Numbers 20:23**

<sup>23</sup> और एदोम देश की सीमा पर होर पहाड़ में यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,

## Numbers 20:24

<sup>24</sup> “हारून अपने लोगों में जा मिलेगा; क्योंकि तुम दोनों ने जो मरीबा नामक सोते पर मेरा कहना न मानकर मुझसे बलवा किया है, इस कारण वह उस देश में जाने न पाएगा जिसे मैंने इसाएलियों को दिया है।

## Numbers 20:25

<sup>25</sup> इसलिए तू हारून और उसके पुत्र एलीआजर को होर पहाड़ पर ले चल;

## Numbers 20:26

<sup>26</sup> और हारून के वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहना; तब हारून वहीं मरकर अपने लोगों में जा मिलेगा।”

## Numbers 20:27

<sup>27</sup> यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने किया; वे सारी मण्डली के देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए।

## Numbers 20:28

<sup>28</sup> तब मूसा ने हारून के वस्त्र उतारकर उसके पुत्र एलीआजर को पहनाए और हारून वहीं पहाड़ की चोटी पर मर गया। तब मूसा और एलीआजर पहाड़ पर से उतर आए।

## Numbers 20:29

<sup>29</sup> और जब इसाएल की सारी मण्डली ने देखा कि हारून का प्राण छूट गया है, तब इसाएल के सब घराने के लोग उसके लिये तीस दिन तक रोते रहे।

## Numbers 21:1

<sup>1</sup> तब अराद का कनानी राजा, जो दक्षिण देश में रहता था, यह सुनकर कि जिस मार्ग से वे भेदिए आए थे उसी मार्ग से अब इसाएली आ रहे हैं, इसाएल से लड़ा, और उनमें से कुछ को बन्धुआ कर लिया।

## Numbers 21:2

<sup>2</sup> तब इसाएलियों ने यहोवा से यह कहकर मन्त्रत मानी, “यदि तू सचमुच उन लोगों को हमारे वश में कर दे, तो हम उनके नगरों को सत्यानाश कर देंगे।”

## Numbers 21:3

<sup>3</sup> इसाएल की यह बात सुनकर यहोवा ने कनानियों को उनके वश में कर दिया; अतः उन्होंने उनके नगरों समेत उनको भी सत्यानाश किया; इससे उस स्थान का नाम होर्मा रखा गया।

## Numbers 21:4

<sup>4</sup> फिर उन्होंने होर पहाड़ से कूच करके लाल समुद्र का मार्ग लिया कि एदोम देश से बाहर-बाहर घूमकर जाएँ; और लोगों का मन मार्ग के कारण बहुत व्याकुल हो गया।

## Numbers 21:5

<sup>5</sup> इसलिए वे परमेश्वर के विरुद्ध बात करने लगे, और मूसा से कहा, “तुम लोग हमको मिस्स से जंगल में मरने के लिये क्यों ले आए हो? यहाँ न तो रोटी है, और न पानी, और हमारे प्राण इस निकम्मी रोटी से दुःखित हैं।”

## Numbers 21:6

<sup>6</sup> अतः यहोवा ने उन लोगों में तेज विषवाले साँप भेजे, जो उनको डसने लगे, और बहुत से इसाएली मर गए।

## Numbers 21:7

<sup>7</sup> तब लोग मूसा के पास जाकर कहने लगे, “हमने पाप किया है, कि हमने यहोवा के और तेरे विरुद्ध बातें की हैं; यहोवा से प्रार्थना कर कि वह साँपों को हम से दूर करे।” तब मूसा ने उनके लिये प्रार्थना की।

## Numbers 21:8

<sup>8</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खाम्मे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।”

**Numbers 21:9**

<sup>9</sup> अतः मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस-जिसने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया।

**Numbers 21:10**

<sup>10</sup> फिर इस्माइलियों ने कूच करके ओबोत में डेरे डालें।

**Numbers 21:11**

<sup>11</sup> और ओबोत से कूच करके अबारीम में डेरे डालें, जो पूर्व की ओर मोआब के सामने के जंगल में है।

**Numbers 21:12**

<sup>12</sup> वहाँ से कूच करके उन्होंने जेरेद नामक नाले में डेरे डालें।

**Numbers 21:13**

<sup>13</sup> वहाँ से कूच करके उन्होंने अर्नोन नदी, जो जंगल में बहती और एमोरियों के देश से निकलती है, उसकी दूसरी ओर डेरे खड़े किए; क्योंकि अर्नोन मोआबियों और एमोरियों के बीच होकर मोआब देश की सीमा ठहरी है।

**Numbers 21:14**

<sup>14</sup> इस कारण यहोवा के संग्राम नामक पुस्तक में इस प्रकार लिखा है, “सूपा में वाहेब, और अर्नोन की धाटी,

**Numbers 21:15**

<sup>15</sup> और उन धाटियों की ढलान जो आर नामक नगर की ओर है, और जो मोआब की सीमा पर है।”

**Numbers 21:16**

<sup>16</sup> फिर वहाँ से कूच करके वे बैर तक गए; वहाँ वही कुआँ है जिसके विषय में यहोवा ने मूसा से कहा था, “उन लोगों को इकट्ठा कर, और मैं उन्हें पानी दूँगा।”

**Numbers 21:17**

<sup>17</sup> उस समय इस्माइल ने यह गीत गाया, “हे कुएँ, उमड़ आ, उस कुएँ के विषय में गाओ!

**Numbers 21:18**

<sup>18</sup> जिसको हाकिमों ने खोदा, और इस्माइल के रईसों ने अपने सोंटों और लाठियों से खोद लिया।” फिर वे जंगल से मत्ताना को,

**Numbers 21:19**

<sup>19</sup> और मत्ताना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामोत को,

**Numbers 21:20**

<sup>20</sup> और बामोत से कूच करके उस तराई तक जो मोआब के मैदान में है, और पिसगा के उस सिरे तक भी जो यशीमोन की ओर झुका है पहुँच गए।

**Numbers 21:21**

<sup>21</sup> तब इस्माइल ने एमोरियों के राजा सीहोन के पास दूतों से यह कहला भेजा,

**Numbers 21:22**

<sup>22</sup> “हमें अपने देश में होकर जाने दे; हम मुड़कर किसी खेत या दाख की बारी में तो न जाएँगे; न किसी कुएँ का पानी पीएँगे; और जब तक तेरे देश से बाहर न हो जाएँ तब तक सड़क ही से चले जाएँगे।”

**Numbers 21:23**

<sup>23</sup> फिर भी सीहोन ने इस्माइल को अपने देश से होकर जाने न दिया; वरन् अपनी सारी सेना को इकट्ठा करके इस्माइल का सामना करने को जंगल में निकल आया, और यहस को आकर उनसे लड़ा।

**Numbers 21:24**

<sup>24</sup> तब इसाएलियों ने उसको तलवार से मार दिया, और अर्नोन से यब्बोक नदी तक, जो अम्मोनियों की सीमा थी, उसके देश के अधिकारी हो गए; अम्मोनियों की सीमा तो वढ़ थी।

**Numbers 21:25**

<sup>25</sup> इसलिए इसाएल ने एमोरियों के सब नगरों को ले लिया, और उनमें, अर्थात् हेशबोन और उसके आस-पास के नगरों में रहने लगे।

**Numbers 21:26**

<sup>26</sup> हेशबोन एमोरियों के राजा सीहोन का नगर था; उसने मोआब के पिछले राजा से लड़कर उसका सारा देश अर्नोन तक उसके हाथ से छीन लिया था।

**Numbers 21:27**

<sup>27</sup> इस कारण गूढ़ बात के कहनेवाले कहते हैं, “हेशबोन में आओ, सीहोन का नगर बसे, और वढ़ किया जाए।

**Numbers 21:28**

<sup>28</sup> क्योंकि हेशबोन से आग, सीहोन के नगर से लौ निकली; जिससे मोआब देश का आर नगर, और अर्नोन के ऊँचे स्थानों के स्वामी भस्म हुए।

**Numbers 21:29**

<sup>29</sup> हे मोआब, तुझ पर हाय! कमोश देवता की प्रजा नाश हुई, उसने अपने बेटों को भगोड़ा, और अपनी बेटियों को एमोरी राजा सीहोन की दासी कर दिया।

**Numbers 21:30**

<sup>30</sup> हमने उन्हें गिरा दिया है, हेशबोन दीबोन तक नष्ट हो गया है, और हमने नोपह और मेदबा तक भी उजाड़ दिया है।”

**Numbers 21:31**

<sup>31</sup> इस प्रकार इसाएल एमोरियों के देश में रहने लगा।

**Numbers 21:32**

<sup>32</sup> तब मूसा ने याजेर नगर का भेद लेने को भेजा; और उन्होंने उसके गाँवों को ले लिया, और वहाँ के एमोरियों को उस देश से निकाल दिया।

**Numbers 21:33**

<sup>33</sup> तब वे मुड़कर बाशान के मार्ग से जाने लगे; और बाशान के राजा ओग ने उनका सामना किया, वह लड़ने को अपनी सारी सेना समेत एट्रेई में निकल आया।

**Numbers 21:34**

<sup>34</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा, “उससे मत डर; क्योंकि मैं उसको सारी सेना और देश समेत तेरे हाथ में कर देता हूँ; और जैसा तूने एमोरियों के राजा हेशबोनवासी सीहोन के साथ किया है, वैसा ही उसके साथ भी करना।”

**Numbers 21:35**

<sup>35</sup> तब उन्होंने उसको, और उसके पुत्रों और सारी प्रजा को यहाँ तक मारा कि उसका कोई भी न बचा; और वे उसके देश के अधिकारी हो गए।

**Numbers 22:1**

<sup>1</sup> तब इसाएलियों ने कूच करके यरीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के अराबा में डेरे खड़े किए।

**Numbers 22:2**

<sup>2</sup> और सिप्पोर के पुत्र बालाक ने देखा कि इसाएल ने एमोरियों से क्या-क्या किया है।

**Numbers 22:3**

<sup>3</sup> इसलिए मोआब यह जानकर, कि इसाएली बहुत हैं, उन लोगों से अत्यन्त डर गया; यहाँ तक कि मोआब इसाएलियों के कारण अत्यन्त व्याकुल हुआ।

**Numbers 22:4**

<sup>4</sup> तब मोआबियों ने मिद्यानी पुरनियों से कहा, “अब वह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को चट कर जाएगा, जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाता है।” उस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा था;

**Numbers 22:5**

<sup>5</sup> और इसने पतोर नगर को, जो फरात के तट पर बोर के पुत्र बिलाम के जातिभाइयों की भूमि थी, वहाँ बिलाम के पास दूत भेजे कि वे यह कहकर उसे बुला लाएँ, “सुन एक दल मिस से निकल आया है, और भूमि उनसे ढक गई है, और अब वे मेरे सामने ही आकर बस गए हैं।

**Numbers 22:6**

<sup>6</sup> इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे, क्योंकि वे मुझसे अधिक बलवन्त हैं, तब सम्भव है कि हम उन पर जयवन्त हों, और हम सब इनको अपने देश से मारकर निकाल दें; क्योंकि यह तो मैं जानता हूँ कि जिसको तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है, और जिसको तू श्राप देता है वह श्रापित होता है।”

**Numbers 22:7**

<sup>7</sup> तब मोआबी और मिद्यानी पुरनिये भावी कहने की दक्षिणा लेकर चले, और बिलाम के पास पहुँचकर बालाक की बातें कह सुनाईं।

**Numbers 22:8**

<sup>8</sup> उसने उनसे कहा, “आज रात को यहाँ टिको, और जो बात यहोवा मुझसे कहेगा, उसी के अनुसार मैं तुम को उत्तर दूँगा।” तब मोआब के हाकिम बिलाम के यहाँ ठहर गए।

**Numbers 22:9**

<sup>9</sup> तब परमेश्वर ने बिलाम के पास आकर पूछा, “तेरे यहाँ ये पुरुष कौन हैं?”

**Numbers 22:10**

<sup>10</sup> बिलाम ने परमेश्वर से कहा, “सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने मेरे पास यह कहला भेजा है,

**Numbers 22:11**

<sup>11</sup> ‘सुन, जो दल मिस से निकल आया है उससे भूमि ढाँप गई है; इसलिए आकर मेरे लिये उन्हें श्राप दे; सम्भव है कि मैं उनसे लड़कर उनको बरबस निकाल सकूँगा।’”

**Numbers 22:12**

<sup>12</sup> परमेश्वर ने बिलाम से कहा, “तू इनके संग मत जा; उन लोगों को श्राप मत दे, क्योंकि वे आशीष के भागी हो चुके हैं।”

**Numbers 22:13**

<sup>13</sup> भोर को बिलाम ने उठकर बालाक के हाकिमों से कहा, “तुम अपने देश को चले जाओ; क्योंकि यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता।”

**Numbers 22:14**

<sup>14</sup> तब मोआबी हाकिम चले गए और बालाक के पास जाकर कहा, “बिलाम ने हमारे साथ आने से मना किया है।”

**Numbers 22:15**

<sup>15</sup> इस पर बालाक ने फिर और हाकिम भेजे, जो पहले से प्रतिष्ठित और गिनती में भी अधिक थे।

**Numbers 22:16**

<sup>16</sup> उन्होंने बिलाम के पास आकर कहा, “सिप्पोर का पुत्र बालाक यह कहता है, ‘मेरे पास आने से किसी कारण मना मत कर;

**Numbers 22:17**

<sup>17</sup> क्योंकि मैं निश्चय तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, और जो कुछ तू मुझसे कहे वही मैं करूँगा; इसलिए आ, और उन लोगों को मेरे निमित्त श्राप दे।’”

**Numbers 22:18**

<sup>18</sup> बिलाम ने बालाक के कर्मचारियों को उत्तर दिया, “चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भरकर मुझे दे दे, तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर व बढ़ाकर मानूँ।

**Numbers 22:19**

<sup>19</sup> इसलिए अब तुम लोग आज रात को यहीं टिके रहो, ताकि मैं जान लूँ कि यहोवा मुझसे और क्या कहता है।”

**Numbers 22:20**

<sup>20</sup> और परमेश्वर ने रात को बिलाम के पास आकर कहा, “यदि वे पुरुष तुझे बुलाने आए हैं, तो तू उठकर उनके संग जा; परन्तु जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी के अनुसार करना।”

**Numbers 22:21**

<sup>21</sup> तब बिलाम भोर को उठा, और अपनी गदही पर काठी बाँधकर मोआबी हाकिमों के संग चल पड़ा।

**Numbers 22:22**

<sup>22</sup> और उसके जाने के कारण परमेश्वर का कोप भड़क उठा, और यहोवा का दूत उसका विरोध करने के लिये मार्ग रोककर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गदही पर सवार होकर जा रहा था, और उसके संग उसके दो सेवक भी थे।

**Numbers 22:23**

<sup>23</sup> और उस गदही को यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब गदही मार्ग छोड़कर खेत में चली गई; तब बिलाम ने गदही को मारा कि वह मार्ग पर फिर आ जाए।

**Numbers 22:24**

<sup>24</sup> तब यहोवा का दूत दाख की बारियों के बीच की गली में, जिसके दोनों ओर बारी की दीवार थी, खड़ा हुआ।

**Numbers 22:25**

<sup>25</sup> यहोवा के दूत को देखकर गदही दीवार से ऐसी सट गई कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया; तब उसने उसको फिर मारा।

**Numbers 22:26**

<sup>26</sup> तब यहोवा का दूत आगे बढ़कर एक सकरे स्थान पर खड़ा हुआ, जहाँ न तो दाहिनी ओर हटने की जगह थी और न बाईं ओर।

**Numbers 22:27**

<sup>27</sup> वहाँ यहोवा के दूत को देखकर गदही बिलाम को लिये हुए बैठ गई; फिर तो बिलाम का कोप भड़क उठा, और उसने गदही को लाठी से मारा।

**Numbers 22:28**

<sup>28</sup> तब यहोवा ने गदही का मुँह खोल दिया, और वह बिलाम से कहने लगी, “मैंने तेरा क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?”

**Numbers 22:29**

<sup>29</sup> बिलाम ने गदही से कहा, “यह कि तूने मुझसे नटखटी की। यदि मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं तुझे अभी मार डालता।”

**Numbers 22:30**

<sup>30</sup> गदही ने बिलाम से कहा, “क्या मैं तेरी वही गदही नहीं, जिस पर तू जन्म से आज तक चढ़ता आया है? क्या मैं तुझ से कभी ऐसा करती थी?” वह बोला, “नहीं।”

**Numbers 22:31**

<sup>31</sup> तब यहोवा ने बिलाम की आँखें खोलीं, और उसको यहोवा का दूत हाथ में नंगी तलवार लिये हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा; तब वह झुक गया, और मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

**Numbers 22:32**

<sup>32</sup> यहोवा के दूत ने उससे कहा, “तूने अपनी गदही को तीन बार क्यों मारा? सुन, तेरा विरोध करने को मैं ही आया हूँ, इसलिए कि तू मेरे सामने दुष्ट चाल चलता है;

**Numbers 22:33**

<sup>33</sup> और यह गदही मुझे देखकर मेरे सामने से तीन बार हट गई। यदि वह मेरे सामने से हट न जाती, तो निःसन्देह मैं अब तक तुझको मार ही डालता, परन्तु उसको जीवित छोड़ देता।”

**Numbers 22:34**

<sup>34</sup> तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, “मैंने पाप किया है; मैं नहीं जानता था कि तू मेरा सामना करने को मार्ग में खड़ा है। इसलिए अब यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूँ।”

**Numbers 22:35**

<sup>35</sup> यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, “इन पुरुषों के संग तू चला जा; परन्तु केवल वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँगा।” तब बिलाम बालाक के हाकिमों के संग चला गया।

**Numbers 22:36**

<sup>36</sup> यह सुनकर कि बिलाम आ रहा है, बालाक उससे भेंट करने के लिये मोआब के उस नगर तक जो उस देश के अर्नोनवाले सीमा पर है गया।

**Numbers 22:37**

<sup>37</sup> बालाक ने बिलाम से कहा, “क्या मैंने बड़ी आशा से तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों नहीं चला आया? क्या मैं इस योग्य नहीं कि सचमुच तेरी उचित प्रतिष्ठा कर सकता?”

**Numbers 22:38**

<sup>38</sup> बिलाम ने बालाक से कहा, “देख, मैं तेरे पास आया तो हूँ! परन्तु अब क्या मैं कुछ कर सकता हूँ? जो बात परमेश्वर मेरे मुँह में डालेगा, वही बात मैं कहूँगा।”

**Numbers 22:39**

<sup>39</sup> तब बिलाम बालाक के संग-संग चला, और वे किर्घूसों तक आए।

**Numbers 22:40**

<sup>40</sup> और बालाक ने बैल और भेड़-बकरियों को बलि किया, और बिलाम और उसके साथ के हाकिमों के पास भेजा।

**Numbers 22:41**

<sup>41</sup> भोर को बालाक बिलाम को बाल के ऊँचे स्थानों पर चढ़ा ले गया, और वहाँ से उसको सब इस्त्राएली लोग दिखाई पड़े।

**Numbers 23:1**

<sup>1</sup> तब बिलाम ने बालाक से कहा, “यहाँ पर मेरे लिये सात वेदियाँ बनवा, और इसी स्थान पर सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर।”

**Numbers 23:2**

<sup>2</sup> तब बालाक ने बिलाम के कहने के अनुसार किया; और बालाक और बिलाम ने मिलकर प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया।

**Numbers 23:3**

<sup>3</sup> फिर बिलाम ने बालाक से कहा, “तू अपने होमबलि के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूँ; सम्भव है कि यहोवा मुझसे भेंट करने को आए; और जो कुछ वह मुझ पर प्रगट करेगा वही मैं तुझको बताऊँगा।” तब वह एक मुण्डे पहाड़ पर गया।

**Numbers 23:4**

<sup>4</sup> और परमेश्वर बिलाम से मिला; और बिलाम ने उससे कहा, “मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं, और प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया है।”

**Numbers 23:5**

<sup>5</sup> यहोवा ने बिलाम के मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बालाक के पास लौट जा, और इस प्रकार कहना।”

**Numbers 23:6**

<sup>6</sup> और वह उसके पास लौटकर आ गया, और क्या देखता है कि वह सारे मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है।

**Numbers 23:7**

<sup>7</sup> तब बिलाम ने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, “बालाक ने मुझे अराम से, अर्थात् मोआब के राजा ने मुझे पूर्व के पहाड़ों से बुलवा भेजा: ‘आ, मेरे लिये याकूब को श्राप दे, आ, इस्राएल को धमकी दे।’

**Numbers 23:8**

<sup>8</sup> परन्तु जिन्हें परमेश्वर ने श्राप नहीं दिया उन्हें मैं क्यों श्राप दूँ? और जिन्हें यहोवा ने धमकी नहीं दी उन्हें मैं कैसे धमकी दूँ?

**Numbers 23:9**

<sup>9</sup> चट्टानों की चोटी पर से वे मुझे दिखाई पड़ते हैं, पहाड़ियों पर से मैं उनको देखता हूँ; वह ऐसी जाति है जो अकेली बसी रहेगी, और अन्यजातियों से अलग गिनी जाएगी!

**Numbers 23:10**

<sup>10</sup> याकूब के धूलि के किनके को कौन गिन सकता है, या इस्राएल की चौथाई की गिनती कौन ले सकता है? सौभाग्य यदि मेरी मृत्यु धर्मियों की सी, और मेरा अन्त भी उन्हीं के समान हो!”

**Numbers 23:11**

<sup>11</sup> तब बालाक ने बिलाम से कहा, “तूने मुझसे क्या किया है? मैंने तुझे अपने शत्रुओं को श्राप देने को बुलवाया था, परन्तु तूने उन्हें आशीष ही आशीष दी है।”

**Numbers 23:12**

<sup>12</sup> उसने कहा, “जो बात यहोवा ने मुझे सिखलाई, क्या मुझे उसी को सावधानी से बोलना न चाहिये?”

**Numbers 23:13**

<sup>13</sup> बालाक ने उससे कहा, “मेरे संग दूसरे स्थान पर चल, जहाँ से वे तुझे दिखाई देंगे; तू उन सभी को तो नहीं, केवल बाहरवालों को देख सकेगा; वहाँ से उन्हें मेरे लिये श्राप दे।”

**Numbers 23:14**

<sup>14</sup> तब वह उसको सोपीम नामक मैदान में पिसगा के सिरे पर ले गया, और वहाँ सात वेदियाँ बनवाकर प्रत्येक पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया।

**Numbers 23:15**

<sup>15</sup> तब बिलाम ने बालाक से कहा, “अपने होमबलि के पास यहाँ खड़ा रह, और मैं उधर जाकर यहोवा से भेंट करूँ।”

**Numbers 23:16**

<sup>16</sup> और यहोवा ने बिलाम से भेंट की, और उसने उसके मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बालाक के पास लौट जा, और इस प्रकार कहना।”

**Numbers 23:17**

<sup>17</sup> और वह उसके पास गया, और क्या देखता है कि वह मोआबी हाकिमों समेत अपने होमबलि के पास खड़ा है। और बालाक ने पूछा, “यहोवा ने क्या कहा है?”

**Numbers 23:18**

<sup>18</sup> तब बिलाम ने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, “हे बालाक, मन लगाकर सुन, हे सिप्पोर के पुत्र, मेरी बात पर कान लगा:

**Numbers 23:19**

<sup>19</sup> परमेश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?

**Numbers 23:20**

<sup>20</sup> देख, आशीर्वाद ही देने की आज्ञा मैंने पाई है: वह आशीष दे चुका है, और मैं उसे नहीं पलट सकता।

**Numbers 23:21**

<sup>21</sup> उसने याकूब में अनर्थ नहीं पाया; और न इसाएल में अन्याय देखा है। उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग है, और उनमें राजा की सी ललकार होती है।

**Numbers 23:22**

<sup>22</sup> उनको मिस में से परमेश्वर ही निकाले लिए आ रहा है, वह तो जंगली साँड़ के समान बल रखता है।

**Numbers 23:23**

<sup>23</sup> निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चल सकता, और इसाएल पर भावी कहना कोई अर्थ नहीं रखता; परन्तु याकूब और इसाएल के विषय में अब यह कहा जाएगा, कि परमेश्वर ने क्या ही विचित्र काम किया है!

**Numbers 23:24**

<sup>24</sup> सुन, वह दल सिंहनी के समान उठेगा, और सिंह के समान खड़ा होगा; वह जब तक शिकार को न खा ले, और मरे हुओं के लहू को न पी ले, तब तक न लेटेगा।"

**Numbers 23:25**

<sup>25</sup> तब बालाक ने बिलाम से कहा, "उनको न तो श्राप देना, और न आशीष देना।"

**Numbers 23:26**

<sup>26</sup> बिलाम ने बालाक से कहा, "क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि जो कुछ यहोवा मुझसे कहेगा, वही मुझे करना पड़ेगा?"

**Numbers 23:27**

<sup>27</sup> बालाक ने बिलाम से कहा, "चल मैं तुझको एक और स्थान पर ले चलता हूँ; सम्भव है कि परमेश्वर की इच्छा हो कि तू वहाँ से उन्हें मेरे लिये श्राप दे।"

**Numbers 23:28**

<sup>28</sup> तब बालाक बिलाम को पोर के सिरे पर, जहाँ से यशीमोन देश दिखाई देता है, ले गया।

**Numbers 23:29**

<sup>29</sup> और बिलाम ने बालाक से कहा, "यहाँ पर मेरे लिये सात वेदियाँ बनवा, और यहाँ सात बछड़े और सात मेढ़े तैयार कर।"

**Numbers 23:30**

<sup>30</sup> बिलाम के कहने के अनुसार बालाक ने प्रत्येक वेदी पर एक बछड़ा और एक मेढ़ा चढ़ाया।

**Numbers 24:1**

<sup>1</sup> यह देखकर कि यहोवा इसाएल को आशीष ही दिलाना चाहता है, बिलाम पहले के समान शकुन देखने को न गया, परन्तु अपना मुँह जंगल की ओर कर लिया।

**Numbers 24:2**

<sup>2</sup> और बिलाम ने आँखें उठाई, और इसाएलियों को अपने गोत्र-गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा।

**Numbers 24:3**

<sup>3</sup> तब उसने अपनी गृद्ध बात आरम्भ की, और कहने लगा, "बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुरुष की आँखें खुली थीं उसी की यह वाणी है,

**Numbers 24:4**

<sup>4</sup> परमेश्वर के वचनों का सुननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है कि

**Numbers 24:5**

<sup>5</sup> हे याकूब, तेरे डेरे, और हे इस्साएल, तेरे निवास-स्थान क्या ही मनभावने हैं।

**Numbers 24:6**

<sup>6</sup> वे तो घाटियों के समान, और नदी के तट की वाटिकाओं के समान ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कि यहोवा के लगाए हुए अगर के वृक्ष, और जल के निकट के देवदारू।

**Numbers 24:7**

<sup>7</sup> और उसके घड़ों से जल उमड़ा करेगा, और उसका बीज बहुत से जलभरे खेतों में पड़ेगा, और उसका राजा अगाग से भी महान होगा, और उसका राज्य बढ़ता ही जाएगा।

**Numbers 24:8**

<sup>8</sup> उसको मिस में से परमेश्वर ही निकाले लिए आ रहा है; वह तो जंगली साँड़ के समान बल रखता है, जाति-जाति के लोग जो उसके द्वारी हैं उनको वह खा जाएगा, और उनकी हड्डियों को टुकड़े-टुकड़े करेगा, और अपने तीरों से उनको बेधेगा।

**Numbers 24:9**

<sup>9</sup> वह घात लगाए बैठा है, वह सिंह या सिंहनी के समान लेट गया है; अब उसको कौन छेड़े? जो कोई तुझे आशीर्वाद दे वह आशीष पाए, और जो कोई तुझे श्राप दे वह श्रापित हो।”

**Numbers 24:10**

<sup>10</sup> तब बालाक का कोप बिलाम पर भड़क उठा; और उसने हाथ पर हाथ पटककर बिलाम से कहा, “मैंने तुझे अपने शत्रुओं को श्राप देने के लिये बुलवाया, परन्तु तूने तीन बार उन्हें आशीर्वाद ही आशीर्वाद दिया है।

**Numbers 24:11**

<sup>11</sup> इसलिए अब तू अपने स्थान पर भाग जा, मैंने तो सोचा था कि तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करूँगा, परन्तु अब यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है।”

**Numbers 24:12**

<sup>12</sup> बिलाम ने बालाक से कहा, “जो दूत तूने मेरे पास भेजे थे, क्या मैंने उनसे भी न कहा था,

**Numbers 24:13**

<sup>13</sup> कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चाँदी से भरकर मुझे दे, तो भी मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूँ और न बुरा, जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं कहूँगा?

**Numbers 24:14**

<sup>14</sup> “अब सुन, मैं अपने लोगों के पास लौटकर जाता हूँ; परन्तु पहले मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि आनेवाले दिनों में वे लोग तेरी प्रजा से क्या-क्या करेंगे।”

**Numbers 24:15**

<sup>15</sup> फिर वह अपनी गूढ़ बात आरम्भ करके कहने लगा, “बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुरुष की आँखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है,

**Numbers 24:16**

<sup>16</sup> परमेश्वर के वचनों का सुननेवाला, और परमप्रधान के ज्ञान का जाननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई आँखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है:

**Numbers 24:17**

<sup>17</sup> मैं उसको देखूँगा तो सही, परन्तु अभी नहीं; मैं उसको निहाँगा तो सही, परन्तु समीप होकर नहीं याकूब में से एक तारा उदय होगा, और इस्साएल में से एक राजदण्ड उठेगा; जो मोआब की सीमाओं को चूर कर देगा, और सब शीत के पुत्रों का नाश कर देगा।

**Numbers 24:18**

<sup>18</sup> तब एदोम और सेर्ह भी, जो उसके शत्रु हैं, दोनों उसके वश में पड़ेंगे, और इस्साएल वीरता दिखाता जाएगा।

**Numbers 24:19**

<sup>19</sup> और याकूब ही में से एक अधिपति आएगा जो प्रभुता करेगा, और नगर में से बचे हुओं को भी सत्यानाश करेगा।”

**Numbers 24:20**

<sup>20</sup> फिर उसने अमालेक पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, “अमालेक अन्यजातियों में श्रेष्ठ तो था, परन्तु उसका अन्त विनाश ही है।”

**Numbers 24:21**

<sup>21</sup> फिर उसने केनियों पर दृष्टि करके अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, “तेरा निवास-स्थान अति दृढ़ तो है, और तेरा बसेरा चट्टान पर तो है;

**Numbers 24:22**

<sup>22</sup> तो भी केन उजड़ जाएगा। और अन्त में अश्शूर तुझे बन्दी बनाकर ले आएगा।”

**Numbers 24:23**

<sup>23</sup> फिर उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, “हाय, जब परमेश्वर यह करेगा तब कौन जीवित बचेगा?

**Numbers 24:24**

<sup>24</sup> तो भी कित्तियों के पास से जहाज वाले आकर अश्शूर को और एबेर को भी दुःख देंगे; और अन्त में उसका भी विनाश हो जाएगा।”

**Numbers 24:25**

<sup>25</sup> तब बिलाम चल दिया, और अपने स्थान पर लौट गया; और बालाक ने भी अपना मार्ग लिया।

**Numbers 25:1**

<sup>1</sup> इसाएली शित्तीम में रहते थे, और वे लोग मोआबी लड़कियों के संग कुकर्म करने लगे।

**Numbers 25:2**

<sup>2</sup> और जब उन स्त्रियों ने उन लोगों को अपने देवताओं के यज्ञों में नेवता दिया, तब वे लोग खाकर उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे।

**Numbers 25:3**

<sup>3</sup> इस प्रकार इसाएली बालपोर देवता को पूजने लगे। तब यहोवा का कोप इसाएल पर भड़क उठा;

**Numbers 25:4**

<sup>4</sup> और यहोवा ने मूसा से कहा, “प्रजा के सब प्रधानों को पकड़कर यहोवा के लिये धूप में लटका दे, जिससे मेरा भड़का हुआ कोप इसाएल के ऊपर से दूर हो जाए।”

**Numbers 25:5**

<sup>5</sup> तब मूसा ने इसाएली न्यायियों से कहा, “तुम्हारे जो-जो आदमी बालपोर के संग मिल गए हैं उन्हें घात करो।”

**Numbers 25:6**

<sup>6</sup> जब इसाएलियों की सारी मण्डली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर रो रही थी, तो एक इसाएली पुरुष मूसा और सब लोगों की ओँखों के सामने एक मिद्यानी स्त्री को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया।

**Numbers 25:7**

<sup>7</sup> इसे देखकर एलीआजर का पुत्र पीनहास, जो हारून याजक का पोता था, उसने मण्डली में से उठकर हाथ में एक बरछी ली,

**Numbers 25:8**

<sup>8</sup> और उस इसाएली पुरुष के डेरे में जाने के बाद वह भी भीतर गया, और उस पुरुष और उस स्त्री दोनों के पेट में बरछी बेध दी। इस पर इसाएलियों में जो मरी फैल गई थी वह थम गई।

**Numbers 25:9**

<sup>9</sup> और मरी से चौबीस हजार मनुष्य मर गए।

**Numbers 25:10**

<sup>10</sup> तब यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 25:11**

<sup>11</sup> “हारून याजक का पोता एलीआजर का पुत्र पीनहास, जिसे इस्माएलियों के बीच मेरी जैसी जलन उठी, उसने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहाँ तक दूर किया है, कि मैंने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला।

**Numbers 25:12**

<sup>12</sup> इसलिए तू कह दे, कि मैं उससे शान्ति की वाचा बाँधता हूँ।

**Numbers 25:13**

<sup>13</sup> “और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उसने इस्माएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया।”

**Numbers 25:14**

<sup>14</sup> जो इस्माएली पुरुष मिद्यानी स्त्री के संग मारा गया, उसका नाम जिम्री था, वह सालू का पुत्र और शिमोनियों में से अपने पितरों के घराने का प्रधान था।

**Numbers 25:15**

<sup>15</sup> और जो मिद्यानी स्त्री मारी गई उसका नाम कोजबी था, वह सूर की बेटी थी, जो मिद्यानी पितरों के एक घराने के लोगों का प्रधान था।

**Numbers 25:16**

<sup>16</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 25:17**

<sup>17</sup> “मिद्यानियों को सता, और उन्हें मार;

**Numbers 25:18**

<sup>18</sup> क्योंकि पोर के विषय और कोजबी के विषय वे तुम को छल करके सताते हैं।” कोजबी तो एक मिद्यानी प्रधान की बेटी और मिद्यानियों की जाति बहन थी, और मरी के दिन में पोर के मामले में मारी गई।

**Numbers 26:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा और एलीआजर नामक हारून याजक के पुत्र से कहा,

**Numbers 26:2**

<sup>2</sup> “इस्माएलियों की सारी मण्डली में जितने बीस वर्ष के, या उससे अधिक आयु के होने से इस्माएलियों के बीच युद्ध करने के योग्य हैं, उनके पितरों के घरानों के अनुसार उन सभी की गिनती करो।”

**Numbers 26:3**

<sup>3</sup> अतः मूसा और एलीआजर याजक ने यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर मोआब के अराबा में उनको समझाकर कहा,

**Numbers 26:4**

<sup>4</sup> “बीस वर्ष के और उससे अधिक आयु के लोगों की गिनती लो, जैसे कि यहोवा ने मूसा और इस्माएलियों को मिस्र देश से निकल आने के समय आज्ञा दी थी।”

**Numbers 26:5**

<sup>5</sup> रूबेन जो इस्माएल का जेठा था; उसके ये पुत्र थे; अर्थात् हनोक, जिससे हनोकियों का कुल चला; और पल्लू जिससे पल्लूइयों का कुल चला;

**Numbers 26:6**

<sup>6</sup> हेसोन, जिससे हेसोनियों का कुल चला; और कर्मी, जिससे कर्मियों का कुल चला।

**Numbers 26:7**

<sup>7</sup> रूबेनवाले कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे तैतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष थे।

**Numbers 26:8**

<sup>8</sup> और पल्लू का पुत्र एलीआब था।

**Numbers 26:9**

<sup>9</sup> और एलीआब के पुत्र नमूएल, दातान, और अबीराम थे। ये वहीं दातान और अबीराम हैं जो सभासद थे; और जिस समय कोरह की मण्डली ने यहोवा से झगड़ा किया था, उस समय उस मण्डली में मिलकर उन्होंने भी मूसा और हारून से झगड़े थे;

**Numbers 26:10**

<sup>10</sup> और जब उन ढाई सौ मनुष्यों के आग में भस्म हो जाने से वह मण्डली मिट गई, उसी समय पृथ्वी ने मुँह खोलकर कोरह समेत इनको भी निगल लिया; और वे एक दृष्टान्त ठहरे।

**Numbers 26:11**

<sup>11</sup> परन्तु कोरह के पुत्र तो नहीं मरे थे।

**Numbers 26:12**

<sup>12</sup> शिमोन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् नमूएल, जिससे नमूएलियों का कुल चला; और यामीन, जिससे यामीनियों का कुल चला; और याकीन, जिससे याकीनियों का कुल चला;

**Numbers 26:13**

<sup>13</sup> और जेरह, जिससे जेरहियों का कुल चला; और शाऊल, जिससे शाऊलियों का कुल चला।

**Numbers 26:14**

<sup>14</sup> शिमोनवाले कुल ये ही थे; इनमें से बाईस हजार दो सौ पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:15**

<sup>15</sup> गाद के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सपोन, जिससे सपोनियों का कुल चला; और हाग्गी, जिससे हाग्गियों का कुल चला; और शूनी, जिससे शूनियों का कुल चला; और ओजनी, जिससे ओजनियों का कुल चला;

**Numbers 26:16**

<sup>16</sup> और एरी, जिससे एरियों का कुल चला; और अरोद, जिससे अरोदियों का कुल चला;

**Numbers 26:17**

<sup>17</sup> और अरेली, जिससे अरेलियों का कुल चला।

**Numbers 26:18**

<sup>18</sup> गाद के वंश के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े चालीस हजार पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:19**

<sup>19</sup> और यहूदा के एर और ओनान नामक पुत्र तो हुए, परन्तु वे कनान देश में मर गए।

**Numbers 26:20**

<sup>20</sup> और यहूदा के जिन पुत्रों से उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शेला, जिससे शेलियों का कुल चला; और पेरेस जिससे पेरेसियों का कुल चला; और जेरह, जिससे जेरहियों का कुल चला।

**Numbers 26:21**

<sup>21</sup> और पेरेस के पुत्र ये थे; अर्थात् हेस्सोन, जिससे हेस्सोनियों का कुल चला; और हामूल, जिससे हामूलियों का कुल चला।

**Numbers 26:22**

<sup>22</sup> यहूदियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े छिहत्तर हजार पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:23**

<sup>23</sup> इस्साकार के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् तोला, जिससे तौलियों का कुल चला; और पुव्वा, जिससे पुव्वियों का कुल चला;

**Numbers 26:24**

<sup>24</sup> और याशूब, जिससे याशूबियों का कुल चला; और शिम्रोन, जिससे शिम्रोनियों का कुल चला।

**Numbers 26:25**

<sup>25</sup> इस्साकारियों के कुल ये ही थे; इनमें से चौसठ हजार तीन सौ पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:26**

<sup>26</sup> जबूलून के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् सेरेद जिससे सेरेदियों का कुल चला; और एलोन, जिनसे एलोनियों का कुल चला; और यहलेल, जिससे यहलेलियों का कुल चला।

**Numbers 26:27**

<sup>27</sup> जबूलूनियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े साठ हजार पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:28**

<sup>28</sup> यूसुफ के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे मनश्शे और एप्रैम थे।

**Numbers 26:29**

<sup>29</sup> मनश्शे के पुत्र ये थे; अर्थात् माकीर, जिससे माकीरियों का कुल चला; और माकीर से गिलाद उत्पन्न हुआ; और गिलाद से गिलादियों का कुल चला।

**Numbers 26:30**

<sup>30</sup> गिलाद के तो पुत्र ये थे; अर्थात् ईएजेर, जिससे ईएजेरियों का कुल चला;

**Numbers 26:31**

<sup>31</sup> और हेलेक, जिससे हेलेकियों का कुल चला और अस्सीएल, जिससे अस्सीएलियों का कुल चला; और शेकेम, जिससे शेकेमियों का कुल चला; और शमीदा, जिससे शमीदियों का कुल चला;

**Numbers 26:32**

<sup>32</sup> और हेपेर, जिससे हेपेरियों का कुल चला;

**Numbers 26:33**

<sup>33</sup> और हेपेर के पुत्र सलोफाद के बेटे नहीं, केवल बेटियाँ हुईं; इन बेटियों के नाम महला, नोवा, होगला, मिल्का, और तिर्सा हैं।

**Numbers 26:34**

<sup>34</sup> मनश्शेवाले कुल तो ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे बावन हजार सात सौ पुरुष थे।

**Numbers 26:35**

<sup>35</sup> एप्रैम के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् शूतेलह, जिससे शूतेलहियों का कुल चला; और बेकेर, जिससे बेकेरियों का कुल चला; और तहन जिससे तहनियों का कुल चला।

**Numbers 26:36**

<sup>36</sup> और शूतेलह के यह पुत्र हुआ; अर्थात् एरान, जिससे एरानियों का कुल चला।

**Numbers 26:37**

<sup>37</sup> एप्रैमियों के कुल ये ही थे; इनमें से साढ़े बत्तीस हजार पुरुष गिने गए। अपने कुलों के अनुसार यूसुफ के वंश के लोग ये ही थे।

**Numbers 26:38**

<sup>38</sup> और बिन्यामीन के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् बेला जिससे बैलियों का कुल चला; और अशबेल, जिससे अशबेलियों का कुल चला; और अहीराम, जिससे अहीरामियों का कुल चला;

**Numbers 26:39**

<sup>39</sup> और शपूपाम, जिससे शपूपामियों का कुल चला; और हूपाम, जिससे हूपामियों का कुल चला।

**Numbers 26:40**

<sup>40</sup> और बेला के पुत्र अर्द और नामान थे; और अर्द से अर्दियों का कुल, और नामान से नामानियों का कुल चला।

**Numbers 26:41**

<sup>41</sup> अपने कुलों के अनुसार बिन्यामीनी ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार छः सौ पुरुष थे।

**Numbers 26:42**

<sup>42</sup> दान का पुत्र जिससे उनका कुल निकला यह था; अर्थात् शूहाम, जिससे शूहामियों का कुल चला। और दान का कुल यही था।

**Numbers 26:43**

<sup>43</sup> और शूहामियों में से जो गिने गए उनके कुल में चौसठ हजार चार सौ पुरुष थे।

**Numbers 26:44**

<sup>44</sup> आशेर के पुत्र जिनसे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यिन्ना, जिससे यिन्नियों का कुल चला; यिन्हीं, जिससे यिन्हीयों का कुल चला; और बरीआ, जिससे बरीइयों का कुल चला।

**Numbers 26:45**

<sup>45</sup> फिर बरीआ के ये पुत्र हुए; अर्थात् हेबेर, जिससे हेबेरियों का कुल चला; और मल्कीएल, जिससे मल्कीएलियों का कुल चला।

**Numbers 26:46**

<sup>46</sup> और आशेर की बेटी का नाम सेरह है।

**Numbers 26:47**

<sup>47</sup> आशेरियों के कुल ये ही थे; इनमें से तिरपन हजार चार सौ पुरुष गिने गए।

**Numbers 26:48**

<sup>48</sup> नप्ताली के पुत्र जिससे उनके कुल निकले वे ये थे; अर्थात् यहसेल, जिससे यहसेलियों का कुल चला; और गूनी, जिससे गूनियों का कुल चला;

**Numbers 26:49**

<sup>49</sup> येसेर, जिससे येसेरियों का कुल चला; और शिल्लेम, जिससे शिल्लेमियों का कुल चला।

**Numbers 26:50**

<sup>50</sup> अपने कुलों के अनुसार नप्ताली के कुल ये ही थे; और इनमें से जो गिने गए वे पैतालीस हजार चार सौ पुरुष थे।

**Numbers 26:51**

<sup>51</sup> सब इसाएलियों में से जो गिने गए थे वे ये ही थे; अर्थात् छः लाख एक हजार सात सौ तीस पुरुष थे।

**Numbers 26:52**

<sup>52</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 26:53**

<sup>53</sup> “इनको, इनकी गिनती के अनुसार, वह भूमि इनका भाग होने के लिये बाँट दी जाए।

**Numbers 26:54**

<sup>54</sup> अर्थात् जिस कुल में अधिक हों उनको अधिक भाग, और जिसमें कम हों उनको कम भाग देना; प्रत्येक गोत्र को उसका भाग उसके गिने हुए लोगों के अनुसार दिया जाए।

**Numbers 26:55**

<sup>55</sup> तो भी देश चिट्ठी डालकर बाँटा जाए; इस्साएलियों के पितरों के एक-एक गोत्र का नाम, जैसे-जैसे निकले वैसे-वैसे वे अपना-अपना भाग पाएँ।

**Numbers 26:56**

<sup>56</sup> चाहे बहुतों का भाग हो चाहे थोड़ों का हो, जो-जो भाग बाँटे जाएँ वह चिट्ठी डालकर बाँटे जाएँ।”

**Numbers 26:57**

<sup>57</sup> फिर लेवियों में से जो अपने कुलों के अनुसार गिने गए वे थे हैं; अर्थात् गेशोनियों से निकला हुआ गेशोनियों का कुल; कहात से निकला हुआ कहातियों का कुल; और मरारी से निकला हुआ मरारियों का कुल।

**Numbers 26:58**

<sup>58</sup> लेवियों के कुल ये हैं; अर्थात् लिब्नियों का, हेब्रोनियों का, महलियों का, मूशियों का, और कोरहियों का कुल। और कहात से अम्राम उत्पन्न हुआ।

**Numbers 26:59**

<sup>59</sup> और अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद है, वह लेवी के वंश की थी जो लेवी के वंश में मिस्र देश में उत्पन्न हुई थी; और वह अम्राम से हारून और मूसा और उनकी बहन मिर्याम को भी जनी।

**Numbers 26:60**

<sup>60</sup> और हारून से नादाब, अबीहू, एलीआजर, और ईतामार उत्पन्न हुए।

**Numbers 26:61**

<sup>61</sup> नादाब और अबीहू तो उस समय मर गए थे, जब वे यहोवा के सामने ऊपरी आग ले गए थे।

**Numbers 26:62**

<sup>62</sup> सब लेवियों में से जो गिने गये, अर्थात् जितने पुरुष एक महीने के या उससे अधिक आयु के थे, वे तेईस हजार थे; वे इस्साएलियों के बीच इसलिए नहीं गिने गए, क्योंकि उनको देश का कोई भाग नहीं दिया गया था।

**Numbers 26:63**

<sup>63</sup> मूसा और एलीआजर याजक जिन्होंने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर इस्साएलियों को गिन लिया, उनके गिने हुए लोग इतने ही थे।

**Numbers 26:64**

<sup>64</sup> परन्तु जिन इस्साएलियों को मूसा और हारून याजक ने सीनै के जंगल में गिना था, उनमें से एक भी पुरुष इस समय के गिने हुओं में न था।

**Numbers 26:65**

<sup>65</sup> क्योंकि यहोवा ने उनके विषय कहा था, “वे निश्चय जंगल में मर जाएँगे।” इसलिए यपुत्रे के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़, उनमें से एक भी पुरुष नहीं बचा।

**Numbers 27:1**

<sup>1</sup> तब यूसुफ के पुत्र मनश्शे के वंश के कुलों में से सलोफाद, जो हेपेर का पुत्र, और गिलाद का पोता, और मनश्शे के पुत्र माकीर का परपोता था, उसकी बेटियाँ जिनके नाम महला, नोवा, होगला, मिल्का, और तिर्सा हैं वे पास आईं।

**Numbers 27:2**

<sup>2</sup> और वे मूसा और एलीआजर याजक और प्रधानों और सारी मण्डली के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़ी होकर कहने लगीं,

**Numbers 27:3**

<sup>3</sup> “हमारा पिता जंगल में मर गया; परन्तु वह उस मण्डली में का न था जो कोरह की मण्डली के संग होकर यहोवा के विरुद्ध इकट्ठी हुई थी, वह अपने ही पाप के कारण मरा; और उसके कोई पुत्र न था।

**Numbers 27:4**

<sup>4</sup> तो हमारे पिता का नाम उसके कुल में से पुत्र न होने के कारण क्यों मिट जाए? हमारे चाचाओं के बीच हमें भी कुछ भूमि निज भाग करके दे।”

**Numbers 27:5**

<sup>5</sup> उनकी यह विनती मूसा ने यहोवा को सुनाई।

**Numbers 27:6**

<sup>6</sup> यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 27:7**

<sup>7</sup> “सलोफाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; इसलिए तू उनके चाचाओं के बीच उनको भी अवश्य ही कुछ भूमि निज भाग करके दे, अर्थात् उनके पिता का भाग उनके हाथ सौंप दे।

**Numbers 27:8**

<sup>8</sup> और इसाएलियों से यह कह, ‘यदि कोई मनुष्य बिना पुत्र मर जाए, तो उसका भाग उसकी बेटी के हाथ सौंपना।

**Numbers 27:9**

<sup>9</sup> और यदि उसके कोई बेटी भी न हो, तो उसका भाग उसके भाइयों को देना।

**Numbers 27:10**

<sup>10</sup> और यदि उसके भाई भी न हों, तो उसका भाग चाचाओं को देना।

**Numbers 27:11**

<sup>11</sup> और यदि उसके चाचा भी न हों, तो उसके कुल में से उसका जो कुटुम्बी सबसे समीप हो उनको उसका भाग देना कि वह उसका अधिकारी हो। इसाएलियों के लिये यह न्याय की विधि ठहरेगी, जैसे कि यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी।”

**Numbers 27:12**

<sup>12</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा, “इस अबारीम नामक पर्वत के ऊपर चढ़कर उस देश को देख ले जिसे मैंने इसाएलियों को दिया है।

**Numbers 27:13**

<sup>13</sup> और जब तू उसको देख लेगा, तब अपने भाई हारून के समान तू भी अपने लोगों में जा मिलेगा,

**Numbers 27:14**

<sup>14</sup> क्योंकि सीन नामक जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझसे बलवा किया, और मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया।” (यह मरीबा नामक सोता है जो सीन नामक जंगल के कादेश में है)

**Numbers 27:15**

<sup>15</sup> मूसा ने यहोवा से कहा,

**Numbers 27:16**

<sup>16</sup> “यहोवा, जो सारे प्राणियों की आत्माओं का परमेश्वर है, वह इस मण्डली के लोगों के ऊपर किसी पुरुष को नियुक्त कर दे,

**Numbers 27:17**

<sup>17</sup> जो उसके सामने आया-जाया करे, और उनका निकालने और बैठानेवाला हो; जिससे यहोवा की मण्डली बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों के समान न रहे।”

**Numbers 27:18**

<sup>18</sup> यहोवा ने मूसा से कहा, “तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह तो ऐसा पुरुष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है;

**Numbers 27:19**

<sup>19</sup> और उसको एलीआजर याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उनके सामने उसे आज्ञा दे।

**Numbers 27:20**

<sup>20</sup> और अपनी महिमा में से कुछ उसे दे, जिससे इसाएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे।

**Numbers 27:21**

<sup>21</sup> और वह एलीआजर याजक के सामने खड़ा हुआ करे, और एलीआजर उसके लिये यहोवा से ऊरीम की आज्ञा पूछा करे; और वह इसाएलियों की सारी मण्डली समेत उसके कहने से जाया करे, और उसी के कहने से लौट भी आया करे।”

**Numbers 27:22**

<sup>22</sup> यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने यहोशू को लेकर, एलीआजर याजक और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके,

**Numbers 27:23**

<sup>23</sup> उस पर हाथ रखे, और उसको आज्ञा दी जैसे कि यहोवा ने मूसा के द्वारा कहा था।

**Numbers 28:1**

<sup>1</sup> किर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 28:2**

<sup>2</sup> “इसाएलियों को यह आज्ञा सुना, मेरा चढ़ावा, अर्थात् मुझे सुखदायक सुगन्ध देनेवाला मेरा हव्यरूपी भोजन, तुम लोग मेरे लिये उनके नियत समयों पर चढ़ाने के लिये स्मरण रखना।”

**Numbers 28:3**

<sup>3</sup> और तू उनसे कह: जो-जो तुम्हें यहोवा के लिये चढ़ाना होगा वे ये हैं; अर्थात् नियत होमबलि के लिये एक-एक वर्ष के दो निर्दोष भेड़ी के नर बच्चे प्रतिदिन चढ़ाया करना।

**Numbers 28:4**

<sup>4</sup> एक बच्चे को भोर को और दूसरे को साँझ के समय चढ़ाना;

**Numbers 28:5**

<sup>5</sup> और भेड़ के बच्चे के साथ एक चौथाई हीन कूटकर निकाले हुए तेल से सने हुए एपा के दसवें अंश मैदे का अन्नबलि चढ़ाना।

**Numbers 28:6**

<sup>6</sup> यह नियत होमबलि है, जो सीनै पर्वत पर यहोवा का सुखदायक सुगन्धवाला हव्य होने के लिये ठहराया गया।

**Numbers 28:7**

<sup>7</sup> और उसका अर्ध प्रति एक भेड़ के बच्चे के संग एक चौथाई हीन हो; मदिरा का यह अर्ध यहोवा के लिये पवित्रस्थान में देना।

**Numbers 28:8**

<sup>8</sup> और दूसरे बच्चे को साँझ के समय चढ़ाना; अन्नबलि और अर्ध समेत भोर के होमबलि के समान उसे यहोवा को सुखदायक सुगन्ध देनेवाला हव्य करके चढ़ाना।

**Numbers 28:9**

<sup>9</sup> “फिर विश्रामदिन को दो निर्दोष भेड़ के एक वर्ष के नर बच्चे, और अन्नबलि के लिये तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा अर्ध समेत चढ़ाना।

**Numbers 28:10**

<sup>10</sup> नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा प्रत्येक विश्रामदिन का यही होमबलि ठहरा है।

**Numbers 28:11**

<sup>11</sup> “फिर अपने महीनों के आरम्भ में प्रतिमाह यहोवा के लिये होमबलि चढ़ाना; अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक-एक वर्ष के निर्दोष भेड़ के सात नर बच्चे;

**Numbers 28:12**

<sup>12</sup> और बछड़े के साथ तेल से सना हुआ एपा का तीन दसवाँ अंश मैदा, और उस एक मेढ़े के साथ तेल से सना हुआ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा;

**Numbers 28:13**

<sup>13</sup> और प्रत्येक भेड़ के बच्चे के पीछे तेल से सना हुआ एपा का दसवाँ अंश मैदा, उन सभी को अन्नबलि करके चढ़ाना; वह सुखदायक सुगन्ध देने के लिये होमबलि और यहोवा के लिये हव्य ठहरेगा।

**Numbers 28:14**

<sup>14</sup> और उनके साथ ये अर्ध हों; अर्थात् बछड़े के साथ आधा हीन, मेढ़े के साथ तिहाई हीन, और भेड़ के बच्चे के साथ चौथाई हीन दाखमधु दिया जाए; वर्ष के सब महीनों में से प्रत्येक महीने का यही होमबलि ठहरे।

**Numbers 28:15**

<sup>15</sup> और एक बकरा पापबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया जाए; यह नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा चढ़ाया जाए।

**Numbers 28:16**

<sup>16</sup> “फिर पहले महीने के चौदहवें दिन को यहोवा का फसह हुआ करे।

**Numbers 28:17**

<sup>17</sup> और उसी महीने के पन्द्रहवें दिन को पर्व लगा करे; सात दिन तक अखमीरी रोटी खाई जाए।

**Numbers 28:18**

<sup>18</sup> पहले दिन पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न किया जाए;

**Numbers 28:19**

<sup>19</sup> उसमें तुम यहोवा के लिये हव्य, अर्थात् होमबलि चढ़ाना; अतः दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे हों; ये सब निर्दोष हों;

**Numbers 28:20**

<sup>20</sup> और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवाँ अंश मैदा हो।

**Numbers 28:21**

<sup>21</sup> और सातों भेड़ के बच्चों में से प्रति बच्चे के साथ एपा का दसवाँ अंश चढ़ाना।

**Numbers 28:22**

<sup>22</sup> और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हरे लिये प्रायाश्वित हो।

**Numbers 28:23**

<sup>23</sup> भोर का होमबलि जो नित्य होमबलि ठहरा है, उसके अलावा इनको चढ़ाना।

**Numbers 28:24**

<sup>24</sup> इस रीति से तुम उन सातों दिनों में भी हव्य का भोजन चढ़ाना, जो यहोवा को सुखदायक सुगम्थ देने के लिये हो; यह नित्य होमबलि और उसके अर्ध के अलावा चढ़ाया जाए।

**Numbers 28:25**

<sup>25</sup> और सातवें दिन भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उस दिन परिश्रम का कोई काम न करना।

**Numbers 28:26**

<sup>26</sup> “फिर पहली उपज के दिन में, जब तुम अपने कटनी के पर्व में यहोवा के लिये नया अन्नबलि चढ़ाओगे, तब भी तुम्हारी पवित्र सभा हो; और परिश्रम का कोई काम न करना।

**Numbers 28:27**

<sup>27</sup> और एक होमबलि चढ़ाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगम्थ हो; अर्थात् दो बछड़े, एक मेढ़ा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे;

**Numbers 28:28**

<sup>28</sup> और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेढ़े के संग एपा का दो दसवाँ अंश,

**Numbers 28:29**

<sup>29</sup> और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना।

**Numbers 28:30**

<sup>30</sup> और एक बकरा भी चढ़ाना, जिससे तुम्हारे लिये प्रायश्चित हो।

**Numbers 28:31**

<sup>31</sup> ये सब निर्दोष हों; और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा इसको भी चढ़ाना।

**Numbers 29:1**

<sup>1</sup> “फिर सातवें महीने के पहले दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना। वह तुम्हारे लिये जयजयकार का नरसिंगा फूँकने का दिन ठहरा है;

**Numbers 29:2**

<sup>2</sup> तुम होमबलि चढ़ाना, जिससे यहोवा के लिये सुखदायक सुगम्थ हो; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक-एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के नर बच्चे;

**Numbers 29:3**

<sup>3</sup> और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दसवाँ अंश,

**Numbers 29:4**

<sup>4</sup> और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के साथ एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना।

**Numbers 29:5**

<sup>5</sup> और एक बकरा भी पापबलि करके चढ़ाना, जिससे तुम्हारे लिये प्रायश्चित हो।

**Numbers 29:6**

<sup>6</sup> इन सभी से अधिक नये चाँद का होमबलि और उसका अन्नबलि, और नित्य होमबलि और उसका अन्नबलि, और उन सभी के अर्ध भी उनके नियम के अनुसार सुखदायक सुगम्थ देने के लिये यहोवा के हव्य करके चढ़ाना।

**Numbers 29:7**

<sup>7</sup> “फिर उसी सातवें महीने के दसवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; तुम उपवास करके अपने-अपने प्राण को दुःख देना, और किसी प्रकार का काम-काज न करना;

**Numbers 29:8**

<sup>8</sup> और यहोवा के लिये सुखदायक सुगम्भ देने को होमबलि; अर्थात् एक बछड़ा, एक मेढ़ा, और एक-एक वर्ष के सात भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना; फिर ये सब निर्दोष हों;

**Numbers 29:9**

<sup>9</sup> और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और मेढ़े के साथ एपा का दो दसवाँ अंश,

**Numbers 29:10**

<sup>10</sup> और सातों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के पीछे एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना।

**Numbers 29:11**

<sup>11</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये सब प्रायश्चित्त के पापबलि और नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि के, और उन सभी के अर्धों के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:12**

<sup>12</sup> “फिर सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन को तुम्हारी पवित्र सभा हो; और उसमें परिश्रम का कोई काम न करना, और सात दिन तक यहोवा के लिये पर्व मानना;

**Numbers 29:13**

<sup>13</sup> तुम होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगम्भ देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; अर्थात् तेरह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह भेड़ के नर बच्चे; ये सब निर्दोष हों;

**Numbers 29:14**

<sup>14</sup> और उनका अन्नबलि तेल से सने हुए मैदे का हो; अर्थात् तेरहों बछड़ों में से एक-एक बछड़े के साथ एपा का तीन दसवाँ अंश, और दोनों मेढ़ों में से एक-एक मेढ़े के साथ एपा का दो दसवाँ अंश,

**Numbers 29:15**

<sup>15</sup> और चौदहों भेड़ के बच्चों में से एक-एक बच्चे के साथ एपा का दसवाँ अंश मैदा चढ़ाना।

**Numbers 29:16**

<sup>16</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:17**

<sup>17</sup> “फिर दूसरे दिन बारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना;

**Numbers 29:18**

<sup>18</sup> और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:19**

<sup>19</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:20**

<sup>20</sup> “फिर तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, और दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना;

**Numbers 29:21**

<sup>21</sup> और बछड़ों, और मेढ़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:22**

<sup>22</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:23**

<sup>23</sup> “फिर चौथे दिन दस बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना;

**Numbers 29:24**

<sup>24</sup> बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:25**

<sup>25</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:26**

<sup>26</sup> “फिर पाँचवें दिन नौ बछड़े, दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना;

**Numbers 29:27**

<sup>27</sup> और बछड़ों, मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:28**

<sup>28</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:29**

<sup>29</sup> “फिर छठवें दिन आठ बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना;

**Numbers 29:30**

<sup>30</sup> और बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:31**

<sup>31</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:32**

<sup>32</sup> “फिर सातवें दिन सात बछड़े, और दो मेड़े, और एक-एक वर्ष के चौदह निर्दोष भेड़ के नर बच्चे चढ़ाना।

**Numbers 29:33**

<sup>33</sup> और बछड़ों, और मेड़ों, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:34**

<sup>34</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:35**

<sup>35</sup> “फिर आठवें दिन तुम्हारी एक महासभा हो; उसमें परिश्रम का कोई काम न करना,

**Numbers 29:36**

<sup>36</sup> और उसमें होमबलि यहोवा को सुखदायक सुगम्य देने के लिये हव्य करके चढ़ाना; वह एक बछड़े, और एक मेड़े, और एक-एक वर्ष के सात निर्दोष भेड़ के नर बच्चों का हो;

**Numbers 29:37**

<sup>37</sup> बछड़े, और मेढ़े, और भेड़ के बच्चों के साथ उनके अन्नबलि और अर्ध, उनकी गिनती के अनुसार, और नियम के अनुसार चढ़ाना।

**Numbers 29:38**

<sup>38</sup> और पापबलि के लिये एक बकरा भी चढ़ाना; ये नित्य होमबलि और उसके अन्नबलि और अर्ध के अलावा चढ़ाए जाएँ।

**Numbers 29:39**

<sup>39</sup> “अपनी मन्त्रतों और स्वेच्छाबलियों के अलावा, अपने-अपने नियत समयों में, ये ही होमबलि, अन्नबलि, अर्ध, और मेलबलि, यहोवा के लिये चढ़ाना।”

**Numbers 29:40**

<sup>40</sup> यह सारी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी जो उसने इसाएलियों को सुनाई।

**Numbers 30:1**

<sup>1</sup> फिर मूसा ने इसाएली गोत्रों के मुख्य-मुख्य पुरुषों से कहा, “यहोवा ने यह आज्ञा दी है:

**Numbers 30:2**

<sup>2</sup> जब कोई पुरुष यहोवा की मन्त्रत माने, या अपने आपको वाचा से बाँधने के लिये शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुँह से निकला हो उसके अनुसार वह करे।

**Numbers 30:3**

<sup>3</sup> और जब कोई स्त्री अपनी कुँवारी अवस्था में, अपने पिता के घर में रहते हुए, यहोवा की मन्त्रत माने, व अपने को वाचा से बाँधे,

**Numbers 30:4**

<sup>4</sup> तो यदि उसका पिता उसकी मन्त्रत या उसका वह वचन सुनकर, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी सब मन्त्रतें स्थिर बनी रहें, और कोई बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह भी स्थिर रहे।

**Numbers 30:5**

<sup>5</sup> परन्तु यदि उसका पिता उसकी सुनकर उसी दिन उसको मना करे, तो उसकी मन्त्रतें या और प्रकार के बन्धन, जिनसे उसने अपने आपको बाँधा हो, उनमें से एक भी स्थिर न रहे, और यहोवा यह जानकर, कि उस स्त्री के पिता ने उसे मना कर दिया है, उसका यह पाप क्षमा करेगा।

**Numbers 30:6**

<sup>6</sup> फिर यदि वह पति के अधीन हो और मन्त्रत माने, या बिना सोच विचार किए ऐसा कुछ कहे जिससे वह बन्धन में पड़े,

**Numbers 30:7**

<sup>7</sup> और यदि उसका पति सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे; तब तो उसकी मन्त्रतें स्थिर रहें, और जिन बन्धनों से उसने अपने आपको बाँधा हो वह भी स्थिर रहें।

**Numbers 30:8**

<sup>8</sup> परन्तु यदि उसका पति सुनकर उसी दिन उसे मना कर दे, तो जो मन्त्रत उसने मानी है, और जो बात बिना सोच-विचार किए कहने से उसने अपने आपको वाचा से बाँधा हो, वह टूट जाएगी; और यहोवा उस स्त्री का पाप क्षमा करेगा।

**Numbers 30:9**

<sup>9</sup> फिर विधवा या त्यागी हुई स्त्री की मन्त्रत, या किसी प्रकार की वाचा का बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, तो वह स्थिर ही रहे।

**Numbers 30:10**

<sup>10</sup> फिर यदि कोई स्त्री अपने पति के घर में रहते मन्त्रत माने, या शपथ खाकर अपने आपको बाँधे,

### **Numbers 30:11**

<sup>11</sup> और उसका पति सुनकर कुछ न कहे, और न उसे मना करे; तब तो उसकी सब मन्त्रतें स्थिर बनी रहें, और हर एक बन्धन क्यों न हो, जिससे उसने अपने आपको बाँधा हो, वह स्थिर रहे।

### **Numbers 30:12**

<sup>12</sup> परन्तु यदि उसका पति उसकी मन्त्रत आदि सुनकर उसी दिन पूरी रीति से तोड़ दे, तो उसकी मन्त्रतें आदि, जो कुछ उसके मुँह से अपने बन्धन के विषय निकला हो, उसमें से एक बात भी स्थिर न रहे; उसके पति ने सब तोड़ दिया है; इसलिए यहोवा उस स्त्री का वह पाप क्षमा करेगा।

### **Numbers 30:13**

<sup>13</sup> कोई भी मन्त्रत या शपथ क्यों न हो, जिससे उस स्त्री ने अपने जीव को दुःख देने की वाचा बाँधी हो, उसको उसका पति चाहे तो दृढ़ करे, और चाहे तो तोड़े;

### **Numbers 30:14**

<sup>14</sup> अर्थात् यदि उसका पति दिन प्रतिदिन उससे कुछ भी न कहे, तो वह उसको सब मन्त्रतें आदि बन्धनों को जिनसे वह बाँधी हो दृढ़ कर देता है; उसने उनको दृढ़ किया है, क्योंकि सुनने के दिन उसने कुछ नहीं कहा।

### **Numbers 30:15**

<sup>15</sup> और यदि वह उन्हें सुनकर बहुत दिन पश्चात् तोड़ दे, तो अपनी स्त्री के अधर्म का भार वही उठाएगा।"

### **Numbers 30:16**

<sup>16</sup> पति-पत्नी के बीच, और पिता और उसके घर में रहती हुई कुँवारी बेटी के बीच, जिन विधियों की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी वे ये ही हैं।

### **Numbers 31:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

### **Numbers 31:2**

<sup>2</sup> "मिद्यानियों से इसाएलियों का पलटा लो; उसके बाद तू अपने लोगों में जा मिलेगा।"

### **Numbers 31:3**

<sup>3</sup> तब मूसा ने लोगों से कहा, "अपने में से पुरुषों को युद्ध के लिये हथियार धारण कराओ कि वे मिद्यानियों पर चढ़कर उनसे यहोवा का पलटा लें।

### **Numbers 31:4**

<sup>4</sup> इसाएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुषों को युद्ध करने के लिये भेजो।"

### **Numbers 31:5**

<sup>5</sup> तब इसाएल के सब गोत्रों में से प्रत्येक गोत्र के एक-एक हजार पुरुष चुने गये, अर्थात् युद्ध के लिये हथियार-बन्द बारह हजार पुरुष।

### **Numbers 31:6**

<sup>6</sup> प्रत्येक गोत्र में से उन हजार-हजार पुरुषों को, और एलीआजर याजक के पुत्र पीनहास को, मूसा ने युद्ध करने के लिये भेजा, और पीनहास के हाथ में पवित्रस्थान के पात्र और वे तुरहियां थीं जो साँस बाँध बाँधकर फूँकी जाती थीं।

### **Numbers 31:7**

<sup>7</sup> और जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसके अनुसार उन्होंने मिद्यानियों से युद्ध करके सब पुरुषों को घात किया।

### **Numbers 31:8**

<sup>8</sup> और शेष मारे हुओं को छोड़ उन्होंने एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा नामक मिद्यान के पाँचों राजाओं को घात किया; और बोर के पुत्र बिलाम को भी उन्होंने तलवार से घात किया।

**Numbers 31:9**

<sup>9</sup> और इस्साएलियों ने मिद्यानी स्त्रियों को बाल-बच्चों समेत बन्दी बना लिया; और उनके गाय-बैल, भेड़-बकरी, और उनकी सारी सम्पत्ति को लूट लिया।

**Numbers 31:10**

<sup>10</sup> और उनके निवास के सब नगरों, और सब छावनियों को फूँक दिया;

**Numbers 31:11**

<sup>11</sup> तब वे, क्या मनुष्य क्या पशु, सब बन्दियों और सारी लूट-पाट को लेकर

**Numbers 31:12**

<sup>12</sup> यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, मोआब के अराबा में, छावनी के निकट, मूसा और एलीआजर याजक और इस्साएलियों की मण्डली के पास आए।

**Numbers 31:13**

<sup>13</sup> तब मूसा और एलीआजर याजक और मण्डली के सब प्रधान छावनी के बाहर उनका स्वागत करने को निकले।

**Numbers 31:14**

<sup>14</sup> और मूसा सहस्रपति-शतपति आदि, सेनापतियों से, जो युद्ध करके लौटे आते थे क्रोधित होकर कहने लगा,

**Numbers 31:15**

<sup>15</sup> “क्या तुम ने सब स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया?

**Numbers 31:16**

<sup>16</sup> देखो, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्साएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं स्त्रियों ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली।

**Numbers 31:17**

<sup>17</sup> इसलिए अब बाल-बच्चों में से हर एक लड़के को, और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो उन सभी को घात करो।

**Numbers 31:18**

<sup>18</sup> परन्तु जितनी लड़कियों ने पुरुष का मुँह न देखा हो उन सभी को तुम अपने लिये जीवित रखो।

**Numbers 31:19**

<sup>19</sup> और तुम लोग सात दिन तक छावनी के बाहर रहो, और तुम में से जितनों ने किसी प्राणी को घात किया, और जितनों ने किसी मरे हुए को छुआ हो, वे सब अपने-अपने बन्दियों समेत तीसरे और सातवें दिनों में अपने-अपने को पाप छुड़ाकर पावन करें।

**Numbers 31:20**

<sup>20</sup> और सब वस्त्रों, और चमड़े की बनी हुई सब वस्तुओं, और बकरी के बालों की और लकड़ी की बनी हुई सब वस्तुओं को पावन कर लो।”

**Numbers 31:21**

<sup>21</sup> तब एलीआजर याजक ने सेना के उन पुरुषों से जो युद्ध करने गए थे कहा, “व्यवस्था की जिस विधि की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी है वह यह है:

**Numbers 31:22**

<sup>22</sup> सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन, और सीसा,

**Numbers 31:23**

<sup>23</sup> जो कुछ आग में ठहर सके उसको आग में डालो, तब वह शुद्ध ठहरेगा; तो भी वह अशुद्धता से छुड़ानेवाले जल के द्वारा पावन किया जाए; परन्तु जो कुछ आग में न ठहर सके उसे जल में डुबाओ।

**Numbers 31:24**

<sup>24</sup> और सातवें दिन अपने वस्तों को धोना, तब तुम शुद्ध ठहरोगे; और तब छावनी में आना।”

**Numbers 31:25**

<sup>25</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 31:26**

<sup>26</sup> “एलीआजर याजक और मण्डली के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को साथ लेकर तू लूट के मनुष्यों और पशुओं की गिनती कर;

**Numbers 31:27**

<sup>27</sup> तब उनको आधा-आधा करके एक भाग उन सिपाहियों को जो युद्ध करने को गए थे, और दूसरा भाग मण्डली को दे।

**Numbers 31:28**

<sup>28</sup> फिर जो सिपाही युद्ध करने को गए थे, उनके आधे में से यहोवा के लिये, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ

**Numbers 31:29**

<sup>29</sup> पाँच सौ के पीछे एक को कर मानकर ले ले; और यहोवा की भेट करके एलीआजर याजक को दे दे।

**Numbers 31:30**

<sup>30</sup> फिर इसाएलियों के आधे में से, क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या गदहे, क्या भेड़-बकरियाँ, क्या किसी प्रकार का पशु हो, पचास के पीछे एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लेवियों को दे।”

**Numbers 31:31**

<sup>31</sup> यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी मूसा और एलीआजर याजक ने किया।

**Numbers 31:32**

<sup>32</sup> और जो वस्तुएँ सेना के पुरुषों ने अपने-अपने लिये लूट ली थीं उनसे अधिक की लूट यह थी; अर्थात् छः लाख पचहत्तर हजार भेड़-बकरियाँ,

**Numbers 31:33**

<sup>33</sup> बहत्तर हजार गाय बैल,

**Numbers 31:34**

<sup>34</sup> इक्सठ हजार गदहे,

**Numbers 31:35**

<sup>35</sup> और मनुष्यों में से जिन स्त्रियों ने पुरुष का मुँह नहीं देखा था वह सब बत्तीस हजार थीं।

**Numbers 31:36**

<sup>36</sup> और इसका आधा, अर्थात् उनका भाग जो युद्ध करने को गए थे, उसमें भेड़-बकरियाँ तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार,

**Numbers 31:37**

<sup>37</sup> जिनमें से पौने सात सौ भेड़-बकरियाँ यहोवा का कर ठहरीं।

**Numbers 31:38**

<sup>38</sup> और गाय-बैल छत्तीस हजार, जिनमें से बहत्तर यहोवा का कर ठहरे।

**Numbers 31:39**

<sup>39</sup> और गदहे साढ़े तीस हजार, जिनमें से इक्सठ यहोवा का कर ठहरे।

**Numbers 31:40**

<sup>40</sup> और मनुष्य सोलह हजार जिनमें से बत्तीस प्राणी यहोवा का कर ठहरे।

**Numbers 31:41**

<sup>41</sup> इस कर को जो यहोवा की भेंट थी मूसा ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार एलीआजर याजक को दिया।

**Numbers 31:42**

<sup>42</sup> इस्राएलियों की मण्डली का आधा भाग, जिसे मूसा ने युद्ध करनेवाले पुरुषों के पास से अलग किया था

**Numbers 31:43**

<sup>43</sup> तीन लाख साढ़े सैंतीस हजार भेड़-बकरियाँ

**Numbers 31:44**

<sup>44</sup> छत्तीस हजार गाय-बैल,

**Numbers 31:45**

<sup>45</sup> साढ़े तीस हजार गदहे,

**Numbers 31:46**

<sup>46</sup> और सौलह हजार मनुष्य हुए।

**Numbers 31:47**

<sup>47</sup> इस आधे में से, यहोवा की आज्ञा के अनुसार मूसा ने, क्या मनुष्य क्या पशु पचास में से एक लेकर यहोवा के निवास की रखवाली करनेवाले लैवियों को दिया।

**Numbers 31:48**

<sup>48</sup> तब सहस्रपति-शतपति आदि, जो सरदार सेना के हजारों के ऊपर नियुक्त थे, वे मूसा के पास आकर कहने लगे,

**Numbers 31:49**

<sup>49</sup> “जो सिपाही हमारे अधीन थे उनकी तेरे दासों ने गिनती ली, और उनमें से एक भी नहीं घटा।

**Numbers 31:50**

<sup>50</sup> इसलिए पायजेब, कड़े, मुंदरियाँ, बालियाँ, बाजूबन्द, सोने के जो गहने, जिसने पाया है, उनको हम यहोवा के सामने अपने प्राणों के निमित्त प्रायश्चित्त करने को यहोवा की भेंट करके ले आए हैं।”

**Numbers 31:51**

<sup>51</sup> तब मूसा और एलीआजर याजक ने उनसे वे सब सोने के नकाशीदार गहने ले लिए।

**Numbers 31:52**

<sup>52</sup> और सहस्रपतियों और शतपतियों ने जो भेंट का सोना यहोवा की भेंट करके दिया वह सब सोलह हजार साढ़े सात सौ शेर्कल का था।

**Numbers 31:53**

<sup>53</sup> (योद्धाओं ने तो अपने-अपने लिये लूट ले ली थी।)

**Numbers 31:54**

<sup>54</sup> यह सोना मूसा और एलीआजर याजक ने सहस्रपतियों और शतपतियों से लेकर मिलापवाले तम्बू में पहुँचा दिया, कि इस्राएलियों के लिये यहोवा के सामने स्मरण दिलानेवाली वस्तु ठहरे।

**Numbers 32:1**

<sup>1</sup> रूबेनियों और गादियों के पास बहुत से जानवर थे। जब उन्होंने याजेर और गिलाद देशों को देखकर विचार किया, कि वह पशुओं के योग्य देश है,

**Numbers 32:2**

<sup>2</sup> तब मूसा और एलीआजर याजक और मण्डली के प्रधानों के पास जाकर कहने लगे,

**Numbers 32:3**

<sup>3</sup> “अतारोत, दीबोन, याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम, नबो, और बोन नगरों का देश

**Numbers 32:4**

<sup>4</sup> जिस पर यहोवा ने इस्राएल की मण्डली को विजय दिलवाई है, वह पशुओं के योग्य है; और तेरे दासों के पास पशु हैं।”

**Numbers 32:5**

<sup>5</sup> फिर उन्होंने कहा, “यदि तेरा अनुग्रह तेरे दासों पर हो, तो यह देश तेरे दासों को मिले कि उनकी निज भूमि हो; हमें यरदन पार न ले चल।”

**Numbers 32:6**

<sup>6</sup> मूसा ने गादियों और रूबेनियों से कहा, “जब तुम्हारे भाई युद्ध करने को जाएँगे तब क्या तुम यहाँ बैठे रहोगे?

**Numbers 32:7**

<sup>7</sup> और इस्राएलियों से भी उस पार के देश जाने के विषय, जो यहोवा ने उन्हें दिया है, तुम क्यों अस्वीकार करवाते हो?

**Numbers 32:8**

<sup>8</sup> जब मैंने तुम्हारे बापदादों को कादेशबर्ने से कनान देश देखने के लिये भेजा, तब उन्होंने भी ऐसा ही किया था।

**Numbers 32:9**

<sup>9</sup> अर्थात् जब उन्होंने एशकोल नामक घाटी तक पहुँचकर देश को देखा, तब इस्राएलियों से उस देश के विषय जो यहोवा ने उन्हें दिया था अस्वीकार करा दिया।

**Numbers 32:10**

<sup>10</sup> इसलिए उस समय यहोवा ने कोप करके यह शपथ खाई,

**Numbers 32:11**

<sup>11</sup> निःसन्देह जो मनुष्य मिस्र से निकल आए हैं उनमें से, जितने बीस वर्ष के या उससे अधिक आयु के हैं, वे उस देश को देखने न पाएँगे, जिसके देने की शपथ मैंने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से खाई है, क्योंकि वे मेरे पीछे पूरी रीति से नहीं हो लिये;

**Numbers 32:12**

<sup>12</sup> परन्तु यपुत्रे कनजी का पुत्र कालेब, और नून का पुत्र यहोशू, ये दोनों जो मेरे पीछे पूरी रीति से हो लिये हैं ये उसे देखने पाएँगे।”

**Numbers 32:13**

<sup>13</sup> अतः यहोवा का कोप इस्राएलियों पर भड़का, और जब तक उस पीढ़ी के सब लोगों का अन्त न हुआ, जिन्होंने यहोवा के प्रति बुरा किया था, तब तक अर्थात् चालीस वर्ष तक वह उन्हें जंगल में मारे-मारे फिराता रहा।

**Numbers 32:14**

<sup>14</sup> और सुनो, तुम लोग उन पापियों के बच्चे होकर इसलिए अपने बापदादों के स्थान पर प्रगट हुए हो, कि इस्राएल के विरुद्ध यहोवा के भड़के हुए कोप को और भी भड़काओ!

**Numbers 32:15**

<sup>15</sup> यदि तुम उसके पीछे चलने से फिर जाओ, तो वह फिर हम सभी को जंगल में छोड़ देगा; इस प्रकार तुम इन सारे लोगों का नाश करा ओगे।”

**Numbers 32:16**

<sup>16</sup> तब उन्होंने मूसा के और निकट आकर कहा, “हम अपने पशुओं के लिये यहाँ भेड़शालाएँ बनाएँगे, और अपने बाल-बच्चों के लिये यहाँ नगर बसाएँगे,

**Numbers 32:17**

<sup>17</sup> परन्तु आप इस्राएलियों के आगे-आगे हथियार-बन्द तब तक चलेंगे, जब तक उनके उनके स्थान में न पहुँचा दें; परन्तु

हमारे बाल-बच्चे इस देश के निवासियों के डर से गढ़वाले नगरों में रहेंगे।

### **Numbers 32:18**

<sup>18</sup> परन्तु जब तक इसाएली अपने-अपने भाग के अधिकारी न हों तब तक हम अपने घरों को न लौटेंगे।

### **Numbers 32:19**

<sup>19</sup> हम उनके साथ यरदन पार या कहीं आगे अपना भाग न लेंगे, क्योंकि हमारा भाग यरदन के इसी पार पूर्व की ओर मिला है।"

### **Numbers 32:20**

<sup>20</sup> तब मूसा ने उनसे कहा, "यदि तुम ऐसा करो, अर्थात् यदि तुम यहोवा के आगे-आगे युद्ध करने को हथियार बाँधो।

### **Numbers 32:21**

<sup>21</sup> और हर एक हथियार-बन्द यरदन के पार तब तक चले, जब तक यहोवा अपने आगे से अपने शत्रुओं को न निकाले

### **Numbers 32:22**

<sup>22</sup> और देश यहोवा के वश में न आए; तो उसके पीछे तुम यहाँ लौटोगे, और यहोवा के और इसाएल के विषय निर्दोष ठहरोगे; और यह देश यहोवा के प्रति तुम्हारी निज भूमि ठहरेगा।

### **Numbers 32:23**

<sup>23</sup> और यदि तुम ऐसा न करो, तो यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरोगे; और जान रखो कि तुम को तुम्हारा पाप लगेगा।

### **Numbers 32:24**

<sup>24</sup> तुम अपने बाल-बच्चों के लिये नगर बसाओ, और अपनी भेड़-बकरियों के लिये भेड़शालाएँ बनाओ; और जो तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो।"

### **Numbers 32:25**

<sup>25</sup> तब गादियों और रूबेनियों ने मूसा से कहा, "अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार तेरे दास करेंगे।

### **Numbers 32:26**

<sup>26</sup> हमारे बाल-बच्चे, स्त्रियाँ, भेड़-बकरी आदि, सब पशु तो यहाँ गिलाद के नगरों में रहेंगे;

### **Numbers 32:27**

<sup>27</sup> परन्तु अपने प्रभु के कहे के अनुसार तेरे दास सब के सब युद्ध के लिये हथियार-बन्द यहोवा के आगे-आगे लड़ने को पार जाएँगे।"

### **Numbers 32:28**

<sup>28</sup> "तब मूसा ने उनके विषय में एलीआजर याजक, और नून के पुत्र यहोशू और इसाएलियों के गोत्रों के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुषों को यह आज्ञा दी,

### **Numbers 32:29**

<sup>29</sup> कि यदि सब गादी और रूबेनी पुरुष युद्ध के लिये हथियार-बन्द तुम्हारे संग यरदन पार जाएँ, और देश तुम्हारे वश में आ जाए, तो गिलाद देश उनकी निज भूमि होने को उहें देना।

### **Numbers 32:30**

<sup>30</sup> परन्तु यदि वे तुम्हारे संग हथियार-बन्द पार न जाएँ, तो उनकी निज भूमि तुम्हारे बीच कनान देश में ठहरे।"

### **Numbers 32:31**

<sup>31</sup> तब गादी और रूबेनी बोल उठे, "यहोवा ने जैसा तेरे दासों से कहलाया है वैसा ही हम करेंगे।

### **Numbers 32:32**

<sup>32</sup> हम हथियार-बन्द यहोवा के आगे-आगे उस पार कनान देश में जाएँगे, परन्तु हमारी निज भूमि यरदन के इसी पार रहे।"

**Numbers 32:33**

<sup>33</sup> तब मूसा ने गादियों और रूबेनियों को, और यूसुफ के पुत्र मनश्शे के आधे गोत्रियों को एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग, दोनों के राज्यों का देश, नगरों, और उनके आस-पास की भूमि समेत दे दिया।

**Numbers 32:34**

<sup>34</sup> तब गादियों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर,

**Numbers 32:35**

<sup>35</sup> अत्रौत, शोपान, याजेर, योगबहा,

**Numbers 32:36**

<sup>36</sup> बेतनिम्मा, और बेत-हारन नामक नगरों को दृढ़ किया, और उनमें भेड़-बकरियों के लिये भेड़शाला बनाए।

**Numbers 32:37**

<sup>37</sup> और रूबेनियों ने हेशबोन, एलाले, और कियर्तैम को,

**Numbers 32:38**

<sup>38</sup> फिर नबो और बालमोन के नाम बदलकर उनको, और सिबमा को दृढ़ किया; और उन्होंने अपने दृढ़ किए हुए नगरों के और-और नाम रखे।

**Numbers 32:39**

<sup>39</sup> और मनश्शे के पुत्र माकीर के वंशवालों ने गिलाद देश में जाकर उसे ले लिया, और जो एमोरी उसमें रहते थे उनको निकाल दिया।

**Numbers 32:40**

<sup>40</sup> तब मूसा ने मनश्शे के पुत्र माकीर के वंश को गिलाद दे दिया, और वे उसमें रहने लगे।

**Numbers 32:41**

<sup>41</sup> और मनश्शेर्ई याईर ने जाकर गिलाद की कितनी बस्तियाँ ले लीं, और उनके नाम हव्वोत्याईर रखे।

**Numbers 32:42**

<sup>42</sup> और नोबह ने जाकर गाँवों समेत कनात को ले लिया, और उसका नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

**Numbers 33:1**

<sup>1</sup> जब से इस्माएली मूसा और हारून की अगुआई में दल बाँधकर मिस्र देश से निकले, तब से उनके ये पड़ाव हुए।

**Numbers 33:2**

<sup>2</sup> मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उनके कूच उनके पड़ावों के अनुसार लिख दिए; और वे ये हैं।

**Numbers 33:3**

<sup>3</sup> पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को उन्होंने रामसेस से कूच किया; फसह के दूसरे दिन इस्माएली सब मिस्रियों के देखते बेखटके निकल गए,

**Numbers 33:4**

<sup>4</sup> जबकि मिस्री अपने सब पहिलौठों को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था, और उसने उनके देवताओं को भी दण्ड दिया था।

**Numbers 33:5**

<sup>5</sup> इस्माएलियों ने रामसेस से कूच करके सुक्कोत में डेरे डाले।

**Numbers 33:6**

<sup>6</sup> और सुक्कोत से कूच करके एताम में, जो जंगल के छोर पर है, डेरे डाले।

**Numbers 33:7**

<sup>7</sup> और एताम से कूच करके वे पीहहीरोत को मुड़ गए, जो बाल-सपोन के सामने हैं; और मिग्दोल के सामने डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:8**

<sup>8</sup> तब वे पीहहीरोत के सामने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल में गए, और एताम नामक जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले।

**Numbers 33:9**

<sup>9</sup> फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले, और उन्होंने वहाँ डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:10**

<sup>10</sup> तब उन्होंने एलीम से कूच करके लाल समुद्र के तट पर डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:11**

<sup>11</sup> और लाल समुद्र से कूच करके सीन नामक जंगल में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:12**

<sup>12</sup> फिर सीन नामक जंगल से कूच करके उन्होंने दोपका में डेरा किया।

**Numbers 33:13**

<sup>13</sup> और दोपका से कूच करके आलूश में डेरा किया।

**Numbers 33:14**

<sup>14</sup> और आलूश से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहाँ उन लोगों को पीने का पानी न मिला।

**Numbers 33:15**

<sup>15</sup> फिर उन्होंने रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे डाले।

**Numbers 33:16**

<sup>16</sup> और सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोतहत्तावा में डेरा किया।

**Numbers 33:17**

<sup>17</sup> और किब्रोतहत्तावा से कूच करके हसेरोत में डेरे डाले।

**Numbers 33:18**

<sup>18</sup> और हसेरोत से कूच करके रित्मा में डेरे डाले।

**Numbers 33:19**

<sup>19</sup> फिर उन्होंने रित्मा से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:20**

<sup>20</sup> और रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिङ्गा में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:21**

<sup>21</sup> और लिङ्गा से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:22**

<sup>22</sup> और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा किया।

**Numbers 33:23**

<sup>23</sup> और कहेलाता से कूच करके शोपेर पर्वत के पास डेरा किया।

**Numbers 33:24**

<sup>24</sup> फिर उन्होंने शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया।

**Numbers 33:25**

<sup>25</sup> और हरादा से कूच करके मखेलोत में डेरा किया।

**Numbers 33:26**

<sup>26</sup> और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:27**

<sup>27</sup> और तहत से कूच करके तेरह में डेरे डाले।

**Numbers 33:28**

<sup>28</sup> और तेरह से कूच करके मिल्का में डेरे डाले।

**Numbers 33:29**

<sup>29</sup> फिर मिल्का से कूच करके उन्होंने हशमोना में डेरे डाले।

**Numbers 33:30**

<sup>30</sup> और हशमोना से कूच करके मोसेरोत में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:31**

<sup>31</sup> और मोसेरोत से कूच करके याकानियों के बीच डेरा किया।

**Numbers 33:32**

<sup>32</sup> और याकानियों के बीच से कूच करके होर्मिदगाद में डेरा किया।

**Numbers 33:33**

<sup>33</sup> और होर्मिदगाद से कूच करके योतबाता में डेरा किया।

**Numbers 33:34**

<sup>34</sup> और योतबाता से कूच करके अब्रोना में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:35**

<sup>35</sup> और अब्रोना से कूच करके एस्पोनगेबेर में डेरे खड़े किए।

**Numbers 33:36**

<sup>36</sup> और एस्पोनगेबेर से कूच करके उन्होंने सीन नामक जंगल के कादेश में डेरा किया।

**Numbers 33:37**

<sup>37</sup> फिर कादेश से कूच करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश की सीमा पर है, डेरे डाले।

**Numbers 33:38**

<sup>38</sup> वहाँ इस्माएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहाँ मर गया।

**Numbers 33:39**

<sup>39</sup> और जब हारून होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेर्विस वर्ष का था।

**Numbers 33:40**

<sup>40</sup> और अराद का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्षिण भाग में रहता था, उसने इस्माएलियों के आने का समाचार पाया।

**Numbers 33:41**

<sup>41</sup> तब इस्माएलियों ने होर पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले।

**Numbers 33:42**

<sup>42</sup> और सलमोना से कूच करके पूनोन में डेरे डाले।

**Numbers 33:43**

<sup>43</sup> और पूनोन से कूच करके ओबोत में डेरे डाले।

**Numbers 33:44**

<sup>44</sup> और ओबोत से कूच करके अबारीम नामक डीहों में जो मोआब की सीमा पर हैं, डेरे डाले।

**Numbers 33:45**

<sup>45</sup> तब उन डीहों से कूच करके उन्होंने दीबोन-गाद में डेरा किया।

**Numbers 33:46**

<sup>46</sup> और दीबोन-गाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम में डेरा किया।

**Numbers 33:47**

<sup>47</sup> और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने डेरा किया।

**Numbers 33:48**

<sup>48</sup> फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर डेरा किया।

**Numbers 33:49**

<sup>49</sup> और उन्होंने मोआब के अराबा में बेत्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक यरदन के किनारे-किनारे डेरे डाले।

**Numbers 33:50**

<sup>50</sup> फिर मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 33:51**

<sup>51</sup> “इस्त्राएलियों को समझाकर कह: जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो

**Numbers 33:52**

<sup>52</sup> तब उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना; और उनके सब नक्काशीदार पत्थरों को और ढली हुई मूर्तियों को नाश करना, और उनके सब पूजा के ऊँचे स्थानों को ढादेना।

**Numbers 33:53**

<sup>53</sup> और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उसमें निवास करना, क्योंकि मैने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो।

**Numbers 33:54**

<sup>54</sup> और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बाँट लेना; अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा भाग देना; जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उसका भाग ठहरें; अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना-अपना भाग लेना।

**Numbers 33:55**

<sup>55</sup> परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अपने आगे से निकालोगे, तो उनमें से जिनको तुम उसमें रहने दोगे, वे मानो तुम्हारी आँखों में कौटि और तुम्हारे पांजरों में कीलें ठहरेंगे, और वे उस देश में जहाँ तुम बसोगे, तुम्हें संकट में डालेंगे।

**Numbers 33:56**

<sup>56</sup> और उनसे जैसा बर्ताव करने की मनसा मैंने की है वैसा ही तुम से करूँगा।”

**Numbers 34:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 34:2**

<sup>2</sup> “इस्साएलियों को यह आज्ञा दे: कि जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर की सीमा तक का कनान देश है, इसलिए जब तुम कनान देश में पहुँचो,

**Numbers 34:3**

<sup>3</sup> तब तुम्हारा दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से ले एदोम देश के किनारे-किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारी दक्षिणी सीमा खारे ताल के सिरे पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले;

**Numbers 34:4**

<sup>4</sup> वहाँ से तुम्हारी सीमा अक्रबीम नामक चढाई के दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़े, और सीन तक आए, और कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले, और हसरदार तक बढ़के अस्मोन तक पहुँचे;

**Numbers 34:5**

<sup>5</sup> फिर वह सीमा अस्मोन से घूमकर मिस के नाले तक पहुँचे, और उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे।

**Numbers 34:6**

<sup>6</sup> “फिर पश्चिमी सीमा महासमुद्र हो; तुम्हारी पश्चिमी सीमा यही ठहरे।

**Numbers 34:7**

<sup>7</sup> “तुम्हारी उत्तरी सीमा यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर पर्वत तक सीमा बाँधना;

**Numbers 34:8**

<sup>8</sup> और होर पर्वत से हमात की घाटी तक सीमा बाँधना, और वह सदाद पर निकले;

**Numbers 34:9**

<sup>9</sup> फिर वह सीमा जिप्रोन तक पहुँचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारी उत्तरी सीमा यही ठहरे।

**Numbers 34:10**

<sup>10</sup> “फिर अपनी पूर्वी सीमा हसरेनान से शपाम तक बाँधना;

**Numbers 34:11**

<sup>11</sup> और वह सीमा शपाम से रिबला तक, जो ऐन के पूर्व की ओर है, नीचे को उत्तरते-उत्तरते किन्नरेत नामक ताल के पूर्व से लग जाए;

**Numbers 34:12**

<sup>12</sup> और वह सीमा यरदन तक उत्तरकर खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश की चारों सीमाएँ ये ही ठहरें।”

**Numbers 34:13**

<sup>13</sup> तब मूसा ने इस्साएलियों से फिर कहा, “जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होंगे, और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी है, वह यही है;

**Numbers 34:14**

<sup>14</sup> परन्तु रूबेनियों और गादियों के गोत्र तो अपने-अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना-अपना भाग पा चुके हैं, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग पा चुके हैं;

**Numbers 34:15**

<sup>15</sup> अर्थात् उन ढाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास यरदन के पार पूर्व दिशा में, जहाँ सूर्योदय होता है, अपना-अपना भाग पा चुके हैं।”

**Numbers 34:16**

<sup>16</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 34:17**

<sup>17</sup> “जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बाँटेंगे उनके नाम ये हैं एलीआजर याजक और नून का पुत्र यहोशू।

**Numbers 34:18**

<sup>18</sup> और देश को बाँटने के लिये एक-एक गोत्र का एक-एक प्रधान ठहराना।

**Numbers 34:19**

<sup>19</sup> और इन पुरुषों के नाम ये हैं यहूदागोत्री यपुत्रे का पुत्र कारोब,

**Numbers 34:20**

<sup>20</sup> शिमोनगोत्री अम्मीहूद का पुत्र शमूएल,

**Numbers 34:21**

<sup>21</sup> बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र एलीदाद,

**Numbers 34:22**

<sup>22</sup> दान के गोत्र का प्रधान योगली का पुत्र बुक्की,

**Numbers 34:23**

<sup>23</sup> यूसुफियों में से मनश्शेहयों के गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्त्रीएल,

**Numbers 34:24**

<sup>24</sup> और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान शिप्तान का पुत्र कमूएल,

**Numbers 34:25**

<sup>25</sup> जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र एलीसापान,

**Numbers 34:26**

<sup>26</sup> इस्साकारियों के गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल,

**Numbers 34:27**

<sup>27</sup> आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद,

**Numbers 34:28**

<sup>28</sup> और नप्तालियों के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र पदहेल।"

**Numbers 34:29**

<sup>29</sup> जिन पुरुषों को यहोवा ने कनान देश को इस्साएलियों के लिये बाँटने की आज्ञा दी वे ये ही हैं।

**Numbers 35:1**

<sup>1</sup> फिर यहोवा ने, मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा से कहा,

**Numbers 35:2**

<sup>2</sup> "इस्साएलियों को आज्ञा दे, कि तुम अपने-अपने निज भाग की भूमि में से लेवियों को रहने के लिये नगर देना; और नगरों के चारों ओर की चराइयाँ भी उनको देना।

**Numbers 35:3**

<sup>3</sup> नगर तो उनके रहने के लिये, और चराइयाँ उनके गाय-बैल और भेड़-बकरी आदि, उनके सब पशुओं के लिये होंगी।

**Numbers 35:4**

<sup>4</sup> और नगरों की चराइयाँ, जिन्हें तुम लेवियों को दोगे, वह एक-एक नगर की शहरपनाह से बाहर चारों ओर एक-एक हजार हाथ तक की हों।

**Numbers 35:5**

<sup>5</sup> और नगर के बाहर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, और उत्तर की ओर, दो-दो हजार हाथ इस रीति से नापना कि नगर बीचों बीच हो; लेवियों के एक-एक नगर की चराई इतनी ही भूमि की हो।

**Numbers 35:6**

<sup>6</sup> और जो नगर तुम लेवियों को दोगे उनमें से छः शरणनगर हों, जिन्हें तुम को खूनी के भागने के लिये ठहराना होगा, और उनसे अधिक बयालीस नगर और भी देना।

**Numbers 35:7**

<sup>7</sup> जितने नगर तुम लेवियों को दोगे वे सब अड़तालीस हों, और उनके साथ चराइयाँ देना।

**Numbers 35:8**

<sup>8</sup> और जो नगर तुम इसाएलियों की निज भूमि में से दो, वे जिनके बहुत नगर हों उनसे बहुत, और जिनके थोड़े नगर हों उनसे थोड़े लेकर देना; सब अपने-अपने नगरों में से लेवियों को अपने ही अपने भाग के अनुसार दें।”

**Numbers 35:9**

<sup>9</sup> फिर यहोवा ने मूसा से कहा,

**Numbers 35:10**

<sup>10</sup> “इसाएलियों से कहः जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो,

**Numbers 35:11**

<sup>11</sup> तक ऐसे नगर ठहराना जो तुम्हारे लिये शरणनगर हों, कि जो कोई किसी को भूल से मारकर खूनी ठहरा हो वह वहाँ भाग जाए।

**Numbers 35:12**

<sup>12</sup> वे नगर तुम्हारे निमित्त पलटा लेनेवाले से शरण लेने के काम आएँगे, कि जब तक खूनी न्याय के लिये मण्डली के सामने खड़ा न हो तब तक वह न मार डाला जाए।

**Numbers 35:13**

<sup>13</sup> और शरण के जो नगर तुम दोगे वे छः हों।

**Numbers 35:14**

<sup>14</sup> तीन नगर तो यरदन के इस पार, और तीन कनान देश में देना; शरणनगर इतने ही रहें।

**Numbers 35:15**

<sup>15</sup> ये छहों नगर इसाएलियों के और उनके बीच रहनेवाले परदेशियों के लिये भी शरणस्थान ठहरें, कि जो कोई किसी को भूल से मार डाले वह वहीं भाग जाए।

**Numbers 35:16**

<sup>16</sup> “परन्तु यदि कोई किसी को लोहे के किसी हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए।

**Numbers 35:17**

<sup>17</sup> और यदि कोई ऐसा पथर हाथ में लेकर, जिससे कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए।

**Numbers 35:18**

<sup>18</sup> या कोई हाथ में ऐसी लकड़ी लेकर, जिससे कोई मर सकता है, किसी को मारे, और वह मर जाए, तो वह भी खूनी ठहरेगा; और वह खूनी अवश्य मार डाला जाए।

**Numbers 35:19**

<sup>19</sup> लहू का पलटा लेनेवाला आप ही उस खूनी को मार डाले; जब भी वह मिले तब ही वह उसे मार डाले।

**Numbers 35:20**

<sup>20</sup> और यदि कोई किसी को बैर से ढकेल दे, या घात लगाकर कुछ उस पर ऐसे फेंक दे कि वह मर जाए,

**Numbers 35:21**

<sup>21</sup> या शत्रुता से उसको अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो जिसने मारा हो वह अवश्य मार डाला जाए; वह खूनी

ठहरेगा; लहू का पलटा लेनेवाला जब भी वह खूनी उसे मिल जाए तब ही उसको मार डाले।

### **Numbers 35:22**

<sup>22</sup> “परन्तु यदि कोई किसी को बिना सोचे, और बिना शत्रुता रखे ढकेल दे, या बिना घात लगाए उस पर कुछ फेंक दे,

### **Numbers 35:23**

<sup>23</sup> या ऐसा कोई पत्थर लेकर, जिससे कोई मर सकता है, दूसरे को बिना देखे उस पर फेंक दे, और वह मर जाए, परन्तु वह न उसका शत्रु हो, और न उसकी हानि का खोजी रहा हो;

### **Numbers 35:24**

<sup>24</sup> तो मण्डली मारनेवाले और लहू का पलटा लेनेवाले के बीच इन नियमों के अनुसार न्याय करे;

### **Numbers 35:25**

<sup>25</sup> और मण्डली उस खूनी को लहू के पलटा लेनेवाले के हाथ से बचाकर उस शरणनगर में जहाँ वह पहले भाग गया हो लौटा दे, और जब तक पवित्र तेल से अभिषेक किया हुआ महायाजक न मर जाए तब तक वह वहीं रहे।

### **Numbers 35:26**

<sup>26</sup> परन्तु यदि वह खूनी उस शरणनगर की सीमा से जिसमें वह भाग गया हो बाहर निकलकर और कहीं जाए,

### **Numbers 35:27**

<sup>27</sup> और लहू का पलटा लेनेवाला उसको शरणनगर की सीमा के बाहर कहीं पाकर मार डाले, तो वह लहू बहाने का दोषी न ठहरे।

### **Numbers 35:28**

<sup>28</sup> क्योंकि खूनी को महायाजक की मृत्यु तक शरणनगर में रहना चाहिये; और महायाजक के मरने के पश्चात् वह अपनी निज भूमि को लौट सकेगा।

### **Numbers 35:29**

<sup>29</sup> “तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में तुम्हारे सब रहने के स्थानों में न्याय की यह विधि होगी।

### **Numbers 35:30**

<sup>30</sup> और जो कोई किसी मनुष्य को मार डाले वह साक्षियों के कहने पर मार डाला जाए, परन्तु एक ही साक्षी की साक्षी से कोई न मार डाला जाए।

### **Numbers 35:31**

<sup>31</sup> और जो खूनी प्राणदण्ड के योग्य ठहरे उससे प्राणदण्ड के बदले में जुर्माना न लेना; वह अवश्य मार डाला जाए।

### **Numbers 35:32**

<sup>32</sup> और जो किसी शरणनगर में भागा हो उसके लिये भी इस मतलब से जुर्माना न लेना, कि वह याजक के मरने से पहले फिर अपने देश में रहने को लौटने पाए।

### **Numbers 35:33**

<sup>33</sup> इसलिए जिस देश में तुम रहोगे उसको अशुद्ध न करना; खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है, और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित हो सकता है।

### **Numbers 35:34**

<sup>34</sup> जिस देश में तुम निवास करोगे उसके बीच मैं रहूँगा, उसको अशुद्ध न करना; मैं यहोवा तो इसाएलियों के बीच रहता हूँ।”

### **Numbers 36:1**

<sup>1</sup> फिर यूसुफियों के कुलों में से गिलाद, जो माकीर का पुत्र और मनश्शे का पोता था, उसके वंश के कुल के पितरों के घरानों के मुख्य-मुख्य पुरुष मूसा के समीप जाकर उन प्रधानों के सामने, जो इसाएलियों के पितरों के घरानों के मुख्य पुरुष थे, कहने लगे,

**Numbers 36:2**

<sup>2</sup> “यहोवा ने हमारे प्रभु को आज्ञा दी थी, कि इस्साएलियों को चिट्ठी डालकर देश बाँट देना; और फिर यहोवा की यह भी आज्ञा हमारे प्रभु को मिली, कि हमारे सगोत्री सलोफाद का भाग उसकी बेटियों को देना।

**Numbers 36:3**

<sup>3</sup> पर यदि वे इस्साएलियों के और किसी गोत्र के पुरुषों से व्याही जाएँ, तो उनका भाग हमारे पितरों के भाग से छूट जाएगा, और जिस गोत्र में वे व्याही जाएँ उसी गोत्र के भाग में मिल जाएगा; तब हमारा भाग घट जाएगा।

**Numbers 36:4**

<sup>4</sup> और जब इस्साएलियों की जुबली होगी, तब जिस गोत्र में वे व्याही जाएँ उसके भाग में उनका भाग पक्की रीति से मिल जाएगा; और वह हमारे पितरों के गोत्र के भाग से सदा के लिये छूट जाएगा।”

**Numbers 36:5**

<sup>5</sup> तब यहोवा से आज्ञा पाकर मूसा ने इस्साएलियों से कहा, “यूसुफियों के गोत्री ठीक कहते हैं।

**Numbers 36:6**

<sup>6</sup> सलोफाद की बेटियों के विषय में यहोवा ने यह आज्ञा दी है, कि जो वर जिसकी दृष्टि में अच्छा लगे वह उसी से व्याही जाए; परन्तु वे अपने मूलपुरुष ही के गोत्र के कुल में व्याही जाएँ।

**Numbers 36:7**

<sup>7</sup> और इस्साएलियों के किसी गोत्र का भाग दूसरे के गोत्र के भाग में न मिलने पाए; इसाएली अपने-अपने मूलपुरुष के गोत्र के भाग पर बने रहें।

**Numbers 36:8**

<sup>8</sup> और इस्साएलियों के किसी गोत्र में किसी की बेटी हो जो भाग पानेवाली हो, वह अपने ही मूलपुरुष के गोत्र के किसी पुरुष से व्याही जाए, इसलिए कि इसाएली अपने-अपने मूलपुरुष के भाग के अधिकारी रहें।

**Numbers 36:9**

<sup>9</sup> किसी गोत्र का भाग दूसरे गोत्र के भाग में मिलने न पाए; इस्साएलियों के एक-एक गोत्र के लोग अपने-अपने भाग पर बने रहें।”

**Numbers 36:10**

<sup>10</sup> यहोवा की आज्ञा के अनुसार जो उसने मूसा को दी सलोफाद की बेटियों ने किया।

**Numbers 36:11**

<sup>11</sup> अर्थात् महला, तिर्सा, होगला, मिल्का, और नोवा, जो सलोफाद की बेटियाँ थीं, उन्होंने अपने चचेरे भाइयों से व्याह किया।

**Numbers 36:12**

<sup>12</sup> वे यूसुफ के पुत्र मनश्शो के वंश के कुलों में व्याही गईं, और उनका भाग उनके मूलपुरुष के कुल के गोत्र के अधिकार में बना रहा।

**Numbers 36:13**

<sup>13</sup> जो आज्ञाएँ और नियम यहोवा ने मोआब के अराबा में यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर मूसा के द्वारा इस्साएलियों को दिए वे ये ही हैं।